श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं० ६७-६८-६९.

श्री सयंप्रभसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

अथश्री

शीघ्रबोध भाग २३-२४-२५

संग्राहक-

श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय मुनि

श्री ज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

द्रव्य सहायक-

श्रीसंघ-फलोधी-खुपनोंकि आवादानीसे

प्रबन्धकर्ता-

शाहा मेघराजजी मोणोयत-मु० फलोधी।

प्रथमावृत्ति १०००] [वीर सं० २४४८.

विक्रम सं० १९७९.

प्रकाशक—
मेघराज मुणोत-फलोधी (मारवाड़)

प्रकाशक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया
'जैनविजय' प्रि० प्रेस–खपाटिया चकला सूरत।

विषयानुक्रमणिका ।

(१) शीघ्रबोध-भाग २३ वां

(२) शीघ्रबोध भाग २४ वां

(६) शीघ्रबोध भाग २५ वां।

श्री देवगुप्तसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

अथश्री

शीघ्र बोध भाग २१ वां

कल्याणपाद पारामं श्रुत गङ्ग हिमाचलम् ।
विश्व त्रये शितारं च तं वन्दे श्रीज्ञातनन्दनम् ॥१॥

थोकड़ा नम्बर १.

सूत्रश्री भगवतीजी शतक २४ वां

(गमाधिकार)

वर्तमान अंग अपेक्षा भगवतीसूत्र महात्ववाला माना जाता है इसी माफीक भगवती सूत्रके इगतालीस शतकमें चौवीसवां गमानामका शतक महात्ववाला है। इस चौवीसवा शतकका अधिकार सामान्य बुद्धिवालोंके लिये बडा ही दुर्गम्य है, तथपि इस कठिन अधिकारको थोकड़ारूपमें सरल और इतना सुगमतासे लिखेंगे कि पाठकगण स्वल्प परिश्रमद्वारा इस गंभिर रहस्यवाला संबन्धको सुख पूर्वक समझके अपनी आत्माका कल्याण कर शके। इस गमाधिकारके मौख्य आठ द्वार बतलाया जावेगा। यथा—

(१) गमाद्वार (२) ऋद्धिद्वार (३) स्थानद्वार (४) जीवद्वार (५) अगतिस्थानद्वार (६) भवद्वार (७) गमासंख्याद्वार (८) नाणान्ताद्वार।

आटद्वारोंका विवरण ।

(१) **गमाद्वारा**=एक ही गति तथा जातिके अन्दर भवापेक्षा तथा कालापेक्ष गमनागमन करते हैं उसे गमा कहते है जिस्का नौ भेद है । जेसे मनुष्य, रत्नप्रभा, नरकके अंदर, गमनागमन करे तों भवापेक्षा जघन्य दोयभव उत्कृष्ट आठ भव करे और कालापेक्षा नव गमा होता है यथाः—

(१) " ओघसे ओघ " ओघ कहते है । समुच्चयकों जिस्में जघन्य और उत्कृष्ट दोनों समावेश हो शकते है, भवापेक्ष जघन्य दोयभव (एक मनुष्यका दुसरा नरकका) कालापेक्षा प्रत्यक मास और दश हजार वर्ष और उत्कृष्ट आठ भव करते है कालापेक्षा च्यार कोड पूर्व और च्यार सागरोपम, यह प्रथम गमा हूवा ।

(२) " ओघसे जघन्य " मनुष्यका जघन्य उत्कृष्ठ काल और नरकका जघन्य काल जेसे दो भव करे तों जघन्य प्रत्यक मास और दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आठ भव करे तों च्यारकोड पूर्व वर्ष और चालीस हजार वर्ष यह दुसरा गमा ।

(३) " ओघसे उत्कृष्ट " जघन्य दो भव करे तों प्रत्यक मास और एक सागरोपम उत्कृष्ट च्यारकोड पूर्व और च्यार सागरोपम यह तीसरा गमा हुवा ।

(४) " जघन्यसे ओघ " जघन्य दो भव करे तों प्रत्यक मास और दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आठ भव करे तों च्यार प्रत्यक मास और च्यार सागरोपम यह चोथा गमा ।

(५) " जघन्यसे जघन्य " ज० दो भव० प्रत्यकमास और दश हजार वर्ष उ० च्यार प्रत्यक मास और चालीस हजार

वर्ष यह पांचवा गमा हुवा ।

(६) " जघन्यसे उत्कृष्ट " ज० दो भव० प्रत्यक मास और एक सागरोपम उत्कृष्ट आठ भव करे तो च्यार प्रत्यक मास और च्यार सागरोपम यह छठा गमा हुवा ।

(७) " उत्कृष्टसे ओघ " ज० दो भव० कोडपूर्व और दश हजार वर्ष उ० च्यार कोड पूर्व च्यार सागरोपम यह सातवा गमा हुवा ।

(८) " उत्कृष्टसे जघन्य " ज० दो भव० पूर्वकोड और दश हजार उ० च्यार कोड पूर्व और चालीस हजार वर्ष यह आठवा गमा हुवा ।

(९) " उत्कृष्टसे उत्कृष्ट " ज० दोभव० कोड पुर्व और एक सागरोपम० उ० च्यार पूर्वकोट और च्यार सागरोपम यह नौवा गमा हुवा ।

कमसे कम प्रत्यक मासका और ज्यादः पूर्वकोडवाला मनुष्य रत्नप्रभा नरकमे जा सक्ता है वह नरकमे जघन्य दश हजार वर्ष उ० एक सागरोपम आयुष्य पाता है तथा मनुष्य और रत्नप्रभा नरकके लगेतार भव करें तो जघन्य दोय भव उत्कृष्ट आठ भव, जिस्मे च्यार मनुष्यका और च्यार नारकीका इसका नव गमा होता है। कालमान उपर नवगमामें लिखा है। इसी माफीक सर्व स्थानपर समझना ।

(२) ऋद्धिद्वार—जेसे यहासे मनुष्य मरके नरक जाता है जिसपर २० द्वार बतलाया जाता है यथा ।

(१) उत्पात=जीव नरकादि गतिमें उत्पन्न होता है वहा कहासे जाता है जेसे रत्नप्रभा नरकमे जानेवाला, मनुष्य तीर्यंच हैं.

(२) परिमाण—एक समयमें कितने जीव. जा—के उत्पन्न होताहै।

(३) संहनन—कितने संघयण वाला जाके ,,

(४) अवग्गहाना—कितनि अवग्गहान वाला. ,,

(५) संस्थान=कितना संस्थानवाला. ,,

(६) लेश्या=कितनी लेश्यावाला ,,

(७) द्रष्टी=कितनी द्रीष्टी वाला ,,

(८) ज्ञान—कितने ज्ञानाज्ञान वाला ,,

(९) योग—कितने योगवाला जीव ,,

(१०) उपयोग—कितने उपयोगवाला ,,

(११) संज्ञा—कितने संज्ञावाला ,,

(१२) कषाय—कितनि कषायवाला ,,

(१३) इन्द्रिय—कितनि इन्द्रियवाला ,,

(१४) समुग्घातवा—कितनी समु० वाला ,,

(१५) वेदना-कितनी वेदनावाला ,,

(१६) वेद—कितनी वेदवाला ,,

(१७) स्थिति—कितनि स्थितिवाला ,,

(१८) अध्यवशाया—केसे अध्यशायवाला ,,

(१९) अनुबन्ध=कितना अनुबन्धवाला ,,

(२०) संमहो—कितना भव और काल लागे ,,

प्रत्यक जातिका जीव प्रत्यक गति जातिमें उत्पन्न होता है वह यह २० बोलोंकि ऋद्धि साथमें ले जाता है। इस विषयमें कमसे कम लघु दंडकका जानकार आवश्य होना चाहिये तांके प्रत्यक बोलपर पूर्वोक्त २० बोल स्वयं लगा शके।

(३) **स्थानद्वार**—प्रत्येक जातिमें जीव उत्पन्न होता है वह कितने स्थानसे आता है वह सब स्थान कितने है वह बतलाते है।

७ सात नरकके सात स्थान	१ व्यान्तर देवोंका एक स्थान
१० दश भुवनपतियोंकि दश,,	१ ज्योतीषी देवोंका एक स्थान
५ पांच स्थावरके पांच स्थान	१२ बारह देवलोकोंका बारह स्थान
३ तीन वैकलेन्द्रियके तीन,,	१ नौग्रवेगका एक स्थान
१ तीर्यच पांचेन्द्रियके एक,,	१ च्यार अनुत्तर वैमानका एक,,
१ मनुष्यका एक स्थान ,,	१ सर्वार्थसिद्ध वैमानका एक,,

सर्व मीलके ४४ स्थान होता है।

(४) **जीवद्वार**—जीव अनन्ते है जिस्मे संसारी जीवोंके संक्षेपसे ५६३ भेद बतलाया है परन्तु यहांपर समयोग्य ४८ जीवोंको ग्रहन किया है यथा ४४ तीसरे द्वारमे जो स्थान बतलाये है इतनेही यहांपर जीव समझ लेना। सिवाय:—

१ असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय।	एवं ४८ जीव है।
१ असंज्ञी मनुष्य चौदास्थानकिया।	
१ तीर्यंच युगलीया (अकर्म भूमि)	
१ मनुष्य युगलीया (अकर्म भूमि)	

(५) **आगतिके स्थानद्वार**—पूर्वोक्त ४४ स्थानमें आ-के

उत्पन्न होते है वह प्रत्यक स्थानके जीव कितने कितने स्थानसे आते है यथा—

१ रत्नप्रभा नरकमें संज्ञी मनुष्य, संज्ञी तीर्यंच, असंज्ञी तीर्यंच यह तीन स्थानसे आते है।

१२ शेष छे नरकमें संज्ञी मनुष्य, संज्ञी तीर्यंच यह दोय स्थानसे आके उत्पन्न होते हैं।

५५ दश भुवनपति एक व्यान्तर एवं ११ स्थानमें संज्ञी मनुष्य, संज्ञी तीर्यंच, असंज्ञी तीर्यंच. मनुष्य युगलीया, तीर्यंच युगलीया एवं पांच पांच स्थानसे आके उत्पन्न होते है।

७८ पृथ्वी पाणी वनास्पति एवं तीन स्थानमें चौवीस दंडक और असंज्ञी मनुष्य असंज्ञी तीर्यंच एवं छवीस स्थानोसे आते है। यद्यपि चौवीस दंडकके बाहार संसारी जीव नही है परन्तु प्रथम सप्रयोजन मनुष्य तीर्यंचके दंडकमें संज्ञी जीवोंकों गृहन कर यह असंज्ञीकों अलग गीना है।

६० तेउ वायु तीन वैकलेन्द्रि एवं पांच स्थानमें पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय संज्ञी मनुष्य, तीर्यंच, असंज्ञी मनुष्य, तीर्यंच, एवं बारह बारह स्थानोंसे आके उत्पन्न होता हैं ५–१२=६०

३९ तीर्यंच पांचेन्द्रियमें. सातनरक. दशभुवनपति, व्यन्तर जोतिषी. आठदेवलोक. पांचस्थावर, तीनवैकलेन्द्रिय. संज्ञीमनुष्य. तीर्यंच असंज्ञी मनुष्य. तीर्यंच एवं ३९ स्थानसे आ–के उत्पन्न होता है।

४३ मनुष्यमें छे नारकी, दश भुवनपति, एक व्यन्तर, जोतीषी, बारहादेवलोक, एकनौग्रीवैग, एकच्यारानुत्तरवैमान, एक

सर्वार्थ सिद्ध वैमान, पृथ्वी पाणी वनास्पति तीन वैक्लेन्द्रिय संज्ञी मनुष्य, तीर्यंच, असंज्ञी मनुष्य, तीर्यंच एवं ४१ स्थानोंसे आके उत्पन्न होता है ।

१२ जोतीषी. सौधर्म. इशान एवं तीन स्थानोंमें. संज्ञी मनुष्य. तीर्यंच. मनुष्य युगलीया, तीर्यंच युगलीया. एवं चार चार स्थानसे आते है ।

१२ तीजा देवलोकसे आठ वा देवलोक तकके छे स्थानमें संज्ञी मनुष्य संज्ञी तीर्यंच एवं दो दो स्थानसे आते है ।

७ च्यार देवलोक (९-१०-११-१२ वां) एक नौग्रीवेगका, एक च्यारानुत्तर वैमानका, एकसर्वार्थसिद्ध वैमानका एवं ७ स्थानमें एक संज्ञी मनुष्यका ही आयके उत्पन्न होता है ।

एवं सर्व मीलाके ३११ स्थान हुवे इति ।

(६) भवद्वार—कोनसा जीव कितने स्थानमें जाते है वह यहांसे कितनि स्थिति वाला जाते है वहांपर कितनि स्थिति पाते है तथा जाने अपेक्षा और आने अपेक्षा कितने कितने भव करते है।

(१) असंज्ञी तीर्यंच पांचेंद्रिय मरके वैक्रय शरीर धारक बारह स्थान, पेहली नरक, दश भुवनपति,व्यंतरमें जाते है । यहांसे जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्ट क्रोड पूर्व वाला जाता है वहांपर जघन्य (१००००) वर्ष उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग कि स्थितिमें जाते है, भव जघन्य तथा उत्कृष्ट दोय भव करते है, यहांसे असंज्ञी मरके जाता है वह एक भव, वहांपर भी एक भव करते है । उक्त १२ स्थानवाला पीच्छा असंज्ञी तीर्यंच पांचेंद्रियमें

नहीं आता है, वास्ते दोय ही भव करता है। शेष नौ गमा और बीसद्वार ऋद्धिका पहला दुसरा द्वारसे स्वमति लगा लेना चाहिये।

(२) संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय मरके वैक्रय शरीर धारी २७ स्थानमें जावे-यथा सात नरक, दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतीषी पहलासे आठवा देवलोक तक, यहांसे जघन्य अंतर महुर्त उ० कोड पूर्व, वहांपर अपने अपने स्थानकि जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति पावे भवापेक्षा २६ स्थानमें जघन्य २ भव उ०८ भवसो. दोयभव, एक यहांका एक वहांका, उत्कृष्टआठ च्यार यहांका च्यार वहांका, सातवी नरकमें जानेकि अपेक्षा छे गमामें (तीजो छटो नौमो वर्जके) ज० तीनभव उ० सात भव करे। अने कि अपेक्षा ज० दोय उ० छे भव करे और तीन गमा पेक्षा जानेमें ज० ३ भव उ० ५ भव, आनापेक्षा जघन्य दोय भव उ० च्यार भव करे। भावार्थः-

सतावी नरककि उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागरोपमका भव करे तो दोय भवसे अधिक न करे। ओर जघन्व बावीस सागरोपमके भव करे तो तीन भवसे अधिक नही करे वास्ते ३-७+२-६+३ ५+२-४ भव कहा है।

(३) मनुष्य मरके, पहली नरक, दश भुवनपति व्यन्तर ज्योतीषी, सौधर्म, इशान देवलोक एवं १५ स्थानमें जावे, यहांसे जघन्य प्रत्यक मास और उत्कृष्ट कोड पूर्व कि स्थितिवाला जावे वहांपर अपने अपने स्थान कि जघन्योत्कृष्ट स्थिति पावे। भव जघन्य दोय उत्कृष्ट आठ करे।

(४) मनुष्य मरके शार्करप्रभादि छे नरक, तीसरासे बाहरवा देवलोकतक दश देवलोक, एक नौग्रंवेग, एक च्यारानुत्तर वैमान, एक सर्वार्थसिद्ध वैमान एवं १९ स्थानमें जावे यहांसे स्थिति जघन्य प्रत्यक वर्ष कि उ० कोड पूर्व कि,वहांपर जघन्योत्कृष्ट अपने अपने स्थान माफीक समझना । भवापेक्षा पांच नरक(२-३-४-५-६ ठी) और छे देवलोक (३-४-५-६-७-८ वां)में ज० २ भव उ० आठ भव करे। सातवी नरकका जघन्योत्कृष्ट दोय भव कारण सातवी नरकसे निकलके मनुष्य नही होवे। च्यार देवलोक (९-१०-११-१२ वां) और नौग्रंवेगमें ज० तीन भव उ० सातभव, च्यारानुत्तरवैमानमें ज० तीन भव उ० पांच भव सर्वार्थसिद्ध वैमानमें जाने अपेक्षा तीन भव आने अपेक्षा दो भव करे ।

(५) दश भुवनपति, व्यन्तर, ज्योतीषि, सौधर्म इशान देवलोकके देवता मरके, पृथ्वी पाणी वनस्पतिमें जावे, यहांसे स्थिति ज० उ० अपने २ स्थानसे समझना । वहां पर भी अपने अपने स्थान माफीक भवापेक्षा ज० दोय भव, उत्कृष्टेभि दोय भव करे। कारण पृथ्व्यादिसे निकलके देवता नही होते हैं ।

(६) मनुष्य युगल और तीर्यच युगल मरके, दशभुवनपति, व्यन्तर, ज्योतीषी, सौधर्म, इशान, एवं १४ स्थानमें उत्पन्न होते है, यहांसे स्थिति जघन्य साधिक कोड पूर्व उ० तीन पल्योपम, वहांपर ज० दशहजार वर्ष उ० असुर कुमारमें तीन पल्योपम, नागादि नव कुमारमें देशोनी दोयपलोपम, व्यन्तरमें एक पल्योपम ज्योतीषीमें जावे तो यहासे ज० पल्योपमके आठमा भाग उ०

(७) **गमा संख्याद्वार**–प्रथम द्वारमें नौ गमा बतलाये है, कोनसा जीव मरके कितने स्थानमें जाते है, मृत्युस्थान और उत्पन्न स्थानमें कितने भवतक गमनागमन करते है उस्मे कितना काल लगता है, जिस्का अलग अलग कितना गमा होते है वह इस सातवा द्वारसे बतलाया जावेगा।

जघन्य दोय भव और उत्कृष्ट दोय भवके गमा ७७४। जघन्य उत्कृष्ट दोय भवके स्थान कितने है।

१२ असंज्ञी तीर्यंच पहली नरक, दशभुवनपति, व्यन्तर इस १२ स्थान जाते हैं वहां जघन्योत्कृष्ट दोय भव करते है।

२८ मनुष्य युगल, दश भुवनपति व्यन्तर ज्योतीषी सौधर्म इशान देवतावोंमें जाते है वहां ज० उ० दोय भव करते है। इसी माफीक तीर्यंच युगलीया भी समझना दोनोंका अठावीस स्थान।

४२ दश भुवनपसि, व्यन्तर, ज्योतीषी, सौधर्म, इशान यह चौद स्थानके जीव मरके पृथ्वी, पाणी, वनास्पतिमें जाते है वहां ज० उ० दोय भव करते हैं चौदाको तीन गुणे करनेसे ४२ होता है।

३ मनुष्य मरके, तेउकाय, वायुकायमें जाते है वहां ज० उ० दोय भव करते है तथा मनुष्य सातवी नरकमें भी ज० उ० दोय भव करते है एवं तीन स्थान।

एवं ८५ स्थान हुवे। प्रत्यक स्थानके नौ नौ गमा करनेसे ७६५ तथा सर्वार्थसिद्ध वैमानसे आने अपेक्षा दोय भव करते है जिस्का तीन गमा कारण वहाँ स्थिति उत्कृष्ट होती है (७–८–९ गमा) और असंज्ञी मनुष्य मरके तेउ कायमें तथा

वायु कायमें जाते है वहां भी दोय भव करते है परन्तु असंज्ञी मनुष्यकि जघन्य स्थिति होनेसे गमा (४–५–६) तीन तीन ही होता है ७६५–३–६ सर्व मीलाके ७७४ गमा होता है।

जघन्य दोयभव उत्कृष्ट आठ भवके गमा १६४१ होते है इसके स्थानोंका विवरण, यथा:–

२६ संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय मरके सतावीस स्थान जाते है जिस्मे एक सातवी नरक वर्जके शेष २६ स्थान।

१५ मनुष्य मरके १५ स्थान जावे देखो छठा द्वारसे।

११ मनुष्य मरके १९ स्थानमें जावे जिस्में १-२-३-४-५-६ ठो नरक तथा ३–४–५–६–७–८ वा देवलोक एवं ११ स्थान जावे।

एवं ५२ स्थान जाने अपेक्षा और ५२ स्थान पीच्छा आने अपेक्षा सर्व १०४ स्थानमें ज० दोय भव उ० आठ भव करे प्रत्यक स्थानपर नौ नौ गमा होनेसे ९३६ गमा हुवे।

पृथ्वीकाय मरके पृथ्वीकायमें जावे जिस्में पांच गमामें ज० दोय भव उ० आठ भव करते है एवं शेष च्यार स्थावर, तीन वैकलेन्द्रियका पांच पांच गमा गीननेसे ४० गमा होते हैं। संज्ञी मनुष्य संज्ञी तीर्यंच असंज्ञी तीर्यंच मरके पृथ्वीकायमें जावे वहाँ ज० दोय उ० आठभव जिस्के नौ नौ गमा और असंज्ञी मनुष्य पृथ्वीकायमें जावे भव ज० दोय उ० आठ करे परन्तु जघन्य स्थिति होनेसे तीन गमा (४–५–६) होता है एवं ३० गमा तथा ४० पेहलाके एवं ७० गमा पृथ्वीकायके हुवे इसी माफीक

शेष च्यार स्थावर तीन वैकलेन्द्रियके गुननेसे १६० गमा होता है परन्तु संज्ञी मनुष्य असंज्ञी मनुष्य मरके तेउ कायमें जावे जीसका ९-३ वारहा गमा ज० उ० दोयभवमें गीना गया है वास्ते तेउ कायका १२ वायुकायके १२ एवं २४ गमा यहां पर बाद करनेसे ५३६ गमा शेष रहते है।

पांच स्थावर तीन वेकलेन्द्रिय मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियमें जावे जिस्के प्रत्यकके नौ नौ गमा होनेसे ७२ गमा हुवा। संज्ञी मनुष्य संज्ञी तीर्यंच, असंज्ञीतीर्यंच मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियमें जावे जिस्का सात सात गमासे २१ तथा असंज्ञी मनुष्यके तीन मीलाके २४ गमा हुवा, पूर्वके ७२ मीलानेसे ९६ गया।

एवं मनुष्यके भी ९६ गमा होता है परन्तु तेउकाय वायु-काय मरके मनुष्यमें नहीं आवे वास्ते उन्होंका १८ गमा बाद करनेसे ७८ गमा होते है।

एवं ९३६-५३६-९६-७८ सर्व मिलके १६४६ गमों-अन्दर जघन्य दोभव उत्कृष्ट आठ भव करते है।

जघन्य दोय भव उ० संख्याते असंख्याते अनन्ते भवके गमा २५६ होते है जिसके विवरण।

पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय मरके पृथ्वी कायमें जाते है तब १-२-४-५ वा इस च्यार गमामें वैकलेन्द्रियसे संख्याते च्यार स्थावरसे असंख्याते, बनास्पतिसे अनन्ते भव करते है आठों बोलसे ३२ गमा एक पृथ्वीकायके स्थानका होता है इसी माफक पांच स्थावर तीन वैकालेन्द्रिका भी लाके २५६ गमा हुवा।

जा० १ उ० ७ भवके गमा १०२। च्यार वैमान तथा सातवी नरक एवं ५ स्थानके नौ नौ गमा होनेसे ४५ और तीर्यंच सातवी नरक (२७ स्थानसे २६ पूर्व गीना) जावे उसका ६ गमा एवं ५१ जाने अपेक्षा और ५१ गमा भी आनेकि अपेक्षा एवं १०२ गमा हुवा।

ज० १ भव उ० ५ भव तथा ज० २ भव उ० ४ भवके गमा २७ है यथा च्यारानुत्तर वैमान मे जानेका ९ गमा तीर्यंच सातवी नरक जानेका ३ एवं १२ तथा पीच्छा आनेका १२ एवं २४ और सर्वार्थसिद्ध वैमनका ३ गमा एवं सर्व २७ गमा हुवा।

सर्व ७७४–१६४६–२५६–१०२–२७ कुल २८०५ गमा हुवे। और ८४ गमा तुटते है जिस्का विवरण इस मुजब है।

६० असंज्ञी मनुष्य पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय तीर्यंच पांचेन्द्रिय, और मनुष्य इस १० स्थानपर असंज्ञी मनुष्य कि जघन्य स्थिति होनेसे ४–५–६ यह तीन तीन गमा गीना जानेसे शेष छे छे गमा तुटा दश स्थानके ६० गमा होता है।

१२ सर्वार्थ सिद्ध वैमानके देवतोंकि उत्कृष्ट स्थिति होनेसे आते जातेके तीन तीन गमा गीना गया है वास्ते छे छे गमा तुटा एवं १२ गमा हुवा।

१२ ज्योतीषी सौधर्म इशान इस तीन, स्थानमें मनुष्य युगलीया तथा तीर्यंच युगलीया जानेकि अपेक्षा सात सात गमा गीना गया है वास्ते दो दो गमा तुटनेसे तीन स्थानके ६ गमा मनुष्यका, छे गमा तीर्यंचका, एवं बारह गमा तुटा ६०-१२-१२

एवं कुल ८४ गमा तुटे वह पूर्वलोंके साथ मीला देनेसे सर्व मीलके २८०१-८४-२८८९ गमा हवे इति।

२८८९, गमा हुवे है इसपर जो दुसरेद्वारमें ऋद्धिके वीसद्वार प्रत्यक बोलमें लगानेसे कीस कीस बोलमें तरतमता रहेती है उस्कों शास्त्रकारोंने 'नाणन्त कहा है।

(८) **नाणन्ताद्वार**-सामान्य प्रकारे एक जीव मरके कीसी भी स्थानमें जाता है उसके नौ गमा होता है जब प्रथम गमा पर दुसरेद्वारके वीसद्वारोंकि ऋद्धि लगाई जाती है शेष आठ गमा रहेते है, तों प्रथम गमाकी ऋद्धिमें और शेष आठ गमामें क्या तरतम है वह इस नाणन्ता द्वारसे वतलावेगा।

(१) असंज्ञी तीर्यंच मरके बारह स्थानमें जाता है जिसमें नाणन्ता पांच पांच है जघन्य गया तीन नाणन्ता तीनतीन (१) आयुष्य अन्तर महुर्त (२) अनुबन्ध अन्तर महुर्त (३) अध्यव-शाय अप्रसस्थ, उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य पूर्व कोडका (२) अनुबन्ध पूर्वकोडका एवं बारह स्थानमें पांच पांच नाणन्ता होनेसे सब ६० नाणन्ता हुवा।

(२) संज्ञी तीर्यंच मरके २७ स्थानमें जाता है नाणन्ता दश दश है। जघन्य गमा तीन नाणन्ता आठ आठ (१) अव-गाहाना ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० प्रत्यक धनुष्य (२) लेश्या नरकमें जानेवालोंमें तीन तथा देवलोंकमें जानेवालोमें च्यार तथा पांच (३) दृष्टी एक मिथ्यात्वकि (४) ज्ञानन ही किंतु अज्ञान दोय (५) योग एक कायाका (६) आयुष्य अन्तर महुर्तका

(७) अनुबन्ध अन्तरमहुर्तका, (८) अध्यवसाय नरकमें जानेवालोंका अप्रसस्थ, देवतोंमें जानेवालोंका प्रसस्थ, एवं ८ । उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य पूर्वकोडका (२) अनुबन्ध भी पूर्वकोडका एवं २७ स्थानमें दश दश नाणन्ता होनेसे २७० परन्तु ६–७–८ वा देवलोकमें लेश्याका नाणन्ता नहीं होनेसे २७० से तीन बाद करनेसे २६७ नाणन्ता हुआ ।

(३) मनुष्य मरके १५ स्थानमें जाता है। नाणन्ता आठ है, जघन्य गमा तीन नाणन्ता पांच पांच (१) अवगाहाना ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० प्रत्यक अंगुलकी (२) तीन ज्ञान तीन अज्ञान कि भजना (३) समुद्घात तीन प्रथम कि (४) आयुष्य प्रत्यक मासका (५) अनुबंध प्रत्यक मासका, उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना पांचसो धनुष्यकि (२) आयुष्य क्रोड पूर्वका (३) अनुबंध क्रोड पूर्वका एवं १५ स्थानमें आठ आठ नाणन्ता होनेसे १२० नाणन्ता हुवा ।

(४) मनुष्य मरके १९ स्थानोंमें जावे नाणन्ता छे छे । ज० गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना प्रत्यक हाथकि (२) आयुष्य प्रत्यक वर्षका (३) अनुबंध प्रत्यक वर्षका । उ० गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना पांचसो धनुष्य (२) आयुष्य कोड पूर्वका (३) अनुबन्ध कोट पूर्वका एवं १९ को छे गुना करनेसे ११४ नाणन्ता हुआ ।

(५) तीर्यंच युगलीया मरके १४ स्थानमें जावे, नाणन्ता पांच पांच ज० गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना

भुवनपति व्यन्तरमें जावे तो ज० प्रत्यक धनुष्य कि उ० हजार योजन साधिक। ज्योतीपीमें जावे तों ज० प्रत्यक धनुष्य उ० १८०० धनुष्य. सौधर्म ईशानमें जावे तों ज० प्रत्यक धनुष्य उ० दोयगाउ तथा दोयगाउ साधिक (२) आयुष्य भुवनपति व्यन्तरमें जावे तों कोडपूर्व साधिक जोतीपीमें पल्योपमके आठमे भाग. सोधर्म इशानमें जावे तों एक पल्योपम तथा एक पल्योपम साधिक उ० तीनपल्योपम। (३) अनुबन्ध आयुष्यकी माफिक। उ० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) अयुष्य तीन पल्योपमका (२) अनुबन्ध भी तीन पल्योपमका एवं १४ स्थानको पांचगुने करनेसे ७० नाणन्ता हुवा।

(६) मनुष्ययुगलीया १४ स्थान जावे नाणन्ता छे छे। ज० गमा तीन नाणान्ता तीन तीन (१) अवगाहाना भुवनपति व्यन्तरमें जावे तों पांच सो धनुष्य साधिक. ज्योतीपोमें जावेतों ९०० धनुष्य साधिक. सौधर्म देवलोक जावे तों एक गाउ. इशांन देवलोक जावे तो साधिक एक गाऊ. (२) आयुष्य भुवनपति व्यंतरमें जावे तो साधिक कोड़ पूर्व. ज्योतीषयोंमें जावे तो पल्योपमके आठवा भाग. सौधर्म देवलोकमें जावे तो एक पल्योपम. इशांनमें साधिक पल्योपम (२) अनुबन्ध आयुष्य कि माफिक। उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता तीन तीन (१) अवगाहाना तीनगाउ (२) आयुष्य तीन पल्योपम (३) अनुबन्ध आयुष्यके माफीक एवं चौदस्थानसे छे गुना करनेसे ८४ नाणन्ता हुवा।

(७) दश भुवनपति. व्यन्तर. ज्योतीषी. सौधर्म. ईशान

देवलोक यह चौदा स्थानकेदेव मरके पृथ्वी पाणी वनास्पतिमें जावे. नाणन्ता च्यार च्यार। ज० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) स्वस्थानका जघन्य आयुष्य (२) अनुबन्ध आयुष्य माफीक, उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता दो दो (१) स्वस्थानका उ० आयुष्य (२) अनुबन्ध आयुष्य कि माफिक एवं चौदाकों च्यार गुने करनेसे ५६ पृथ्वी कायका ५६ अपकायका ५६ वनास्पति कायका सर्व १६८ नाणन्ता हुवा।

(८) पृथ्वीकाय मरके पृथ्वी कायमें उत्पन्न होते हैं नाणन्ता छे छे ज० गमातीन नाणन्ता च्यार च्यार (१) लेश्या तीन (२) अन्तर महुर्तका आयुष्य (३) अनुबन्ध अन्तर महुर्तका (४) अध्यवसाय अप्रसस्थ, उ० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य २२००० वर्ष (२) अनुबन्ध २२००० वर्ष, एवं अपकाय परन्तु आयुष्य उत्कृष्ट ७००० वर्ष एवं तेउकाय परन्तु लेश्याका नाणन्त वर्जके पांच नाणन्तां है उ० आयुष्यानुबन्ध तीनरात्रीका एवं वायुकाय परन्तु समुद्घातका नाणन्त अधिक होनेसे ६ नाणन्ता है उ० आयुष्यानुबन्ध ३००० वर्ष एवं वनास्पतिकाय परन्तु नाणन्ता सात है जिसमें ६ तो पृथ्वीवत् (७) अवगाहना उ० प्रत्यक अंगुलकी है सर्व ३० नाणन्ता हुवा। तीनवैकलेन्द्रिय और असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय मरके पृथ्वी कायमें जावे जिसका नाणन्ता नौ नौ है ज० गमातीन नाणन्त सात सात (१) अवगाहाना अंगुलके असंख्यातमें भाग (२) दृष्टी मिथ्यात्वकि (३) अज्ञानदोय (४) योगकायाको (५) आयुष्य अन्तर महुर्तका (६)

अनुबंध अंतर महुर्तका (७) अध्यवसाय अप्रसस्थ । उ० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) आयुष्य स्वस्व स्थानका उत्कृष्ट [२) अनुबंध आयुष्य माफीक । २६ नाणन्ता हुवा । संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय मरके पृथ्वी कायमें आवे जिस्का नाणन्ता ११ ज० गमातीन नाणन्ता नौ है ७ पूर्ववत (८) लेश्यातीन (९) समुग्घाततीन उ० गमामें दो नाणन्ता पूर्ववत् एवं ११ । संज्ञी मनुष्य मरके पृथ्वी कायमें आवे जिस्का नाणन्ता १२ ज० गमातीन नाणन्त नौ तीर्यंचवत उ० गमातीन नेणन्ता तीन (१) अवगाहाना पांचसो धनुष्य (२) आयुष्य पूर्वकोड (३) अनुबन्ध पूर्वकोडका एवं १२ । एवं सर्व २०–२६–११–१२ कुल ८९ एवं शेष च्यार स्थावर तीन वैकलेन्द्रियके ८९–८९ गीननेसे ७१२ नाणान्ता हुवा ।

(९) पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय असंज्ञी तीर्यंच संज्ञी तीर्यंच संज्ञी मनुष्य मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियमें जावे जिसके ८९ नाणन्ता तो पृथ्वीवत् समझना और १७ स्थान वैक्रयका तीर्यंचमें आवे जिस्का नाणन्ता च्यार च्यार है ज० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) स्व स्वस्थानकी ज० स्थिति (२) अनुबंध आयुष्य माफीक उ० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) स्व स्वस्थानका उत्कृष्ट आयुष्य (२) अनुबंध आयुष्य माफीक एवं १०८ तथा ८९ पूर्वक सर्व १९७ ।

(१०) तीन स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय तीर्यंच पांचेन्द्रिय मनुष्य मरके मनुष्यमें जावे जिस्का ८९ नाणन्तासे तेउ वायुका ११ बाद करतों ७८ नाणन्ता रहा और वैक्रयके ३२ स्थानके

जीव मनुष्यमें आवे जिस्का नाणन्ता च्यार च्यार ज० गमा तीन नाणन्ता दो दो (१) स्वस्व स्थानका ज० आयुष्य (२) अनुबंध आयुष्य मादीक । उ० गमातीन नाणन्ता दो दो (१) स्वस्व स्थानका उ० आयुष्य (२) अनुबन्ध आयुष्य माफीक एवं १२८ तथा पूर्वका ७८ मीलानेसे २०६ नाणन्ताहुवा ।

सर्व ६०–२६७–१२०–११४–७०–८४–१६८–७१२ १९७–२०६ कुल १९९८ नाणन्ता हुवा । इति ।

यह आठ द्वारोंसे गमाका थोकडा भव्यात्मावोंके कंठस्थ करनेके लिये संक्षिप्तसे सार लिखा है इस्के अन्दर ऋद्धिका २० द्वार है वह लघु दंडकादिसे स्व उपयोगसे सर्व प्रयोगस्थान पर लगालेना उसका विस्तार थोकडा नम्बर २में लिखा जावेगा परन्तु पेस्तर यह थोकडा कंठस्थ करलेनेसे आगेका सवन्ध सुख पूर्वक समझमें आते जावेंगा वास्ते हमार निवेदन है कि द्रव्यानुयोग रसीक भाइयोंको एसे अपूर्व ज्ञानको कंठस्थ कर अपना नर भवको अवश्य पवित्र बनाना चाहिये । किमधिकम्

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम् ।

थोकड़ा नं० २

सूत्र श्री भगवतीजी शतक २४ वां

(गमाधिकार)

इस महान् गंभिर रहस्यवाला गमाधिकार समझनेमें मौल्य साहित्यरूप लघु दंडक है वास्ते प्रथम पाठक वर्गको लघुदंडक कण्ठस्थ करलेना चाहिये ।

इस थोकडामें मौख्य दोय बातों प्रथम ठीक ठीक समझलेना चाहिये (१) गमा जीसका नौ भेद है (२) ऋद्धि जिस्का वीस द्वार है ।

(१) गमा–गति, जाति, के अन्दर गमनागमन करना जिस्मे भव तथा कालकि मर्यादा बतानेवालेकों गमा कहते है । जेसे तीर्यंच पांचेन्द्रि रत्नप्रभा नरकमें जावे तों जघन्य, दोयभव एक तीर्यंचकों, दुसरो नरककों यह दोय भवकर नरकसे निकलके मनुष्यमें जावे। उत्कृष्ट आठ भव–च्यार तीर्यंचका, च्यारनरकका फीरतों अन्य स्थान (मनुष्यमें)में जाना हीपडे कारण तीर्यंच और रत्नप्रभा नरकके आठ भवसे अधिक नहीं करे । कालकि अपेक्षा तीर्यंच पांचेन्द्रियका ज० अन्तर मुहुर्त । उ० पूर्वकोड तथा नरकका ज० दशहजार वर्ष । उ० एक सागरोपमकि स्थिति है जिस्के नौगमा होता है यथा ।

(१) 'ओघसे ओघ' ओघ कहते है समुच्चयकों । जीस्मे जघन्य और उत्कृष्ट दोनों प्रकारका आयुष्य समावेस हो शक्ता है । जेसे ज० दोयभव अन्तर महूर्तसे कोड़ पूर्वका तीर्यंच रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न होते हैं, वहांपर दशहजार वर्षसे एक सागरोपम कि स्थिति प्राप्त करता है तथा आठभव करे तों च्यार अन्तर महुर्तसे च्यार कोड़ पूर्व तीर्यंचका काल और चालीसहजार वर्षसे च्यार सागरोपम नारकीका काल यह प्रथम 'ओघसे ओघ' गमाहुवा ।

(२) 'ओघसे जघन्य' तीर्यंचका जघन्य उत्कृष्ट काल और नारकीका स्वस्थान पर ज़घन्यकाल ।

(३) ' ओघसे उत्कृष्ट ' तीर्यंचका ज० उ० काल और नारकीका उत्कृष्ट काल समझने ।

(४) 'जघन्यसे ओघ' तीर्यंचकाजघन्य और नरकीका ओघकाल ।

(५) 'जघन्यसे जघन्य' तीर्यंच और नारकी दोनोंका जघन्यकाल।

(६) 'जघन्यसे उत्कृष्ट' तीर्यंचका जघ०काल और नरकका उ०काल

(७) 'उत्कृष्टसे ओघ' तीर्यंचका उत्कृष्ट और नरकका ओघकाल ।

(८) 'उ०से जघन्य' तीर्यंचका उत्कृष्ट और नरकका जघ०काल ।

(९) ' उ०से उत्कृष्ट ' तीर्यंच और नरक दोनोंका उत्कृष्टकाल ।

(२) ऋद्धि=जिस्का १० द्वार है । जो जीव परभव गमन करता है वह इस भवसे कोनसी कोनसी ऋद्धि साथमें लेके जाता है, जेसे तीर्यंच पांचेन्द्रिय रत्नप्रभा नरकमें जाता है तो कितनि ऋद्धि साथमें ले जाता है यथा—

(१) उत्पाद=तीर्यंच पांचेन्द्रियसे नरकमें उत्पन्न होता है ।

(२) परिमाण=एक समयमें १–२–३ यावत् असंख्याते

(३) संघयण—छे वों संघयणवाला तीर्यंच नारकीमें उत्पन्न हो।

(४) अवगाहाना—जघन्य अंगुलके असं० भाग । ट० हजार योजनवाला, तीर्यंच नरकमें उत्पन्न होता है ।

(५) संस्थान—छे वों स्थानवाला ।

(६) लेश्या—छेवों लेश्यावाला । (भवापेक्षा)

(७) ज्ञानाज्ञान—तीनज्ञान तथा तीनज्ञानकि भजना ।

(८) द्रष्टी तीन–सम्पुरण भवापेक्षा होनेसे तीन द्रष्टी है।

(९) योग तीन–तीनों योगवाला।

(१०) उपयोग–दोय–साकार आनाकार।

(११) संज्ञा–संज्ञाच्यारवाला।

(१२) कषायच्यार–च्यारोंकषायवाला।

(१३) इन्द्रिय–पांच–पांचोइन्द्रियवाला।

(१४) समुद्घात–पांच समुद्घातवाला। क्रमःसर

(१५) वेदना–साता असाता दोनो वेदनावाला।

(१६) वेदतीन–तीनों वेदवाला।

(१७) अध्यवसाय–असंख्याते वह अप्रशस्थ।

(१८) आयुष्य–ज० अन्तर महुर्त। उ० क्रोडपूर्ववाला।

(१९) अनुबन्ध आयुष्व माफीक (कायस्थिति)

(२०) संभहो–कालादेशेण और भवादेशेण। भवापेक्षा ज० दोयभव उ० आठभव, कालापेक्षा नौ पहला लिख गया है।

इस गमानामाके चौवीशवां शतकका चौवीस उदेश है यथा सातों नरकका प्रथम उदेशा, दश भुवनपतियोंके दश उदेशा, पांच स्थावरोंका पांच उदेशा, तीन वैकलेन्द्रिका तीन उदेशा, तीर्यंच पांचेन्द्रिय, मनुष्य, व्यन्तरदेव, ज्योतीषीदेव, वैमानिकदेव, इन्ही पांचोका प्रत्यक पांच उद्देशा एवं सर्व मीलके २४ उद्देशा है।

(१) नरकका पहला उदेशा है जिस नरकका सात भेद है

यथा=रत्नप्रभा शार्करप्रभा वालुकाप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमाप्रभा इस सातों नरकमें उत्पन्न होनेवाला जीव भिन्न भिन्न स्थानोंसे आते है वास्ते पेस्तर सबके आगति स्थान लिख देना उचित होगा क्युकि आगे बहुत सुगम हो जायगा ।

(१) रत्नप्रभा नरककि आगति पांच संज्ञी तीर्यंच[१] पांच असंज्ञी तीर्यंच, एक संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य एवं ११ स्थानसे आ-के रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न होता है ।

(२) शार्कर प्रभाकि आगति पांच संज्ञी तीर्यंच और सं-ख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य एवं छे स्थानसे आवे ।

(३) वालुकाप्रभाकि आगति पांच स्थानकि भुजपुर वर्जके ।

(४) पंकप्रभाकि आगति खेचर वर्जके च्यार स्थानकि ।

(५) धूमप्रभाकि आगति थलचर वर्जके तीनस्थानकि ।

(६) तमप्रभाकि आगति उरपुरी वर्जके दोय स्थानकि ।

(७) तमतमा प्रभाकि आगति दोयकि परन्तु स्त्रि नहीं आवे।

रत्न प्रभा नरककि ११ स्थानकि आगति है जिस्मे पांच असंज्ञी तीर्यंच आते है वह पूर्व २० द्वारसे कितनी कितनि ऋद्धि लेके आते है ।

(१) उत्पात=असंज्ञी तीर्यंचसे ।

(२) परिमाण–एक समयमें १–२–३ यावत् संख्याते ।

(३) संहनन=एक छेवटा संहननवाला तीर्यंच ।

---

१ जलचर स्थलचर खेचर उरपुरी भुजपुरी ।

(४) अवगाहाना जघन्य अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० १००० जोजनवाला यद्यपि अंगुलके असंख्यातमें भागवाला नरकमें नहीं जाता है परन्तु यहांपर सर्व भवापेक्षा है कि तीर्यंचके भवमें इतनि आवगाहाना होती है एवं सर्वत्र समझना।

(५) संस्थान=एक हुन्डकवाला।

(६) लेश्या=कृष्ण निल कापोतवाला=रत्नप्रभामें जानेवालेके लेश्या एक कापोत होती है परन्तु यह भी पूर्ववत् सर्वभवापेक्षा है।

(७) दृष्टी—एक मिथ्यात्व वाला।

(८) ज्ञान—ज्ञान नहीं किन्तु दोय अज्ञान वाला।

(९) योग—वचन और कायावाला।

(१०) उपयोग—साकार और अनाकार।

(११) संज्ञा—आहारादिक च्यारोंवाला।

(१२) कषाय—क्रोध मान माया लोभ च्यारोवाला।

(१३) इन्द्रिय—श्रोतेन्द्रिया दि पांचो इन्द्रियवाला।

(१४) समुद्घात—वेदनी कषाय मरणन्तिक तीनों।

(१५) वेदना—साता असाता दोनोंवाला।

(१६) वेद—एक नपुंसक वेदवाला।

(१७) स्थिति—ज० अन्तर महुर्त उ० पूर्वक्रोड वाला।

(१८) अध्यवसाय—असंख्याते सो प्रसस्थ अप्रसस्थ।

(१९) अनुबन्ध—ज० अन्तर महुर्त उ० पूर्व कोडका।

(२०) संभहो—भवादेशेणं जघन्य दोयभव उ० दोयभव

कारण असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय नरक जाता है परन्तु नरकसे निकलके असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय नहीं होता है। कालापेक्षा ज० दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग और कोड पूर्व अधिक इती २० द्वार।

असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय और रत्नप्रभा नरकके नौगमा।

(१) 'ओघसे ओघ' भवादेशेणं दोय भव, कालादेशेणं, दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त अधिक। उ० कोड पूर्वाधिक पल्योपमके असंख्यात भाग। १।

(२) 'ओघसे जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। उ० कोडपूर्व दशहजार वर्ष।

(३) 'ओघसे उत्कृष्ट' अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग, पूर्व कोड वर्ष और पल्यापमके असंख्यातमों भाग।

(४) 'जघन्यसे ओघ' अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष। उ० अन्तर महुर्त और पल्योपमके असंख्यामें भाग।

(५) 'ज०से जघन्य' अन्तर महुर्त दशहजार वर्ष। अन्तर महुर्त और दशहजार वर्ष।

(६) ज०से उत्कृष्ट, अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग। उ० अन्तर महुर्त पल्योपमके असंख्याते भाग।

(७) 'उत्कृष्टसे ओघ' कोड पूर्व दश हजार वर्ष, कोडपूर्व पल्योपमके असंख्याते भाग।

(८) 'उ०से जघन्य' कोडपूर्व दश हजार वर्ष, उ० कोडपूर्व और दशहजार वर्ष।

(९) 'उ०से उत्कृष्ट' कोडपूर्व, पल्योपमके असंख्याते भाग,

उ० क्रोडपूर्व और पल्यो० असं० भाग ।

पूर्व जो २० द्वार ऋद्धिके बतलाये गये है वह प्रत्यक गमा पर लगा लेना इसके अन्दर जो तफावत है वह यहांपर बतला देते हैं ।

(३) ओघ गमा तीन १-२-३ समुच्चयवत् ।

(३) जघन्य गमा तीन ४-५-६ जिसमें नांणन्ता तीन ।

(१) स्थिति अन्तर महुर्त वाला जावे ।

(२) अध्यवसाय असंख्याते सो अप्रसस्थ ।

(३) अनुबन्ध ज० उ० अन्तर महुर्तका ।

(३) उत्कृष्ट गमा तीन ७-८-९ जिसमें नाणन्ता दोय ।

(१) स्थिति क्रोडपूर्व वाला जावे ।

(२) अनुबन्ध भी क्रोडपूर्वका ।

इति असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय मरके रत्नप्रभामें जाते है शेष ६ नरकमें असंज्ञी नहीं जाते है ।

(२) संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय संख्याते वर्षवाले मरके सातों नरकमें जाशक्के है जिसमें रत्नप्रभामें उत्पन्न हुवे तों ज० दश हजार वर्ष उ० एक सागरोपम कि स्थिति पावे । जिस्की ऋद्धिका वीसद्वार ।

(१) उत्पात-संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रियसे ।

(२) परिमाण-एक समयमें १-२-३ यावत् असंख्याते ।

(३) संहनन-छे वों संहननवाला तीर्यंच ।

(४) अवगाहाना—ज० अंगुलके असं० भाग उ० हजार योजनवाला।

(५) संस्थान—छे वों संस्थानवाला।

(६) लेश्या—छे वों वाला (७) दृष्टी तीनोवाला।

(८) ज्ञान—तीनज्ञान तथा तीन अज्ञानकि भजना।

(९) योग—तीनों (१०) उपयोग दोनों (११) संज्ञाच्यार।

(१२) कषाय च्यारों (१३) इन्द्रिय पांचों (१४) समुद्घात पांचों (१५) वेदना—सातासाता (१६) वेद तीनों प्रकारके। (१७) स्थिति ज० अन्तर महुर्त उ० क्रोड पूर्ववाला। (१८) अध्यवसाय—असंख्याते, प्रसस्थ, अप्रसस्थ। (१९) अनुबन्ध—ज० अन्तर महुर्त उ० क्रोड पूर्व वर्षका। (२०) संभटो—भवापेक्षा ज० दोयभव उ० आठभव, काला पेक्षा ज० अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष उ० च्यार क्रोड पूर्व और च्यार सागरोपम इतना कल तक तीर्यच और रत्नप्रभा नरकमें गमनागमन करे मिलता नी गमा।

(१) ओघसे ओघ—दश हजार वर्ष अन्तर महुर्त च्यार क्रोड पूर्व च्यार सागरोपम।१।

(२) ओघसे जघन्य—अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष च्यार क्रोड पूर्व और चालीस हजार वर्ष।२।

(३) ओघसे उत्कृष्ट—अन्तर महुर्त एक सागरोपम उ० च्यार क्रोड पूर्व और च्यार सागरोपम। ३।

(४) ज० से ओघ' अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष उ० च्यार अन्तर महुर्त च्यार सागरोपम।४।

(५) ज० से जघन्य' अन्तर महुर्त दश हजार वर्ष उ० च्यार अन्तर महुर्त और चालीस हजार वर्ष ।५।

(६) ज० से उत्कृष्ट' अंतर महुर्त, एक सागरोपम उ० च्यार अंतर महुर्त, च्यार सागरोपम । ६ ।

(७) उ० से ओघ' कोड पूर्व दश हजार वर्ष उ० च्यार कोड पूर्व च्यार सागरोपम ।

(८) उ० से जघन्य' कोड पूर्व दश हजार वर्ष, उ० च्यार कोड पूर्व और चालीस हजार वर्ष ।८।

(९) उ० से उत्कृष्ट, कोड पूर्व एक सागरोपम उ० च्यार कोड पूर्व और च्यार सागरोपम ।९।

नौ गमा है इसमें प्रत्यक गमापर ऋद्धिके वीस वीस द्वार लगा लेना जो तफावत है वह बतलाते है।

(३) ओघ गमा तीन १-२-३ समुच्चयवत्

(६) जघन्य गमा तीन प्रत्यक गमा, आठ नाणन्ता ।

(१) अवगाहना उ० प्रत्यक धनुष्यकि ।

(२) लेश्या तीन, कृष्ण, निल, कापोत ।

(३) दृष्टी एक मिथ्यात्वकि (४) ज्ञाननहीं अज्ञान दोय

(५) समुद्घात, तीन, वेदनी, कषाय, मरणन्तिक ।

(६) स्थिति जघ० व उत्कृष्ट अन्तर महुर्तकि ।

(७) अध्यवसाय, असंख्याते, सों, अप्रसस्थ ।

(८) अनुबंध, जघन्य उत्कृष्ट अन्तर महुर्त ।

(३) उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता दोय पावे ।

(१) स्थिति, ज० उ० क्रोडपूर्वका ।

(२) अनुबन्ध, ज० उ० पूर्वक्रोड ।

संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय जैसे रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न हुवे जिसकि ऋद्धि तथा नौगमा कहा है इसी माफीक शार्करप्रभामें भी समझना परंतु शार्करप्रभामें स्थिति जघन्य एक सागरोपम उ० तीन सागरोपमकि है वास्ते नौगमामें स्थिति उपयोगसे कहेना शेषाधिकार रत्नप्रभावत् समझना ।

भवापेक्षा ज० दोय उ० आठ भव, कालापेक्षा नौगमा ।

(१) ओघसे ओघ, अन्तर महुर्त एक सागरोपम । उ० च्यार क्रोडपूर्व १२ सागरो०

(२) ओघसे ज० अन्तर० एक सागरो० । उ० च्यार अन्तर० च्यार सागरो० ।

(३) ओघसे उ० अन्तर० एक सागरो० उ० च्यार क्रोडपूर्व १२ सागरो० ।

(४) ज० से ओघ. अन्तरमहुर्त एक सागरोपम उ० च्यार अन्तर बारहा सागरोपम् ।

(५) ज०से जघन्य, अन्तर० एक सागरो० च्यार अन्तर० च्यार सागरो०

(६) ज०से उत्कृ० अन्तर० एक सागरो० च्यार क्रोडपूर्व १२ सागरो०

(७) उत्कृ० से ओघ० क्रोडपूर्व तीन सागरो० च्यार क्रोडपूर्व १२ सागरो०

(८) उ०से जघन्य० कोडपूर्व तीन सागरो० च्यार अन्तर० च्यार सागरो०

(९) उ०से उत्कृष्ट० कोडपूर्व एक सागरो० च्यार कोडपूर्व १२ सागरो०

इसी माफीक वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धुमप्रभा, तमप्रभा, भी समझना परंतु नौगमामें स्थिति जघ० उत्कृष्ट अपने अपने स्थानकी समझना तथा ऋद्धिमें संहनन द्वार पहली दुसरी नरकमें छेवों संहननवाला तीर्यंच जावे तीजी नरकमें छेवटो संहनन वर्जके पांच संहननवाला जावे एवं चोथी नरकमें किलका संहनन वर्जके च्यार संहननवाला जावे। पांचवी नरकमें अर्द्धनाराच वर्जके तीन संहननवाला जावे। छटीनरकमें नाराच वर्जके दोय संहनन-वाला जावे।

संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय मरके सातवी नरकमें जावे वहापर स्थितिज० २२ सागरोपम उ० ३३ सागरोपमकि पावें, ऋद्धिके २० द्वार रत्न प्रभाकि माफीक परन्तु सहननद्वारमे एक बज्ररूषम नाराचवाला तथा वेदद्वारमें एक स्त्रि वेद, नहीं जावे। संमहो भवापेक्षा ज० ३ भव उ० ७ भव कालपेक्षा ज० २२ सागरोपम दोय अन्तर मुहुर्त० उ० ६६ सागरोपम च्यारकोड पूर्वाधिक। परंतु तीजें छटें नवमें गमामें ज० ३ भव उ० पांच भव करते है कारणकि २१ सागरोपमके लगते तीन भव कर सकते है परंतु ३३ सागरोपमके तीन भव लगता नहीं करे किंतु दोय भव कर सके। वास्ते ३–६–९ गमे ३–५ भव करे।

ओघसे ओघ० २२ सागरो० दोय अन्तर० उ० ६६ सा० च्यार कोडपूर्व,
ओघसे ज० २२ सा० दोय अन्तर०। उ० ६६ सा० च्यार अन्तर०
ओघसे उ० २२ सा० दोय अन्तर० उ० ६६ सा० ३ कोडपूर्व
ज० ओघ० २२ सा० दोय अन्तर० उ० ६६ सा० च्यार को०
ज० ज० ,, ,, ,, च्यार अन्तर०
ज० उ० ,, ,, ,, तीन कोडपूर्व
उ० ओघ २२ सा० दोय कोडपूर्व ,, च्यार कोडपूर्व
उ० ज० ,, ,, ,, च्यार अन्तर०
उ० उ० ,, ,, ,, तीन कोड पूर्व

नाणन्ता उ० गमाती न नाणन्ता दो दोय स्थिति ज० कोडपूर्व अनुबन्ध आयुष्य कि माफीक।

संज्ञी मनुष्य संख्याते वर्षवाले मरके रत्नप्रभा नरकमें जावे सो यहांसे जघन्य प्रत्यक्मास उ० कोडपूर्व वहांपर ज० दश हजार वर्ष उ० एक सागरोपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। ऋद्धि जेसे।

(१) उत्पात—संख्याते वर्षवाला संज्ञी मनुष्यसे।
(२) परिमाण—एक समयमे १—२—३ उ० संख्याते।
(३) संहनन—छे वों संहननवाला।
(४) अवगाहाना ज० प्रत्यक अंगुल उ० ५०० धनुष्यवाला।
(५) ज्ञान—च्यार ज्ञान तीन अज्ञानकि भजना (भवापेक्षा)।
(६) समुद्घात, केवली समु० वर्जके छे समु० वाला।
(७) स्थिति—ज० प्रत्यक्मास उ० कोडपूर्व।
(८) अनुबंध ज० प्रत्यक्मास उ० कोडपूर्व।

शेष सर्वद्वार संज्ञी तीर्यंच पंचेन्द्रिय माफीक समझना। भवापेक्षा ज० दोय उ० आठ भव, कालापेक्षा ज० प्रत्यकमास दश हजार वर्ष उ० च्यार कोडपूर्व, च्यार सागरोपम तक गमना गमन करे जिस्के गमा नौं।

ओघसे ओघ' प्रत्यक मास दशहजार वर्ष उ० च्यार कोडपूर्व च्यार सा०
ओघसे ज०' „ „ उ० च्यार प्रत्य० १०००० वर्ष
ओघसे उ० „ „ उ० च्यार कोडपूर्व च्यार सा०
ज०से ओघ „ „ उ० च्यार कोडपूर्व च्यार सा०
ज०से ज० „ „ उ० „ प्र० मा० १०००० वर्ष
ज०से उ० „ „ उ० „ कोडपुर्व च्यार सा०
उ० ओघ एक कोड पूर्व एक सा० उ० च्यार कोड पू० च्या० सा०
उ० ज० „ „ उ० च्यार अन्तर १०००० वर्ष
उ० उ० „ „ उ० „ कोड पूर्व च्यार सागरो

प्रत्यक गमा पर २० द्वार कि ऋद्धि पूर्ववत् लगा लेना तफावत हे सो बतलाते है ओघ गमा तीन तों पूर्ववत ही है।

जघन्य गमातीन—४—५—६ नाणन्ता ५

(१) अवगाहाना ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० प्रत्यक अंगुलकि।

(२) ज्ञान—तिन ज्ञान तीन अज्ञान कि भजना।

(३) समुद्‌घात—पांच क्रमः सर

(४) स्थिति ज० उ० प्रत्यक मास कि

(५) अनुबन्ध—ज० उ० प्रत्यक मासकों

उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता पावे तीन तीन

(१) शरीर अवगाहाना ज० उ० ५०० धनुष्यकि

(२) आयुष्य ज० उ० कोड पूर्वका

(३) अनुबन्ध ज० उ० कोड पूर्वका

संज्ञी मनुष्य मरके शार्करप्रभा नरकमें उत्पन्न होता है। स्थिति यहांसे ज० प्रत्यक वर्ष और उत्कृष्ट कोड पूर्व वहां पर ज० एक सागरोपम उ० तीन सागरोपम ऋद्धिके २० द्वार रत्नप्रभाकि माफीक परन्तु यहांपर स्थिति ज० प्रत्यक वर्ष उ० कोड पूर्व एवं अनुबन्ध और शरीर अवगाहाना ज० प्रत्यक हाथ उ० पांचसो धनुष्य कि भव ज० दोय उ० आठ काल ज० प्रत्यक वर्ष और एक सागरोपम उ० च्यार कोड पूर्व और बारह सागरोपम इतना काल तक गमनागमन करे। नौगमा रत्नप्रभाकि माफीक परन्तु स्थिति शार्करप्रभासे केहना।

३ ओघ गमा तीन १–२–३ समुच्च वत्

३ जघन्य गमा तीन ४–५–६ नाणन्ता तीन तीन

(१) अवगाहाना ज० उ० प्रत्यक हाथकि

(२) स्थिति ज० उ० प्रत्यक वर्षकि

(३) अनुबन्ध आयुष्यकि माफीक प्रत्यक वर्षको

३ उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता तीन तीन।

(१) शरीर अवगाहाना ज० उ० पांचसो धनुष्यकि

(२) आयुष्य ज० उ० कोड पूर्वको

(३) अनुबन्ध ज० उ० कोड पूर्वको

इस माफीक यावत् छठी तमप्रभा तक नौगमा' और ऋद्धि २० द्वारसे कहना परन्तु स्थिति स्वस्वस्थानसे केहना, संहनन इस माफीक पहेली दुजी नरकमें, छे, तीजीमें पांच, चोथीमें च्यार, पांचमीमें तीन, छठीमें दोय, सातवी नरकमें एक व्रज्र ऋषभ नाराच संहनन वाला जावे ।

संज्ञी मनुष्य संख्याते वर्षवाला मरके सातवी नरकमें जावे यहांसे स्थिति ज० प्रत्यक वर्ष उ० कोड पूर्ववाला यहांपर ज० २२ सागरोपम उ० ३३ सागरोपम. ऋद्धिके २० द्वार शार्कर प्रभावत् परन्तु एक संहननवाला जावे किन्तु स्त्रि वेदवाला न जावे। भवापेक्षा ज० दोय उ० दोय भव करे कारण मनुष्य सातवी नरक जाते हैं किन्तु वहांसे मनुष्य नही हुवे, सातवी नरकसे निकलके तों एक तीर्यंच ही होता है। कालापेक्षा ज० प्रत्यक वर्ष और २२ सागरोपम उ० कोडपूर्व और तेतीस सागरोपम.

'ओघसे ओघ'	प्रत्यक वर्ष	२२ सा०	उ० कोडपूर्व	३३ सा०
'ओघसे ज०'	,,	,,	उ० ,,	२२ सा०
'ओघसे उ०'	,,	,,	उ० ,,	३३ सा०
ज० ओघ	,,	,,	उ० ,,	३३ सा०
ज० ज०	,,	,,	उ० प्र० वर्ष	२२ सा०
ज० उ०	,,	,,	उ० कोडपूर्व	३३ सा०
उ० ओघ	कोडपूर्व	तेतीस सा०	उ० ,,	३३ सा०
उ० ज०	,,	,,	उ० प्र० वर्ष	२२ सा०
उ० उ०	,,	,,	उ० कोडपूर्व	३३ सा०

ऋद्धिके २० द्वारमें जो तफावत है सो

१ ओघ गमा तीन १-२-३ समुच्चयवत्

२ जघन्य गमा तीन ४-५-६ नाणन्ता तीन तीन

(१) अवगाहाना ज० उ० प्रत्यक हाथकि

(२) आयुष्य० ज० उ० प्रत्यक वर्षका

(३) अनुबन्ध ज० उ० प्रत्यक „

३ उत्कृष्ट गमा तीन नाणन्ता तीन तीन

(१) अवगाहाना ज० उ० पांचसो धनुष्यकि

(२) आयुष्य ज० उ० कोडपूर्वका

(३) अनुबन्ध ज० उ० कोडपूर्वका ।

इति नारकिका प्रथम उद्देशो समाप्तम् ।

(२) असुरकुमार देवताका दूसरा उद्देशा ।

असुरकुमारके स्थानमें पांच संज्ञी तीर्यंच, पांच असंज्ञी तीर्यंच और एक मनुष्य एवं ११ स्थानोंकि पर्याप्ता आते है ।

(१) असंज्ञी तीर्यच जेसे रत्नप्रभा नरकमें कहा है इसी माफीक नौगमा और ऋद्धिके २० द्वार यहांपर भी केहना परन्तु यहां पर अध्यवसाय प्रसस्थ समजना ।

(२) संज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय असुरकुमारमें उत्पन्न होते है वह दोय प्रकारके है ।

(१) संख्याते वर्षवाले (२) असंख्याते वर्षवाले । जिस्में प्रथम असंख्याते वर्षवाले संज्ञी तीर्यंच पर्याप्ता असुर कुमारमें ज० दश हजार वर्ष उ० तीन पल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिसपर ऋद्धिके २० द्वार ।

(१) उत्पात असंख्याते वर्षके तीर्यंच पांचेन्द्रिय पर्याप्तासे।

(२) परिमाण—एक समय १—२—३ यावत संख्याते।

(३) संहनन—एक वज्र ऋषभ नाराचवाला।

(४) अवगाहना—ज० प्रत्यक धनुष्य, उ० छे गाउवाला।

(५) संस्थान—एक समचतुस्र संस्थानवाला।

(६) लेश्या—कृष्ण निलकापोत तेजसवाला।

(७) दृष्टी एक मिथ्यात्व (८) ज्ञान नहीं अज्ञानदोय।

(९) योग—तीनो योगवाला (१०) उपयोग दोनोवाला।

(११) संज्ञा=च्यारों संज्ञावाला (१२) कषाय चारोंवाला।

(१३) इन्द्रिय=पांचोवाला (१४) समुद्घात तीन वे. क. म.

(१५) वेदना—सातासातावाला (१६) मरणदोनो

(१७) स्थिति=ज० साधिक पुर्वकोड उ० तीन पल्योपम।

(१८) अध्यवसाय=असंख्याते प्रसस्थ अप्रसस्थ दोनों।

(१९) अनुबन्ध आयुष्यकि माफिक।

(२०) संभहो=भवापेक्षा ज० उ० दोय भव करे कालापेक्षा ज० सधिक कोड पूर्व और दश हजार वर्ष उ० छे पल्योपम ३—३=१॥ गमा नौ।

ओघसे ओघ ? साधिककोडपूर्व १०००० वर्ष उ० ६ पल्यो०

ओघसे ज० ,, ,, उ० ३ पल्या १०००० वर्ष

ओघसे उ० ,, ,, उ० सधिककोड पूर्व ३ प०

ज० ओघ ,, ,, उ० साधिककोड पूर्व ३ पल्यो

ज० ज० „ „ उ० साधि० को० १०००० वर्ष
ज० उ० „ „ उ० ६ पल्योपम
उ० ओघ ६ पल्योपम उ० सा० को० ३ पल्योपम
उ० ज० „ „ उ० साधि० १०००० वर्ष
उ० उ० „ „ उ० ६ पल्यो०

नाणन्ता इस माफीक है।

(१) तीजे गमे ज० उ० तीन पल्योपकि स्थितिवाला जावे।

(२) चोथे गमे ज० उ० साधिक पूर्वकोड वाला जावे और अवगाहना ज० प्रत्यक धनुष्य उ० १००० धनुष्यवाला जावे एवं ५–६ ठे गम भी।

(३) सातवे गमें ज० उ० तीन पल्योंकि स्थितिवाला जावे इसी माफीक आठवे तथा नौवागमा समझना।

संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय संख्याते वर्षवाला मरके असुरकुमार देवतोंमें जावे तो नौगमा और ऋद्धिके २० द्वार जेसे संज्ञीतीर्यंच पांचेन्द्रिय संख्याते वर्षवाला रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न समय कही थी इसी माफीक समझना इतना विशेष है कि रत्नप्रभामें उ० स्थिति एक सागरोपमकि थी यहांपर उ० स्थिति एक सागरोपम साधिक केहना। गमा ४–५–६ लेश्या च्यार और अध्यवसाय प्रसस्थ समझना।

संज्ञी मनुष्य दोय प्रकारके है (१) संख्याते वर्षवाले (२) असंख्याते वर्षवाले जिस्में असंख्याते वर्षवाले मनुष्य (युगलीया) मरके असुर कुमारमें जाव तो वहांपर स्थिति ज० दशहजार वर्ष

(१३) इन्द्रिय एक स्पर्श. (१४) समुद्घात–तीन० वेदनि० कषाय० मरणन्तिक।

(१५) वेदना–साता असाता (१६) वेद एक नपुंसकवाला।

(१७) स्थिति ज० अन्तर महूर्त. उ० २२००० वर्षवाला।

(१८) अध्यवसाय, असंख्याते, प्रसस्थ, अप्रसस्थ।

(१९) अनुबन्ध–ज० अन्तर महुर्त. उ० २२०००वर्षवाला

(२०) संभहो–भवापेक्षा ज० दोयभव उ० असंख्याते भव। कालापेक्षा ज० दोय अन्तर महूर्त. उ० असंख्याते काल। इतना काल गमनागमन करे। और नौगमा निचे प्रमाणे।

(१) ओघसे ओघ–भव ज० दोय उ० असंख्याता. काल ज० दोय अन्तर महूर्त. उ० असंख्याता काल।

(२) ओघसे ज० ज० दोयभव उ० असंख्याते भव. काल ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० असंख्याते.काल।

(३) ओघसे उ०। भव ज० दोय उ० आठ भव करे. काल ज० अन्तरमहुर्त और २२००० वर्ष. उ० १७६००० वर्ष।

(४) ज०से ओघ० पहेला गमा सादृश परन्तु लेश्या तीन स्थिति और अनुबन्ध अन्तरमहुर्त अध्यवसाय अप्रसस्थ।

(५) ज०से जघन्य, चोथा गमाकी माफीक।

(६) ज०से उत्कृष्ट–पांचमा गमा माफीक परन्तु भव ज० दोय. उ० आठ भव करे काल ज० अन्तर महुर्त और २२००० वर्ष उ० च्यार अन्तर महुर्त उ० ८८००० वर्ष।

(७) उ०से ओघ–तीजा गमा माफीक यहांपर स्थिति. ज० उ० २२००० वर्षकि।

(८) उ०से जघन्य। ज० उ० अन्तरमहुर्तमें उपजे. भव ज० १ उ० ८ भव काल ज० २२००० वर्ष अन्तर महूर्त. उ० ८८००० वर्ष च्यार अन्तर महुर्त।

(९) उ० से उत्कृष्ट=स्थिति ज० उ० २२००० वर्ष, भव० दोय उ० आठ करे काल ज० ४४००० वर्ष, उ० १७६००० वर्ष।

इस नौ गमोंके अन्दर ३-६-७-८-९ इस पांच गमोंकि अन्दर जघन्य दोयभव उ० आठ भव करे शेष १-२-४-५ इस च्यार गमोंमें जघन्य दोय भव उ० असंख्याते भव करे। काल ज० दोय अन्तर महुर्त उ० असंख्याते काल तक परिभ्रमन करे।

अपकाय मरके पृथ्वीकायके अन्दर उत्पन्न होवे उस्काभि नौ गमा और ऋद्धिके २० द्वार पृथ्वीकायकि माफीक समझना परंतु संस्थान छेवटा पाणीके बुद बुदेके आकार तथा गमामें अप-कायकि स्थिति उ० ७००० वर्षकि समझना।

एवं तेउकाय परन्तु संस्थान सुचिकलाइका स्थिति उ० तीन अहोरात्रीकि एवं वायुकाय परन्तु संस्थान ध्वजा पताका और स्थिति उ० ३००० वर्ष वनास्पति कायका अलापक अप-काय माफीक समझना परन्तु विशेष (१) संस्थान, नानाप्रकारका, (२) अवगाहाना १-२-३-७-८-९ इस छे गमामें ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० साधिक हजार जोमनकि और ४-५-६ इस तीन गमामें ज० उ० अंगुलके असंख्यातमें भाग अवगाहाना तथा स्थिति उ० दश हजार वर्षसे गमा लगा लेना।

(८) ज्ञान–तीन ज्ञान तीन अज्ञानाक भजनावाला ।

(९) योग तीन–(१०) उपयोग दोय (११) संज्ञा च्यार (१२) कषाय च्यार वाला ।

(१३) इन्द्रिय पाचोंवाला (१४) समुदूघात पांच प्रथमसे ।

(१५) वेदना–साता असाता दोनों (१६) वेद तीनोंवाला।

(१७) स्थिति० ज० अन्तर महुर्त उ० कोडपूर्व वाला ।

(१८) अध्यवसाय–असंख्याते. प्रसस्थ. अप्रसस्थ.

(१९) अनुबन्ध ज० अन्तर महुर्त. उ० कोडपूर्व.

(२०) संभहो. भवापेक्षा. ज० दोय भव उ० आठ भव. कालापेक्षा० ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और ८८००० वर्ष अधिक जिस्के नौगमा पुर्ववत लगा लेना जिस गमामें तफावत है सो इस माफीक है ।

मध्यम गमा तीन ४–५–६ प्रत्यंक गमामें नाणन्ता. नौ.नौ.

(१) अवगाहाना ज० उ० अंगुलके असंख्यातमें भाग ।

(२) लेश्या तीन (३) दृष्टि एक मिथ्यात्वकि

(४) ज्ञान नही अज्ञान दोय (५) योग एक कायाकों ।

(६) समुदघात तीन प्रथमकि

(७) स्थिति ज० उ० अन्तर महुर्त (८) एवं अनुबन्ध

(९) अध्यवसाय. असंस्थ. अप्रसस्थ ।

उत्कृष्ट गमा तीन ७–८–९ नाणन्ता दो दो । स्थिति० ज० उ० कोडपूर्वकि एवं अनुबन्ध । नौगमाका काल पृथ्वीकाय और तीर्यच पांचेन्द्रियके स्थितिसे लगा लेना । अन्नाय सब पूर्ववत् समझना ।

असंज्ञी मनुष्य मरके पृथ्वीकायमें ज० अन्तर महुर्त उ० २२००० वर्षकि स्थितिमें उत्पन्न होता है. ऋद्धि स्वयं उपयोगसे केहना सुगम है । नौ गमेकि बदले यहांपर ४–५–६ तीन गमा केहना कारण असंज्ञी मनुष्य अपर्याप्तो अवस्थामें ही मृत्यु प्राप्त हो जाते है वास्ते अपना जघन्य कालसे तीन गमा होता है शेष छे गमा सुन्य है ।

संज्ञी मनुष्य संख्यात वर्षवाला पृथ्वीकायमें ज० अन्तरमहुर्त उत्कृष्ट २२००० वर्षोंकि स्थितिमें उत्पन्न होता है. ऋद्धिके २० द्वार जेसे रत्नप्रभा नरकमें मनुष्य उत्पन्न समय कही थी इसी माफीक केहना तफावत गमामें है सो कहते है ।

(३) प्रथम दुसरा तीसरा गमाके नाणन्ता ।

(१) अवगाहना ज० अंगुलके असं० भाग उ० ५०० धनुष्य ।

(२) आयुष्य ज० अन्तर० उ० पूर्वकोटका ।

(३) अनुबन्ध आयुष्यकिमा फीक ।

(३) मध्यम गमा तीन ४–५–६ तीर्यंच पांचेन्द्रिय माफीक ।

(३) उत्कृष्ट गमा तीन ७–८–९ नाणन्ता तीन तीन ।

(१) अवगाहना ज० उ० ५०० धनुष्यकि ।

(२) आयुष्य ज० उ० कोड पूर्वका ।

(३) अनुबंध आयुष्यकि माफीक ।

नौ गमाका काल मनुष्यकि ज० उ० स्थिति तथा पृथ्वी कायकि ज० उ० स्थितिसे लगालेना । रीति सब पूर्व लिखी हुई है ।

पृथ्वीकायके अन्दर च्यारो निकायके देवता उत्पन्न होते है यथा भुवनपतिदेव, व्यन्तरदेव, ज्योतीषीदेव, वैमानिकदेव, जिस्मे भुवनपतिदेव दश प्रकारके है यथा असुरकुमार यावतस्तनत कुमार ।

असुर कुमारके देव पृथ्वी कायमें ज० अंतर महुर्त उ० २२००० वर्षोंकि स्थितिमें उत्पन्न होते है, जिसकी ऋद्धि ।

(१) उत्पात—असुरकुमार देवतावोंसे ।

(२) परिमाण—ज० १-२-३ उ० संख्याते असंख्याते ।

(३) संहनन—छे वों संहननसे असंहननी है ।

(४) अवगाहाना भव धारणी ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० सात हाथ उत्तर वैक्रय करे तो ज० अंगुलके संख्यातमें भाग उ० सधिक लक्ष जोजनकि यह भव संबन्धी अपेक्षा है ।

(५) संस्थान—भवधारणी समचतुस्र. उत० नानाप्रकारका ।

(६) लेश्या च्यार (७) दृष्टी तीन (८) ज्ञान तीन अज्ञान तीन कि भजना (९) योगतीन (१०) उपयोग दोय (११) संज्ञाच्यार (१२) कषाय च्यार (१३) इन्द्रिय पांचों (१४) समुदघात पांचक्रमःसर (१५) वेदना दोनों (१६) वेद दोय. स्त्रिवेद, पुरुषे वेद. (१७) स्थिति ज० १०००० वर्ष. उ० साधिक सागरोपम. (१८) अनुबन्ध स्थिति माफिक (१९) अध्यवसाय, असं० प्रसस्थ, अप्रसस्थ दोनों (२०) संभहों भवापेक्षा ज० दोय भव उ० दोय भव कारण देवता पृथ्वीकायमें उत्पन्न होते है परन्तु पृथ्वी कायसे पीछा देवता नहीं होते है वास्ते एक भव पृथ्वी कायका दुसरा देवतोंका कालापेक्षा ज० अन्तर महुर्त और दश हजार वर्ष उ० २२००० वर्ष और साधिक सागरोपम इतना काल तक गमनागमन करे० जिस्के गमा नौ ।

गमा ९	जघन्य दोयभव	उत्कृष्ट दोयभव
ओघसे ओघ	१०००० वर्ष	साधिक सागरोपम
१	अन्तरमहुर्त	२२००० वर्ष
ओघसे जघन्य	१०००० वर्ष	साधिक सागरोपम
२	अन्तरमहुर्त	अन्तरमहुर्त
ओघसे उत्कृष्ट	१०००० वर्ष	साधिक सागरोपम
३	२२००० ,,	२२००० वर्ष
जघन्यसे ओघ	१०००० वर्ष	१०००० वर्ष
४	अन्तरमहुर्त	२२००० ,,
जघन्यसे जघन्य	१०००० वर्ष	१०००० वर्ष
५	अन्तरमहुर्त	अन्तरमहुर्त
जघन्यसे उत्कृष्ट	१०००० वर्ष	१०००० वर्ष
६	२२००० ,,	२२००० ,,
उत्कृष्टसे ओघ	साधिक सागरोपम	साधिक सागरो०
७	२२००० वर्ष	२२००० वर्ष
उत्कृष्टसें जघन्य	साधिक सागरो०	साधिक सागरो०
८	अन्तरमहुर्त	अन्तरमहुर्त
उत्कृष्टसे उत्कृष्ट	साधिक सागरो०	साधिक सागरो०
९	२२००० वर्ष	२२००० वर्ष

एवं नागादि नौ जातिके भुवनपतिका अलापक भि समझना परन्तु स्थिति अनुबन्ध तथा गमाके कालमें ज० दशहजार उ० देशोनी दोय पल्योपम समझना ।

एवं व्यन्तर देवतावोंका अलापक परन्तु स्थिति अनुबन्ध और गमाकाल सब स्थानमें, ज० दशहजार वर्ष उ० एक पल्योपम समझना ।

इसी माफीक ज्योतीषी देवतावों भि समझना । परन्तु ज्योतीषीयोंके पांच भेद है जिन्होंकि स्थिति—

(१) चन्द्र देवोंकी ज० पावपल्योपम उ० एक पल्योपम और एक लक्ष वर्ष अधिक समझना ।

(२) सूर्यदेवोंकी ज० पाव० उ० एक पल्यो० हजार वर्ष ।

(३) ग्रहदेवोंकी ज० पाव० उ० एक पल्योपम ।

(४) नक्षत्रदेवोंकी ज० पाव० उ० आदेपल्योपम ।

(५) तारादेवोंकी ज० १/८ उ० १/४ ।

ज्योतीषीदेव चवके पृथ्वी कायमें ज० अन्तरमहुर्त उ० २२००० वर्षकि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिसके ऋद्धिके २० द्वार असुर कुमारकि माफीक परन्तु—

(१) लेश्या एक तेजसलेश्यावाला ।

(२) ज्ञान तीन तथा अज्ञान तीन कि नियमा ।

(३) स्थिति जघन्य १/८ उ० एक पल्यो० लक्ष वर्ष ।

(४) अनुबन्ध स्थितिकि माफीक ।

(५) संभहों, ज० दोय भव उ० दोयभव, काल ज० पल्योपमके आठवे भाग और अन्तर महुर्त उ० एक पल्योपम उपर एक लक्ष बावीसहजार वर्ष आधिक । नौ गमा पूर्ववत् लगालेना परन्तु स्थिति ज्योतीषी देव और पृथ्वी कायकि समझना ।

वैमानिकसे सुधर्म देवलोकके देवता चवके पृथ्वीकायमे ज० अन्तर महुर्त उ० २२००० वर्षो कि स्थितिमें उत्पन्न होते है। परन्तु स्थिति, अनुबन्ध तथा गमाका काल. ज० एक पल्योपम उतर दोय सागरोपमका समझना। इसी माफीक, ईशांन देवलोकके देवता चवके पृथ्वीकायमें उत्पन्न होते है परन्तु यह ज० एक पल्योपम साधिक उ० दोय सागरोपम साधिक समझना। शेष २० द्वार ऋद्धिका तथा नौ गमा पूर्ववत् लगालेना. इति।

इति चौवीसवा शतकका बारहवा उदेशा।

(१३) अप कायका तेरहवा उदेशा—जेसे पृथ्वी कायका उदेशा कहाहै इसी माफीक अपकाय भी समझना परन्तु पृथ्वी कायकि स्थिति उ० २२००० वर्ष कि थी परन्तु यहा अपकायकि स्थिति ७००० वर्ष कि समझना गमाके कालमें ७००० वर्षसे गमा कहना शेष पृथ्वीवत् इति। २४—१३।

(१४) तेउकायका चौदवा उदेशा—अधिकार पृथ्वीकाय माफीक समझना परन्तु देवता चवके तेउकायमें उत्पन्न नही होते है और स्थिति तेउकायकि उ० तीन अहोरात्रीकी है. शेषाधिकार पृथ्वी कायवत् २४—१४

(१५) वायुकायका पन्दरवाउदेशा यह भी पृथ्वीकाय माफीक है परन्तु देवता नहीं आवे- स्थिति ३००० वर्ष किसे गमाका काल समझना शेष पृथ्वीकायवत् इति २४—१५

(१६) वनस्पति कायका शोलवा उदेशा—यह भी पृथ्वीकायवत् इसमें देवता उत्पन्न होते है। स्थिति उ० १०००० वर्ष

कि है परन्तु १–२–४–५ इस च्यार गमावोंमें वनस्पतिके जीव प्रत्य समय अनन्ते जीव उत्पन्न होते है । इस च्यार गमोंकि अपेक्षा ज० दोयभव उ० अनन्तेभव० कालापेक्षा ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० अनन्तोकाल शेष पांचगमा पृथ्वी कायवत समझना । इति २४–१६

(१७) वेन्द्रियका सतरवा उदेश–पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय संज्ञीतीर्यंच, असंज्ञी तीर्यंच, संज्ञी मनुष्य, असंज्ञी मनुष्य, एवं १२ स्थानके जीव मरके वेन्द्रियमें उत्पन्न होते है यहां (वेद्रियमें) स्थिति ज० अन्तर महुर्त उ० वारह वर्षकि पाते है आनेवालेके ऋद्धिके २० पूर्ववत् कहना पृथ्वी आदि १-२-४-५, इस च्यार गमामें ज० दोयभव० उ० संख्याते भव करते हैं काल० ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० संख्यातोंकाल लागे० शेष पांच गमामें ज० दोयभव उ० आट भव करते है जिस्के गमाका काल वेन्द्रिय तथा इस्मे आनेवाले जीवोंके जघन्य उत्कृष्ट स्थितिसे पूर्ववत् लगा लेना । परन्तु तीर्यंच पांचेन्द्रिय० तथा मनुष्य नौ गमामें ज० दोयंभव उत्कृष्ट आठ भव केरते है । शेष पृथ्वीवत इति २४–१७

(१८) एवं तेन्द्रियका उदेशा० परन्तु स्थिति उ० ४९ अहोरात्रिसे गमा केहना शेष वेद्रियवत् इति २४–१८

(१९) एवं चोरिंद्रियका उदेशा० परन्तु० स्थिति उ० छे माससे गमा केहना शेष वेन्द्रियवत् इति २४–१९

(२०) तीर्यंच पांचेंद्रियका उदेशा–सातनरक, दशभुवनपति,

व्यंतर, ज्योतीषी, सौधर्म देवलोकसे यावत आठवां सहस्त्र देवलोकके देवता, पांच स्थावर, तीन वैकलेन्द्रिय, तीर्यच पांचेन्द्रिय स्थानके जीव मरके तीर्यंच पांचेद्रियमें ज० अन्तरमहुर्त और मनुष्य इतने उ० क्रोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। जिस्में प्रथम रत्नप्रभा नरकेके नेरिया मरके तीर्यंच पांचेद्रियमें ज० अन्तरमहुर्त उ० क्रोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते हैं. जिस्की ऋद्धि इस माफीक है।

(१) उत्पात-रत्नप्रभा नरकसे।

(२) परिमाण-एक समयमे १-२-३ उ० संख्य असंख्य।

(३) संहनन-छे संहननसे असंहनन अनिष्ट पुद्गल।

(४) अवागहाना-भवधारणी ज० अंगु० असं० भाग० उ० ७॥। धनुष्य ६ अगुल० उत्तर वैक्रय ज० अंगु० संख्य० भाग० उ० १५॥ धनु० १२ अंगुल यह सर्व भवापेक्षा है।

(५) संस्थान० भवधारणी तथा उत्तरवैक्रय एकहुन्डक संस्थान।

(६) लेश्या एक कापोत (७) दृष्टी तीनों।

(८) ज्ञान, तीन ज्ञानकि नियमा तीन अज्ञानकि भजना।

(९) योग तीनों (१०) उपयोग दोनों (११) संज्ञाच्यारों।

(१२) कषाय च्यारों (१३) इन्द्रि पांचोवाला।

(१४) समुद्घात च्यार क्रमःसर।

(१५) वेदना साता असाता (१६) वेद एक नपुंसक।

(१७) स्थिति ज० १०००० वर्ष उ० एक सागरोपम।

(१८) अनुबन्ध स्थिति माफीक।

(१९) अध्यवसाय असंख्याते प्रसस्थ अप्रसस्थ।

(१०) संभहो—भवापेक्षा ज० दोय भव उ० आठ भव कालापेक्षा ज० दशहजार वर्ष अन्तरमहुर्त उ० च्यार सागरोपम च्यार क्रोड पुर्व अधिक इतना कालतक गमनागमन करते हैं जिस्का नौ गमा ।

(१) ओघसे ओघ० ज० दशहजार वर्ष अन्तर महुर्त उ० च्यार सागरोपम और च्यार कोडपूर्व अधिक ।

(२) ओघसे जघन्य, दश हजार० अन्तमहुर्त उ० च्यार सागरोपम च्यार अन्तरमहुर्त ।

(३) ओघसे उत्कृष्ट—दशहजार० कोडपूर्व उ० च्यार कोडपूर्व च्यार सागरोपम ।

(४) जघन्यसे ओघ० दश हजार अन्तरमहुर्त उ० चालीस हजार वर्ष और च्यार कोडपूर्व ।

(५) ज०से ज० दशहजार वर्ष अन्तरमहुर्त उ० चालीस हजार वर्ष और च्यार अन्तर महुर्त ।

(६) ज० से उत्कृष्ट, दशहजार वर्ष कोडपूर्व उ० चालीस हजार वर्ष और च्यार कोडपूर्व ।

(७) उ० से ओघ, एक सागरोपम अन्तरमहुर्त उ० च्यार सागरोपम और च्यार कोड पुर्व ।

(८) उ०से जघन्य, एक सागरोपम अन्तरमहुर्त उ० च्यार सागरोपम और च्यार अन्तर महुर्त ।

(९) उ० से उ०, एक सागरोपम एक क्रोडपूर्व उ० च्यार सागरोपम और च्यार कोडपूर्व ।

मध्यम गमा तीन ४–५–६ जिस्मे स्थिति तथा अनुबन्ध जघन्य उत्कृष्ट दश हजार वर्षका है ।

उत्कृष्ट गमा तीन ७–८–९ जिस्मे स्थिति तथा अनुबन्ध जघन्य उत्कृष्ट एक सागरोपमका है ।

एवं छटी नरक तक परन्तु अवगाहाना लेश्या स्थिति अनुबन्ध अपने अपने स्थानकि कहना गमा सब स्थानपर अपति २ स्थितिसे लगा लेना शेष रत्नप्रभा नरकवत समझना ।

सातवी नरकके नैरिया मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियमें ज० अंतर महुर्त उ० क्रोडपूर्व कि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिस्के ऋद्धिके २० द्वार रत्नप्रभाकि माफीक परन्तु अवगाहाना भव धारिणी ज० अंगुलके असंख्याते भाग उ० ५०० धनुष्य उत्तर वैक्रय ज० अंगु० संख्यातमें भाग उ० १००० धनुष्य लेश्या एक कृष्ण स्थिति ज० २२ सागरो० उ० ३३ सागरोपमकि अनुबन्ध स्थिति माफीक । भवापेक्षा ज० दोय भव उ० ६ भव करे । कालापेक्षा ज० बावीस सागरोपम अन्तरमहुर्त अधिक उ० छासट (६६) सागरोपम तीन क्रोडपूर्व अधिक । यह प्रथमके ६ गमाकि अपेक्षा है और ७–८–९ इस तीन गमाकि अपेक्षा ज० दोय भव उ० च्यार भव करे कारण सातवी नरकके उ० दोय भवसे अधिक न करे । कालापेक्षा ज० तेतीस सागरोपम अन्तर महुर्त, उ० ६६ सागरोपम दोय क्रोडपूर्व अधिक नौ गमाका काल पूर्ववत् लगा लेना (सुगम है ।)

पृथ्वीकाय मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियमें ज० अन्तर महुर्त उ० क्रोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिस्की ऋद्धिके २० द्वार ।

(१) उत्पन्न—पृथ्वी कायासे ।

(२) परिमाण—एक समयमें १—२—३ संख्या० असंख्या ।

(३) संहनन—एक छेवटा संहननवाला ।

(४) अवगाहाना ज० उ० अंगुलके असंख्यातमें भाग ।

(५) संस्थान—एक हुन्डक (चन्द्राकार ।)

(६) लेश्या—च्यार—कृष्णा, निल, कापोत, तेजस लेश्या ।

(७) दृष्टि—एक मिथ्यात्व दृष्टीवाला ।

(८) ज्ञान—ज्ञान नही किन्तु अज्ञान दोयवाला ।

(९) योग—एक कायाका (१०) उपयोग दोनोंवाला ।

(११) संज्ञा—च्यारोवाला (१२) कषाय च्यारोवाला ।

(१३) इन्द्रिय एक स्पर्शेंद्रियवाला ।

(१४) समुद्घात तीन वेदनि, कषाय, मरणांतिक ।

(१५) वेदना, साता असाता, (१६) वेद एक नपुंसक

(१७) स्थिति ज० अन्तर महुर्त उ० २२००० वर्षवाला

(१८) अनुबंध स्थिति माफीक समझना

(१९) अध्यवसाय, असंख्याते, प्र० अप्रसस्थ.

(२०) संभ हो. भावादेशेणं ज० दोयभव उ० आठ भव करे । कालापेक्षा ज० दोयअन्तरमहूर्त, उ० च्यार कोडपुर्व और ८८००० वर्ष इतने काल तक गमनागमन करे । जिस्का गमा ९ पृथ्वीकायेके उदेशामें तीर्यच पांचेद्रिय उत्पन्न समय ९ गमा कह आये हैं उसी माफीक समझना। एवं अपकाय, तेउकाय, वायुकाय वनास्पतिकाय, वेद्रिंय, तेद्रिंय, चौरिंन्द्रिय भी समझना ऋद्धिके

२० द्वार अपने अपने स्थानसे और नौ गमा अपने अपने कालसे लगा लेना, पृथिव्यादिके स्थानमें प्रथम तीर्यंच पांचेंद्रिय गमा था इसी माफीक यहा भि समझ लेना ।

तीर्यंच पांचेंद्रियका दंडक एक है परन्तु इस्में (१) संज्ञी तीर्यंच पांचेंद्रिय (२) असंज्ञी तीर्यंच पांचेंद्रिय, जिस्मे भि संज्ञी तीर्यंच पांचेंद्रियका दोय भेद है (१) संख्याते वर्षवाले (कर्मभूमि) (२) असंख्याते वर्षवाले युगलीया। यहांपर वीसवादंडक समुच्चय तीर्यंच पांचेंद्रियका चल रहा है जिस्मे च्यारों भेद समझ लेना, संज्ञी, असंज्ञी, कर्मभूमि, अकर्मभूमि.

असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियके दंडकमें ज० अन्तरमहुर्त उ० पल्योपमके असंख्यातमें भागकि स्थितिमें उत्पन्न होता है। ऋद्धिके २० द्वार जैसे पृथ्वीकायमें उत्पन्न समय कहा था इसी माफीक समझना। भवापेक्षा ज० दोय भव० उ० दोयभव० कालापेक्षा ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग और कोडपूर्व जिस्के गमा नौ इस मुजब ।

(१) गमे भव ज० दोय० उ० २ काल ज० दोय अन्तरमहुर्त, उ० पल्यो० असं० भाग और कोडपूर्व.

(२) गमे—भव ज० दोय० उ० ८ काल ज० दोय अन्तर उ० च्यार कोडपूर्व और च्यार अंतरमहुर्त ।

(३) गमे—परिमाणादि रत्नप्रभावत्, भव ज० उ० २ काल ज० पल्यो० असं० भाग अन्तरमहुर्त, उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग और कोडपूर्व अधिक ।

(४) गमें पृथ्वीवत्, भव ज० दोय उ० आठ काल ज० दोय अंतरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और च्यार अंतरमहुर्त।

(५) गमें चोथावत् काल उ० आठ अन्तरमहुर्त।

(६) गमें चोथावत् काल ज० कोडपूर्व अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व च्यार अन्तरमहुर्त।

(७) गमें पृथ्वीवत् भव ज० उ० दोयभव काल ज० कोडपूर्व अन्तरमहुर्त उ० पल्योपमके असंख्यातमें भाग और कोडपूर्व।

(८) गमें पृथ्वीवत् भव ज० दोय उ० आठ, काल कोडपूर्व अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और च्यार अन्तरमहुर्त।

(९) गमें भव ज० उ० दोय काल ज० पल्योपमके असंख्याते भाग और कोडपूर्व एवं उत्कृष्ट। शेष ऋद्धि समुच्चयवत्।

संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय संख्याते वर्षवाला जो तीर्यंच पाचेन्द्रियमें ज० अन्तरमहुर्त उ० तीन पल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होता है, कारण ज० स्थिति कर्मभूमिमें और उत्कृष्ट स्थिति युगलीयोंकि समझना। ऋद्धिके २० द्वार जेसे संख्याता वर्षवाला संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय रत्नप्रभा नरकमें उत्पन्न होते समय कही है इसी माफीक समझना। और नौ गमा इस माफीक।

(१) गमें भव ज० दोयभव उ० दोयभव काल ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० तीन पल्योपम और कोडपूर्व परन्तु अवगाहाना ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उ० १००० जोजनकि।

(२) दुजे गमें भव ज० दोय उ० आठ काल ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और च्यार अन्तरमहुर्त।

(३) गमें ज० उ० तीन पल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होवे परिमाण १-२-३ उ० संख्याते जीव उत्पन्न होते है। अवगाहाना पूर्ववत् भव ज० दोय उ० दोय भव करे काल ज० अन्तर महुर्त और तीन पल्योपम उ० तीन पल्योपम और कोडपूर्व।

(४-५-६) इस तीन गमाकि ऋद्धि तीर्यंच पांचेन्द्रिय जो पृथ्वीकायमें गया था उस माफीक भव ज० दोयभव उ० आठ भव करे काल चोथे गमें अन्तरमहुर्त कोडपूर्व उ० च्यार अन्तर महुर्त और च्यार कोडपूर्व, पांचवे गमें ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० आठ अन्तरमहुर्त, छटे गमें कोडपूर्व और अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और च्यार अन्तरमहुर्त।

(७) सातवे गमें ज० उ० कोडपूर्ववाला जावे भव ज० उ० दोय करे काल ज० कोडपूर्व और अन्तरमहुर्त उ० तीन पल्योपम और कोडपूर्व।

(८) गमें भव ज० दोय० उ० आठ भव काल ज० कोड पूर्व अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और च्यार अंतरमहुर्त।

(९) गमें परिमाण स्थिति अनुबंध तीसरे गमेंकि माफीक भव ज० उ० दोयभव करे काल तीन पल्योपम और कोडपूर्व उ० तीन पल्योपम और कोडपूर्व। तथा असंख्याते वर्षके तीर्यंच युगलीये होते हैं वास्ते वह मरके तीर्यंचमें नहीं जाते हैं उन्होंकि गति केवल देवलोकि ही है वास्ते यहा उत्पात नहीं है। इति।

मनुष्य संज्ञी तथा असंज्ञी दोय प्रकारके होते हैं जिस्में असंज्ञी मनुष्य मरके तीर्यंच पांचेन्द्रियमें ज० अंतरमहुर्त उ०

कोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होता है ऋद्धिके २० द्वार पृथ्वीकायमें उत्पन्न समय कहा था इसी माफीक। भव तथा काल और गमा असंज्ञी तीर्यंचमें कहा इस माफीक समझना।

संज्ञी मनुष्य संख्याते वर्षके आयुष्यवाला (कर्मभूमि) मरके तीर्यंच पांचेंद्रियमें ज० अन्तरमहुर्त उ० कोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिस्की ऋद्धि जेसे मनुष्य पृथ्वीकायमें उत्पन्न समय कही थी इसी माफीक समझना। भव तथा काल नौ गमा द्वारा बतलाते है।

(१) गर्मे भव ज० उ० २ भव काल ज० दोय अंतरमहुर्त उ० तीन पल्योपम और कोडपूर्व।

(२) गर्मे भव ज० दोय उ० आठ भव काल ज० दोय अन्तरमहुर्त उ० च्यार कोडपूर्व और च्यार अन्तरमहुर्त।

(३) गर्मे भव ज० उ० दोय भव, काल ज० प्रत्यक मास और तीन पल्यो० उ० तीन पल्यो० और कोडपूर्व। परन्तु यहा ऋद्धिमें अवगाहाना ज० प्रत्यक अंगुल उ० पांचसो धनुष्य और स्थिति ज० प्रत्यक मास उ० कोडपूर्व कि समझना।

(४–५–६) गर्मे संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय सादृश परन्तु परिमाण १–२–३ उ० संख्याते समझना।

(७) गर्मे० भव ज० उ० दोय, काल कोडपूर्व अन्तरमहुर्त उ० तीन पल्योपम प्रत्यक कोडपूर्वाधिक ऋद्धिमें अवगाहाना ज० उ० पांचसो धनुष्य स्थिति ज० उ० कोडपूर्व कि शेष प्रथम गमावत्

(८) गर्मे सातवावत् परंतु भव ज० २ उ० आठ भव काल ज० अंतरमहुर्त कोडपूर्व उ० च्यार कोडपूर्व च्यार अंतरमहुर्त।

(९) गमें, पूर्ववत् परंतु भव ज० उ० दोय काल ज० तीन पल्यो० कोडपूर्व एवं उत्कृष्ट भी समझना। असंख्याते वर्षका मनुष्य देवलोंमें जाते हैं। वास्ते यह नहीं कहा है।

दश भुवनपति अंतर ज्योतीषी सौ धर्म देवलोकसे यावत् सहस्रदेव लोक तकके देवता चवके तीर्यंच पांचेन्द्रियमें ज० अंतर महुर्त उ० कोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। जीनोकि ऋद्धि जेसे असुर कुमारके देव पृथ्वीकायमें उत्पन्न समय कही थी इसी माफीक समझना, भव तथा काल नौ गमा द्वारे कहते है। भव नौ गमामें ज० दोय उ० आठ भाल।

(१) गमें १०००० वर्ष अन्तर०	उ० ४ सागरों० सा० ४ कोड०		
(२) गमें ,,	,,	,, ४० हजार वर्ष ४ अन्तर०	
(३) गमें ,,	१ कोड०	,, ४ सा० सा० ४ कोड०	
(४) गमें ,,	अन्तर०	,, ४० हजार०	४ कोड०
(५) गमें ,,	,,	,, ४० ,,	४ अंतर०
(६) गमें ,,	कोडपुर्व	,, ,, ,,	४ कोड०
(७) गमें सा० सा०	अन्तर	,, ४ सा० सा० ४ कोड०	
(८) गमें ,,	,,	,, ४ सा० सा० ४ अंतर०	
(९) गमें ,,	कोडपुर्व	,, ४ सा० सा० ४ कोड०	

यह असुरकुमार और तीर्यंचके नौ गमा कहा है इसी माफीक अपनी अपनि स्थितिमें तीर्यंच पांचेन्द्रियकि स्थितिसे गमा लगा लेना ऋद्धिमें अवगाहाना तथा लेश्या और स्थिति अनुबन्ध अपने अपने हो सो कहेना यह सब दन्डकवालोंको सुगम है वास्ते नहीं लिखा है स्वउपयोग कहना इति २१–२०।

(२१) मनुष्यका उदेशा—मनुष्यके दंडकमें संज्ञी, असंज्ञी, संख्याते वर्षवाले, असंख्याते वर्षवाले यह सब मनुष्यके दंडकमें हि गिने जाते है। छे नरक दश भुवनपति व्यन्तर, ज्योतीषी, बारह देवलोक, नौग्रीवेग० पांच अनुत्तरवैमान, तीन स्थावर, तीन वैकलेन्द्रिय, तीर्यचपंचेद्रिय और मनुष्य, इतने स्थानके जीव मरके, मनुष्यमें ज० अन्तरमहुर्त उ० तीन पल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। "यथासंभव" जिस्मे।

रत्नप्रभा नरकसे मरके जीव मनुष्यमें ज० प्रत्यकमास उ० कोंड पूर्व कि स्थितिमें उत्पन्न होते है। ऋद्धिके २० द्वार जेसे रत्नप्रभासे तीर्थच पंचेन्द्रियमे उत्पन्न समय कही थी इसी माफीक समझना परन्तु यहा परिमाणमे १—२—३ उ० संख्याते उत्पन्न होते है क्युकि असंज्ञी मनुष्यमें तो नारकी उत्पन्न होवे नही और संज्ञी मनुष्यमें संख्यातेसे ज्यादे स्थान हे नही और गमामें मनुष्यका जघन्यकाल प्रत्यक मासका केहना कारण प्रत्यक माससे कम स्थितिमें उत्पन्न नही होते है। वास्ते गमा प्रत्यक माससे केहना। इसी माफीक शार्कर प्रभा—यावत् तमप्रभ भी समझना, परन्तु यहांसे आया हुवा जीव मनुष्य जघन्य स्थिति प्रत्यक वर्षसे कम नही पावेगा वास्ते गमामे मनुष्यकि ज० स्थिति प्रत्यक वर्ष कि कहना शेष ऋद्धिमें अवगहाना लेश्या आयुष्य अनुबन्धादि स्व स्वस्थानसे स्वउपयोगसे कहना "सातवी नरकका अभाव"

पृथ्वीकाय मरके, मनुष्यमें ज० अन्तर महुर्त उ० कोडपूर्व कि स्थितिमें उत्पन्न होते है। जिस्के ऋद्धिके २० द्वारा और

नौ गमा पूर्व पृथ्वीकाय तीर्यच पांचेन्द्रियमें उत्पन्न समय कहा था इसी माफीक कहना परन्तु तीसरे छटे नौमें गमामें परिमाण १-२-३ उ० संख्याते समझना और प्रथम गमे पृथ्वीकाय अपने जघन्य कालमें अध्यवसाय प्रसस्थ अप्रसस्थ दोनों होते है दुसरेगमे अप्रसस्थ तीसरे गमें प्रसस्थ शेष तीर्यच पांचेन्द्रिय माफीक है एवं अपकाय वनास्पतिकाय बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चोरिन्द्रिय, असंज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय संज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय असंज्ञी मनुष्य संज्ञी मनुष्य यह सब जैसे तीर्यच पांचेन्द्रियके दंडकमें उत्पन्न समय ऋद्धि तथा गमा कहा था इसी माफीक समझना परन्तु परिमाण स्थिति अनुबन्धादि अपने अपने स्थानसे कहना।

असुर कुमारके देव चवके मनुष्यमें ज० प्रत्यक मास उ० कोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है ऋद्धिके २० द्वार जैसे तीर्यच पांचेन्द्रियमें उत्पन्न समय कहा था इसी माफक कहना परन्तु परिमाणमें १-२-३ उ० संख्याते कहना। और गमामें तीर्यचका जहा जघन्य अन्तर महूर्तका, काल, कहा था वह यहां (मनुष्यमें) प्रत्यक मासका कालसे गमा कहना। एवं दश भुवनपति व्यन्तर ज्योतीषी सौधर्म इशांन देवलोक तक और तीजे देवलोकसे नौ ग्रीवेग तकके देव मनुष्यमें ज० प्रत्यक वर्ष और उ० कोडपूर्वमें उत्पन्न होते है ऋद्धिके २० द्वार स्वउपयोगसे कहना कारण इस दंडक कण्ठस्थ करनेवालोंको बहुत ही सुगम् है वास्ते यहा नहीं लिखा है जाणन्ते और गमा तथा भवके लिये प्रथम थोकडेमें विस्तारसे लिख आये है। इतना ध्यानमें रखना कि नौमी ग्रीवेगमें अवगाहाना तथा संस्थान एक भव धारणी है समुद्घात सज्ञा

वे पांच है परन्तु वैक्रय और तेजस करते नहीं है। आठवा देवलोक तक ज० दोय भव उ० आठ भव करते है। अणत नौवा देवलोकके देव चवके मनुष्यमें ज० प्रत्यक वर्ष उ० कोडपूर्वकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। भव ज० दोय उ० छे। काल ज० अठारा सागरोपम प्रत्यक वर्ष उ० सतावन सागरोपम तीन कोडपूर्व इसी माफीक नौ गमा. परन्तु ऋद्धि सब देवलोकके स्थानसे कहना इसी माफीक दशवा, इग्यारवा, बारहवा देवलोक और नौ ग्रीवैगम भी कहना स्थिति गमा स्वपयोगसे लगा लेना। ऋद्धिके २० द्वार प्रत्यक स्थानपर कहना चाहिये।

विजय वैमानके देव मनुष्यमें ज० प्रत्यक वर्ष उ० पूर्वकोड स्थितिमें उत्पन्न होते है। परन्तु अवगाहाना एक हाथ दृष्टीएक सम्यग्दष्टी, ज्ञानतीन, स्थिति ज० ३१ सागरोंपम, उ० ३३ सागरोपम शेष ऋद्धि पूर्ववत् भव ज० दोय उ० च्यार भव, काल ज० ३१ सागरोंपम, प्रत्यक वर्ष उ० ६६ सागरोपम, दोय कोडपूर्व अधिक इसी माफीक शेष आठ गमा भी समझना। एवं विजयंत, जयन्त, अपराजित वैमान भी समझना। तथा सर्वार्थसिद्धि वैमानवाले देव ज० दोयभव, उ० भि दोयभव करते है यह गमा ७–८–९ तीन होगा काल

(७) गमें काल तेतीस सागरोपम प्रत्यक वर्ष

(८) गमें काल ,, ,, ,,

(९) गमें काल ,, ,, कोडपूर्व

शेष छे गमा तुट जाते है कारण सर्वार्थसिद्ध वैमानमे ज० उ० तेतीस सागरोपम कि ही स्थिति है। इति १९–२१।

(२२) वाणमित्र (व्यन्तर) देवतों का उद्देशा-संज्ञी तीर्यंच असंज्ञी तीर्यंच संज्ञी मनुष्य तथा मनुष्य तीर्यंच युगलीया मरके व्यन्तर देवतावोंमें ज० दश हजार वर्ष उ० एक पल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होता है इसकि २० द्वारकि ऋद्धि तथा नौ गमा नगकुमारकि माफीक समझना तथा युगलीया उत्कृष्ट स्थितिवाला भी व्यन्तर देवोंमें जावेगा तों एक पल्योपमकि स्थिति पावेगा अधिक स्थितिका अभाव है। इति २४–२२

(२३) ज्योतीषी देवोंका उद्देशा-संज्ञी तीर्यंच संज्ञी मनुष्य और मनुष्य तीर्यंच युगलीये मरके ज्योतीषी देवतोंमें ज० पल्योपमके आठ वे भाग उ० एक पल्योपम एक लक्ष वर्षकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। विवरण–

असंख्यात वर्षके संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रिय, मरके ज्योतीषी देवतावोंमें उत्पन्न होते है परंतु अपनि स्थिति ज० पल्योपमके आठ वे भाग उत्कृष्ट तीन पल्योपमवाले वहां ज्योतीषीयोंमें ज० ⅛ उ० एक पल्यो० लक्ष वर्ष अधिक। शेष ऋद्धि असुरकुमारकि माफीक ए भव ज० उ० दोय भव करे जिसके नौ गमा।

(१) गमें पल्यो० ⅛ उ० च्यार पल्यो० लक्ष वर्ष।

(२) गमें „ ⅛ उ० तीनपल्यो० ⅛ अधिक।

(३) गमें दोय पल्यो० दो लक्ष वर्ष उ० ४ प० लक्ष वर्ष।

(४) गमें, ज० उ० पावपल्यो० परन्तु अवगाहाना ज० प्रत्येक धनुष्य उ० १८०० धनुष्य साधिक।

(५-६) यह दोय गमा टुट जाते है=शुन्य है। कारण

जघन्य साधिक कोडपूर्वकि स्थिति युगलीयोंकि होती हैं परन्तु ज्योतीषीयोंमें इस स्थितिका स्थान नहीं है ।

(७) गमें ३ पल्यो० $\frac{1}{8}$ उ० च्यार पल्यो० लक्ष वर्ष ।

(८) गमें ३ पल्यो० $\frac{1}{8}$ उ० तीनपल्यो $\frac{1}{8}$ साधिक ।

(९) गमें ४ पल्यो० लक्ष वर्ष एवं उत्कृष्ट ।

संख्याते वर्षायुवाला तीर्यंच पांचेन्द्रिय ज्योतीषी देवोंमें उत्पन्न होते है । वह असुरकुमारकि माफीक ऋद्धि और नौगमा समझना ।

असंख्याते वर्षवाले संज्ञी मनुष्य मरके ज्योतीषी देवोंमें उत्पन्न होते है वह असंख्याते वर्षवाले संज्ञी तीर्यंचकि माफीक समझना । इतना विशेष है कि १-२-३ इस तीन गमामें अवगाहाना ज० नौ सो धनुष्य साधिक उ० तीन गाउकि ४. इस गमामें अवगाहाना ज० उ० साधिक नौसो धनुष्य तथा ७-८-९ इस तीन गमामें अवगाहाना ज० उ० तीन गाउकि है शेष पूर्ववत् ।

संख्याते वर्षके संज्ञी मनुष्य ज्योतीषीयोंमे उत्पन्न होते है जिस्के ऋद्धि तथा नौगमा, जेसे मनुष्य असुरकुमारमे उत्पन्न हुवा था परन्तु यहा पर स्थिति मनुष्य और ज्योतीषी देवोंसे गमा कहना शेष पूर्ववत् इति २४-२३ ।

(२४) वैमानिक देवतावोंका उद्देशा—बारह देवलोक, नौग्रीवैग, पांचानुत्तर वैमान यह सब वैमानिकमें गीने जाते है । प्रथम सौधर्म देवलोकके अन्दर संज्ञी तीर्यंच संख्यात वर्ष वाले असंख्यात वर्षवाले संज्ञी मनुष्य संख्याते वर्षवाले उत्पन्न होते है । यह सर्व ज्योतीषीयोंके माफीक समझना, परन्तु असंख्याते वर्षवाले तीर्यंच

पांचेन्द्रिय मरके सौधर्म देवलोकमें ज० एक पल्योपम उ० तीन पल्योपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है । वह समदृष्टी, मिथ्या दृष्टी, दोनों प्रकारके और दोय ज्ञान दोय अज्ञानवाले, स्थिति ज० एक पल्योपम उ० तीन पल्योपम एवं अनुबन्ध भी समझना । शेष ज्योतीषीयोंके माफीक. भव ज० उ० दोय करे काल ज० दोय पल्योपम उ० छे पल्योपम । नौ गमा ।

(१) गमें ज० दोय पल्यो० उ० छे पल्योपम
(२) गमें ज० ,, उ० च्यार पल्योपम
(३) गमें ज० चार पल्योपम उ० छे पल्योपम
(४) गमें ज० दोय पल्योप०उ० दोय पल्योपम अवगाहना
(५) गमें ज० ,, ,, } ज० प्रत्यक धनुष्य उ० दोय गाउ की।
(६) गमें ज० ,, उ० चार पल्योपम
(७) गमें ज० छे पल्यो उ० छे पल्यो०
(८) गमें ज० च्यार पल्यो०उ० च्यार पल्यो०
(९) गमें ज० छे पल्यो० उ० छे पल्यो०

संख्याते वर्षवाले संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रियका अठारा असुरकुमारके माफीक परन्तु मध्यमके ४-५-६ तीन गमामें दृष्टी दोय, ज्ञान दोय, अज्ञान दोय केहना । यह नौ गमा सौधर्म देवलोक और तीर्यंच पांचेन्द्रियकि स्थितिसे लगाना ।

असंख्याते वर्षवाला मनुष्य जो सौधर्म देवलोकमे उत्पन्न होता है वह सब असंख्याते वर्षके तीर्यंचके माफीक सात गमा समझना परन्तु पहले, दुसरे गमामें अवगाहना ज० एक गाउ उ०

तीन गाउ तथा तीसरे गमें ज० उ० तीन गाउकि चोथे गमे ज० उ० एक गाउ। पीछले ७-८-९ तीन गमामें ज० उ० तीन गाउ कि आवगाहान शेष पूर्ववत्।

संख्याते वर्षवाला संज्ञी मनुष्य सौधर्म देवलोकमें ज० एक पल्योपम उ० दोयसागरोपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। शेष ऋद्धि और नौगमा असुरकुमारकि माफीक समझना परन्तु यहांपर गमा सौधर्म देवलोक और मनुष्यकि स्थितिसे बोलाना।

इशांन देवलोकमें पूर्वकि माफीक कर्मभुमि अकर्मभूमि, तीर्यच पांचेन्द्रि तथा मनुष्य उत्पन्न होते है वह सब सौधर्मवत् समझना परन्तु यहांपर स्थिति ज० एक पल्योपम साधिक होनेसे युगलीयोंसे आनेवालोंकि स्थिति साधिकपल्योपम, अवगाहाना साधिक एक गाउ तथा चोथा गमामे वहां दोयगाउ अवगाहाना थि० वह यहांपर साधिक दोयगाउ कहना शेष सौधर्मवत्। गमामें इशान देवलोककि स्थिति ज० एक पल्योपम साधिक. उ० दोय सागरोपम साधिक कहना।

सनत्कुमार देवलोकके अन्दर संख्याते वर्षवाला सज्ञी तीर्यच पांचेन्द्रिय ज० दोय सागरोपम उ० सात सागरोपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है जिस्की ऋद्धिके २० द्वार असुरकुमारवत् परन्तु अपने जघन्य कालके ४-५-६ गमामें लेश्या पांच समझना शेष सौधर्मवत्। भव ज० २ उ० ९ काल तीर्यच और सनत्कुमार देवलोकसे स्वउपयोग लगा लेना।

संख्यात वर्षका संज्ञी मनुष्य सनत्कुमार देवलोकमें उत्पन्न होते है वह शार्करप्रभा नरकवत् समझना परन्तु गमामें स्थिति मनु-

ष्य तथा सनत्कुमार देवलोककी कहना । यथा—

(१) गमें	प्रत्यक वर्ष,	दोयसागरों०	उ०	च्यार कोडपूर्व	२८ सागरों०
(२) गमें	,,	,,	उ०	४ प्रत्यवर्ष	आठ सा०
(३) गमें	,,	,,	उ०	४ कोडपूर्व	२८ सा०
(४) गमें	,,	,,	उ०	४ पू०	२८ सा०
(५) गमें	,,	,,	उ०	४ प्रत्य०	८ सा०
(६) गमें	,,	,,	उ०	४ कोड०	२८ सा०
(७) गमें	कोडपूर्व	सातसागरो०	उ०	४ प्र०	२८ सा०
(८) गमें	,,	,,	उ०	४ प्र०	८ सा०
(९) गमें	,,	,,	उ०	४ कोड०	२८ सा०

एवं महेंद्रदेवलोक, ब्रह्मदेवलोक, लांतकदेवलोक, महाशुक्र-देवलोक, सहस्रारदेवलोक परन्तु गमामें स्थिति अपने अपने देवलोककि जघन्य उत्कृष्टसे गमा बोलना। विशेष है कि लांतकदेवलोकमें संज्ञी तीर्यंच पांचेंद्रिय अपनि ज० स्थितिकालमें लेश्या छवों कहना मनुष्य तथा तीर्यंच संहनन पांचवे छटे देवलोकमें पांचसंहननवाला जावे छेवटा वर्जके । सातवा आठवा देवलोकमें च्यार संहननवाला जावे कीलीका संहनन वर्जके ।

अथत् नौवा देवलोक,=संख्याते वर्षवाला संज्ञी मनुष्य मरके नौवा देवलोकमें ज० अठारा सागरोपम उ० उगणीस सागरोपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है ऋद्धि पूर्ववत परन्तु संहनन तीन प्रथमके. भव ज० तीन भव उ० सात भव करे काल ज० अठारा सागरोपम दोय प्रत्यक वर्ष उ० सतावन सागरोपम च्यार कोडपूर्व

अधिक । एवं शेष आठ गमा भी लगा लेना. यावत् बारहवां देवलोक तक परन्तु स्थिति स्व स्व स्थानसे कहना, गमा नौ, भव ज० तीन भव उ० सात भव । बारहवा दे० और मनुष्य ।

(१) गमें ज० प्रत्येक वर्ष २१ सागरो० उ० ६६ सा० ४कोड
(२) गमें ज० ,, ,, उ० ६३ सा० ४ प्रत्येवर्ष
(३) गमें ज० ,, ,, उ० ६६ सा० ४ कोड०
(४) गमें ज० ,, ,, उ० ,, ,,
(५) गमें ज० ,, ,, उ० ६६ सा० ४ प्रत्ये०
(६) गमें ज० ,, ,, उ० ६६ सा० ४ कोड०
(७) गमें ज० कोडपूर्व २२ सा० उ० ,, ,,
(८) गमें ज० ,, ,, उ० ६६ सा० ४ प्रत्ये०
(९) गमें ज० ,, ,, उ० ६६ सा० ४ कोड०

एवं नौग्रीवैग परन्तु प्रथमके दो संहननवाला आवे । गमा नौग्रीवैगकि स्थितिसे लगा लेना ।

विजयवैमानमें संख्याते वर्षवाला संज्ञी मनुष्य उत्पन्न होते है वह ज० ३१ सागरोपम उ० ३३ सागरोपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है । ऋद्धि पुर्ववत् परन्तु संहनन एक प्रथमवाला, दृष्टी एक सम्यगदृष्टी, ज्ञानी ज्ञानवाला शेष पूर्ववत । भव ज० ३ उ० ५ भव गमा नौ ।

(१) गमें प्रत्येवर्ष ३१ सा० उ० ६६ सा० ३ कोडपूर्व
(२) गमें ,, ,, उ० ६२ सा० ३ प्रत्ये०
(३) गमें ,, ,, उ० ६६ सा० ३ कोड०
(४) गमें ,, ,, उ० ६६ ,, ,,

(५) गर्मे	,,	,,	उ० ९२	सा० ३	प्रत्ये०
(६) गर्मे	,,	,,	उ० ६६	सा० ३	कोड०
(७) गर्मे कोडपूर्व	२२ सा०		उ० ६६	सा० ३	कोड०
(८) गर्मे	,,	,,	उ० ९२	सा० ३	प्रत्ये०
(९) गर्मे	,,	,,	उ० ६६	सा० ३	कोडपूर्व

एवं विजयन्त, जयन्त, अपराजित,

सर्वार्थ सिद्ध वैमानके अंदर संख्याते वर्षवाला संज्ञी मनुष्योत्पन्न होते है वह ज० उ० तेतीस सागरोपमकि स्थितिमें उत्पन्न होते है। ऋद्धि स्व उपयोगसे समझना। गमा ३ तीजा छटा नौवा।

(१) तीजे गमे भव तीन करे काल ज० ३३ सागरोपम दोय प्रत्यक वर्ष अधिक उ० ३३ सा० २ कोडपूर्व०।

(२) छठे गर्मे भव तीन–काल ३३ सा० दोय प्रत्येक वर्ष उ० ३३ सा० दोय प्रत्येक वर्ष अधिक।

(३) नौवा गर्मे भव तीन काल ज० उ० ३३ सागरोपम दोय कोडपूर्वाधिक।

अवगाहाना तीजे छठे गर्मे ज० प्रत्येक हाथकि नौवां गर्मे ज० उ० पांचसो धनुष्यकि। स्थिति ज० उ० कोडपूर्वकि इति २४–२४

इस गमा शतकमें बहुतसे स्थानपर पूर्वकि भोलामण देते हुवे गमा नहीं लिखा है इसका कारण प्रथम तो हमारा इरादाही कण्ठस्थ करानेका है अगर संख्यातसे कंठस्थ करेंगे उन्होंके लिये सबके सब गमा कण्ठस्थ ही हो जायगा।

ऋद्धिके बारामे यह विषय बहुत सुगम है जोकि लघु दंडकके जाननेवाला सहजमें ही समझ शक्ता है ।

गमा और ऋद्धिके लिये हमने प्रथम थोकडाही अलग बना दीया है अगर पेस्तर वह थोकडा पड लिया जायगा तो फीर बहुत सुगम हो जायगा ।

पाठक वर्गको इस बातको खास ध्यानमें रखनि चाहिये कि स्वल्प ही ज्ञान क्यों न हो, परन्तु कण्ठस्थ किया हुवा हो वह इतना तो उपयोगी होजाता है कि भिन्न भिन्न विषयमें पूर्ण मदद-कार बनके विषयको पूर्ण तौर ध्यानमें जमा देते है ।

इस शीघ्र बोधके सब भागमें हमारा प्रथम हेतु ज्ञानाभ्यासी-योंको कण्ठस्थ करानेका है और इसी हेतुसे हम विस्तार नहीं करते हुवे संक्षिप्तसे ही सार सार समझा देते है । आसा है कि इस हमारे इरादेको पूर्ण कर पाठक अपनि आत्माका कल्याण आवश्य करेगा । किमधिकम् ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

इति शीघ्रबोध भाग २३ वां समाप्त ।

श्री ककसूरीश्वरसद्‌गुरुभ्योनमः

अथश्री

शीघ्रबोध भाग २४वां.

थोकडा नं० १

सूत्र श्री भागवतीजी शतक २१ वां

(वर्ग आठ)

इस इकवीसवां शतकके आठ वर्ग और प्रत्येक वर्गके दश दश उदेशा होनेसे ८० उदेशा है। आठ वर्गके नाम।

(१) शाली=गहू जव ज्वारादिका वर्ग

(२) कलमुर=चीणा मठरादिका ,,

(३) अलसी=कसुंबादिका ,,

(४) वांस=वेत लता आदिका ,,

(५) इक्षु=सेलडी जातिका ,,

(६) डाभ=तृणजातिका ,, [वृक्ष उत्पन्न होना

(७) अक्तोहरा=एक जातिके वृक्षमें दुसरि जातिका-

(८) तुलसी=आदि वेलीयोंका वर्ग

प्रथम शाली आदिके वर्गका मूलादि दश उदेशा है. जिस्मे पहला उदेशापर बत्तीसद्वार उतारेगा यथा--

(१) उत्पाद द्वार--शालीके मूलमें कितने स्थानसे जीव आय के उत्पन्न होते है ? तीर्यंचके ४६ भेद जेसे तीर्यंचके ४८ भेद

मानेगये है जिस्मे बनास्पतिके ६ भेद माना है यहां पर सुक्षम बादरके पर्याप्ता अपर्याप्त एवं च्यार माना है वास्ते ४६ स्थाना और मनुष्यके तीन भेद है कर्मभूमि मनुष्यका पर्याप्ता अपर्याप्त और समुत्सम एवं ४९ स्थानका जीव मरके शाळीके मूळमे आसक्ते है।

(२) परिमाण द्वार—एक समयमें कितने जीव उत्पन्न होसक्ते है। एक दोय तीन यावत् संख्याते असंख्याते।

(३) अपहरन द्वार—एक समय उत्कृष्ट असंख्याते जीव उत्पन्न होते है उस जीवोंको प्रत्यक समय एकेक जीव निकाळा जावेतों कितना काळ लागे? उस्कों असंख्याती सर्पिणी उत्सर्पिणी जीतना काळ लागे।

(४) अवगाहना द्वार—ज० अंगुळके असंख्यातमे भाग० उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्पकि होती है।

(५) बन्धद्वार—ज्ञानावर्णिय कर्म बन्धक (१) किसी समय एक जीव उत्पन्न कि अपेक्षा एक जीव मीलता है (२) कीसी समय बहुत जीव उप्तन्न समय बहुत जीव मीलता है एवं शेष सात कर्मोका दोय दोय भांगा समझना परन्तु आयुष्य कर्मके आठ भांगा होता है यथा (१) आयुष्य कर्मका बन्धक एक (२) अबन्धक एक (३) बन्धक बहुत (४) अबन्धक बहुत (५) बन्धक एक, अबन्धक एक (६) बन्धक एक अबन्धक बहुत (७)बन्धक बहुत अबन्धक एक (८) बन्धक बहुत अबन्धक भी बहुत।

(६) वेदेद्वार—ज्ञानावर्णिय कर्म वेदनावाळा एक तथा घणा और साता असाता वेदनिय कर्मका भांगा आठ शेष कर्मोका दो दो भागा पूर्ववत् समझना।

(७) उदयद्वार—ज्ञानावर्णिय उदयवाला एक ज्ञाना० उदयवाला बहुत एवंयावत् अंतराय कर्मका ।

(८) उदिरणाद्वार—आयुष्य और वेदेनिय कर्मोका आठ आठ भांगा शेष छे कर्मोका दो दो भागा पूर्ववत् ।

(९) लेस्याद्वार—शालीके मूलमें जीव उत्पन्न होते है उस्मे लेश्या स्यातकृष्ण स्यातनिल स्यातकापात लेश्या होती है बहुत जीवों कपेक्षा २६ भागा होते है देखो शीघ्र० भाग ८ उत्पेंठोधिकार ।

(१०) द्दष्टीद्वार द्दष्टी एक मिथ्यात्वकि भांगा दोय । एक जीवोत्पन्नापेक्षा एक, बहुत जीवोत्पन्नापेक्षा बहुत ।

(११) ज्ञानद्वार—अज्ञानी एक अज्ञानी बहुत ।

(१२) योगद्वार—काययोगि एक काययोगि बहुत ।

(१३) उपयोगद्वार—साकार अनाकारके भांगा आठ ।

(१४) वर्णद्वार—जीवापेक्षा वर्णादि नही होते हैं और शरीरापेक्षा पांच वर्ण दोय गंध पांच रस आठ स्पर्श पावे ।

(१५) उश्वासद्वार—उश्वास, निःश्वास नोउश्वसनोनिश्वास तीन पदके भांगा २६ उत्पश्वत् ।

(१६) आहारद्वार—आहारीक एक—बहुता एक और बहुतके दो भांगा ।

---

१ शीघ्रबोध भाग ८ वांमे उत्पल कमलके ३२ द्वार विस्तार रूप कहे है यहांपर यादश विषयकि मोटामम दी गइ है, देखो भाग८ भाग ।

(१७) व्रतीद्वार—अव्रती एक अव्रती बहुत ।

(१८) क्रियाद्वार—सक्रिय एक सक्रिया बहुत ।

(१९) बंधद्वार—सात कर्मोके बन्ध और आठ कर्मोके बन्धसे आठ भांगा पूर्ववत् ।

(२०) संज्ञाद्वार—आहारसंज्ञा भय० मैथुन० परिग्रह० च्यार पदके ८० भांग देखो उत्पलाधिकार ।

(२१) कषायद्वार—क्रोध, मान, माया, लोभ च्यार पदके भांग ८० देखो उत्पलाधिकार ।

(२२) वेदद्वार—नपुंसकवेद एक नपुं० बहुत

(२३) बन्धद्वार—स्त्रिवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद इस तीनों वेदके २६ भांगोंसे बन्ध करता है ।

(२४) संज्ञीद्वार—असंज्ञी एक—बहुत ।

(२५) इन्द्रियद्वार—सइन्द्रियएक—बहुत ।

(२६) अनुबन्धद्वार कायस्थिति—जघन्य अन्तर महुर्त. उत्कृष्ट ख्याते काल अर्थात शालादिके मूलका मूलपणे रहे तो असंख्यात काल रह शक्ते है ।

(२७) संपहो—अन्य गति तथा जातिके अन्दर कितने भव करे कीतने कालतक गमनागमन करे ।

नाम	भव		काल	
	ज०	उ० भव	ज०	उत्कृष्ट काल
च्यार स्थावरमें	२	असंख्या	अन्तरमहूर्त	असंख्या० काल
वनास्पतिमें	२	अनन्ता		अनन्त० ,,
वैकलेन्द्रियमें	२	संख्यात		संख्यात० ,,
तीर्यच पांचेन्द्रिय	२	आठ		प्रत्यक ,,
मनुष्यमें	२	आठ		कोडपूर्व ,,

(२८) आहारद्वार—२८८ बोलोका आहार लेते है ।

(२९) स्थितिद्वार—ज० अन्तरमहूर्त उ० प्रत्यक वर्षकि ।

(३०) समुदघात—वेदनि, मरणंति, कषाय एवं तीन ।

(३१) मरण—समोहीय, असमोहीय दोन प्रकारसे ।

(३२) गतिद्वार—मरके ४९ स्थानमें आते है पूर्ववत ।

(प्र) हे भगवान् सर्व प्राणभूत जीव सत्व, शालीके मूलपणे पूर्वे उत्पन्न हुवे ?

हां गौतम, एक वार नही किन्तु अनन्ती अनन्ती वार उत्पन्न हुवे है । इति ।१।

जेसे यह शालीके मूलका पहला उदेशा कहा है इसी माफीक शालीके कन्द उदेशा, स्कन्धउदेशा, त्वचाउदेशा, साखाउदेशा, परवाल उदेशा, और पत्रउदेशा एवं सातउदेशा सादश है सबपर ३२–३२ द्वार उत्तारना ।

आठवां पुष्प उदेशामें जीव ७४ स्थानोंसे आते है जिस्मे ४९ तो पूर्वे कहा है, दशभुवनपति, आठव्यन्तर, पांच ज्योतीषी,

सौधर्म देवलोक, और ईशान देवलोक, एवं पचवीस देवतावोंके पर्याप्ता चवके शालीके पुष्पोंमें आते है वास्ते ७४ स्थानोंकि आगति है। लेश्या च्यार भांगा ८० है अवगाहाना उत्कृष्ट प्रत्यक अंगुलकि है एवं नौवां, फलउदेशा तथा दशवां बीजउदेशा भी समझना। तात्पर्य यह है कि शाली गहु जव ज्वारादिके सात उदेशोंमें देवता उत्पन्न नहीं होते है। शेष तीन उदेशामें देवता मरके उत्पन्न होते है। कारण पुष्पादि अच्छे सुगन्धवाले होते है।

इति प्रथम वर्गके दश उदेशा प्रथम वर्ग समाप्तम्॥

(२) दुसरा कल मुगादिका वर्ग, शाली माफीक दशों उदेशा समझना तीन उदेशोंमें देव अवतरे।

(३) तीसरा—अलसी कसुंबादिका वर्गशाली माफीक दशो उदेशा समझना।

(४) वांस वेतका चोथा वर्ग, शाली माफीक है परन्तु दशों उदेशामें देवता उत्पन्न नहीं होते है।

(५) इक्षु वर्गके तीसरा स्कन्धउदेशामें देवता उत्पन्न होते है शेषमें नहीं, स्कन्धमें मधुरता रहेती है।

(६) डाभ तृणादि वर्गके दशोउपदेशोंमें देवता नहीं आवे सर्व वांस वर्गकि माफीक समझना।

(७) अझोहरा वर्ग, वांसवर्गके माफीक समझना।

(८) तुलसीवर्ग, वांसवर्गके माफीक समझना।

नोट—जीस उदेशामें देवता उत्पन्न होते हो वहां लेश्या च्यार पावे और भागा ८० होते है शेषमें लेश्या तीन भागा २६ होते है। इति भगवती सुत्र शतक २१। वर्ग आठ उदेशा ८०, समाप्तं।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर २

सूत्र श्री भागवतीजी शतक २२

(वर्ग छे)

इस बावीसवां शतकके छे वर्ग है प्रत्येक वर्गके दश दश उदेशा होनसे साठ उदेशा होते है । यथा–

(१) ताल तम्बालादि वृक्षका वर्ग
(२) एक फलमें एक बीज आम्र हरडे निंब आदिके वर्ग
(३) एक फलमें बहुत बीज अगत्थीया वृक्ष तंडुक वृक्ष बद-
रिक वृक्षादि ।
(४) गुच्छा वृन्ताकि आदिका वर्ग ।
(५) गुल्म–नवमालती आदिका वर्ग
(६) वेलि–पुंफली, कालिंगी, तुम्बीदि वर्ग

इस छे वर्गसे प्रथम तालतम्बालादि वृक्षके मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, साखा, यह पांच उदेशा शाली वर्गवत् कारण इस पाचों उदेशोंमें देवता उत्पन्न नही होते है । लेश्या तीन भांगा २६ होते है । स्थिति ज० अन्तर महूर्त उ० दशहजार वर्षोकि है । शेष परिवाल, पत्र, पुष्प, फल, बीज इस पांच उदेशोमें देवता आके उत्पन्न होते है, लेश्या च्यार भागा ८० होते है । और स्थिति ज० अन्तर महूर्त उ० प्रत्यक वर्ष की है । अवगाहाना जघन्य अंगुलके असंख्यातमें भाग है उत्कृष्टी मूल कन्दकि प्रत्यक धनुष्यकि, स्कन्ध, त्वचा, साखा, कि प्रत्यक गाउ० परवाल, पत्र, कि प्रत्यक धनुष्यकि, पुष्पोंकि प्रत्यक हाथ, फल, बीज कि प्रत्यक अंगुलकि है शेष अधिकार शाली वर्ग माफीक समजना ।

(२) एगटिया–निंब, जंबु, कोसंब, पीलु, इत्यादि जीसके फलमें एक गुटली हो एसे वृक्षोंकि वर्गका दश उदेशा निर्विशेष प्रथम वर्गवत् समझना इति एगठिय वर्गके दश उदेशा। समाप्तं।

(३) बहुबीजा–आगत्थियाके वृक्ष, तंदुकवृक्ष कविट आम्बाण इत्यादि वृक्षोंका वर्गके दश उदेशा ताल वर्गके सादृश समझना इति तीसरा वर्ग० स०।

(४) गुच्छा–वेगण, खलाइ, गंज, पडलादि गुच्छा वर्गके दश उदेशा निर्विशेष वांस वर्गकि माफीक समझना इति गुच्छा वर्ग समाप्तं।

(५) गुल्म–नौ मल्ति सरिका कणव नालिका आदिका वर्गके देश उदेशा निर्विशेष शाली वर्गकि माफीक समझना इति गुल्म वर्ग समाप्तम्।

(६) वेलि–पूनफली, कालिंगी तुंबी तउसी एला वालुकि अदि वेलिवर्गके दश उदेशा तालवर्गकि माफीक परन्तु फल उदेशे अवगाहाना उ० प्रत्यक धनुष्यकि है और स्थिति सब उदेशे उ० प्रत्यक वर्षाकि है इति वेलिवर्ग समाप्तं।

यहां छे वर्गके साठ उदेशा है प्रत्यक उदेशे बत्तीस बत्तीस द्वार उतारणा चाहिये वह आम्नाय शालीवर्गमें लिखी गई है सिवाय खास तफावतकि बातों यहांपर दर्शाई है वास्ते स्व उपयोगसे विचारणा चाहिये।

इति बावीसवां शतक छे वर्ग साठ उदेशा समाप्तं।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर ६

श्री भगवती सूत्र शतक २३

(वर्ग पांच)

इस तेवीसवां शतकके पांच वर्ग जिस्के पचास उदेशा है इस शतकमें अनन्त काय साधारण वनास्पतिका अधिकार है साधारण वनास्पतिकायमें जीव अनन्त कालतक छेदन, भेदन, महान् दुःख-सहन किया है वास्ते इस शतकके प्रारम्भमें "नमो सुयदेवयाए भगवईए" सुत्र देवता भगवतीको नमस्कार करके (१) आलुवर्ग (२) लोहणी वर्ग (३) आवकाय वर्ग (४) पाढमि आदि वर्ग (५) मासपन्नी आदि वर्ग कहा है। (१) आलु मूला आदो हलदी आदिके वर्गका दश उदेशा वांस उदेशाकि माफीक है परन्तु परि-माण द्वारमें १—२—३ यावत् संख्याते असंख्याते अनन्ते उत्पन्न होते है समय समय एकेक जीव निकाले तो अनन्ती सर्पिणि, उत्सर्पिणि पुर्ण होजाय। स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट अंतर महुर्तकि शेष वांसवर्गवत समझना इति प्रथम वर्ग दश उदेशा समाप्तम्।

(२) लोहनि असकनी, वज्रकन्नो, आदिका वर्गके दश उदेशा, आलुवर्गके माफीक परंतु अवगाहाना तालवर्ग माफीक समझना इति समाप्तम्।

(३) आवकाय कहुणी आदि जमीकन्दकी एक जाति है इसके भी १० उदेशा आलुवर्ग माफीक है परंतु अवगाहाना ताल वर्ग माफीक समझना इति तीसरा वर्ग समाप्तम्।

(४) पाढमि, वालुकि मधुरसाय आदि० जमीकंदकि एक

जाति है इसका भी दश उदेशा आलुवर्ग सादृश है परन्तु अवगाहाना वेलिवर्ग माफीक समझना इति ॥ ४॥

(५) मासपन्नी मुग्गपन्नी जीव सरिसव आदि यह भी एक जमीकन्दकी जाति है इसके भी मूलादि दश उद्देशा निर्विशेष आलुवर्ग सादृश समझना इति पांचमा वर्ग समाप्तम् ।

इस तेवीसवा शतकके पांच वर्ग पचास उद्देशा है प्रत्येक उदेशापर पूर्वोक्त बत्तीस बतीसद्वार स्वउपयोगसे लगालेना ।

सुचीना २१-२२-२३ शतक पढ़नेके लिये पेस्तर उत्पल-कमला धिकार कण्ठस्थ करलेना चाहिये कि यह तीनों शतक सुगमता पूर्वक समझमें आसके इति ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेवसच्चम् ।

थोकडा नंबर ४

सूत्र श्री भगवतीजी शतक २५ उद्देशो ४

(अल्पा बहुत्व)

(१) इस आरापार संसारके अन्दर अनन्ते परमाणु पुद्गल अनन्ते द्विप्रदेशी स्कन्ध एवं तीन प्रदेशी, च्यार प्रदेशी, पांच प्रदेशी, छे प्रदेशी, सात प्रदेशी आठ प्रदेशी, नो प्रदेशी, दश प्रदेशी; यावत संख्याते प्रदेशी, असंख्याते प्रदेशी, अनन्त प्रदेशी स्कंध अनन्ते हैं ।

(२) इस चौदा राज परिमाणवाले लोकमें, एक आकाश प्रदेशी अवगाहन किये हुवे पुद्गल अनन्ते है एवं २-३-४-५-६-७-८-९-१० आकाश देश अवगाहन किये हुवे पुद्गल अनन्ते

है यावत् संख्याते, असंख्याते, आकाश प्रदेश अवगहान किये हुवे पुद्गल अनन्ते हैं ।

(३) इस अनादि लोकके अन्दर एक समयकी स्थिति वाले पुद्गल अनन्ते हैं एवं २–३–४–५–६–७–८–९–१० यावत् संख्याते समयकी स्थिति, असंख्याते समयकि स्थिति वाले पुद्गल अनन्ते हैं ।

(४) इस प्रवाह लोकके अन्दर एक गुन काले वर्ण एवं २–३ ४-५-६-७-८-९-१० यावत्संख्याते असंख्याते अनन्ते गुण काले पुद्गल अनन्ते हैं एवं नीलेवर्ण रक्तवर्ण पीतवर्ण श्वेतवर्ण सुगंध दुर्गन्ध तीक्तरस कटुकरस कषायकेरस खटोरस मधुरस कर्कशस्पर्श मृदु, गुरु लघु, शीत, उष्ण, रूक्ष, स्निग्ध यह वीसबोलोंके एक गुनसे अनंत गुणतकके पुद्गल अनंते अनन्ते है ।

द्रव्यापेक्षा, क्षेत्रापेक्षा, कालापेक्षा, भावापेक्षा, इसी च्यारोंके द्रव्य और प्रदेशापेक्षा अल्पाबहुत्व कहते है ।

(१) द्रव्यापेक्षा अल्पा०

(१) दो प्रदेशी स्कंध द्रव्यसे परमाणुवोंके द्रव्य बहुत है
(२) तीन प्रदेशी स्कंध द्रव्यसे दो प्रदेशीके द्रव्य बहुत है
(३) च्यार ,, ,, ,, तीन प्र० स्कं० द्रव्य ,,
(४) पांच ,, ,, च्यार ,, ,, ,, ,,
(५) छे ,, ,, पांच ,, ,, ,, ,,
(६) सात ,, ,, छे ,, ,, ,, ,,
(७) आठ ,, ,, सात ,, ,, ,, ,,
(८) नौ ,, ,, आठ ,, ,, ,, ,,

(९) दश	,,	,, नौ	,,	,,	,,	,,
(१०) दश	,,	,, संख्यात	,,	,,	,,	,,
(११) संख्यात	,,	,, असं०	,,	,,	,,	,,
(१२) अनन्त	,,	,, असं०	,,	,,	,,	,,

(२) प्रदेशापेक्षा अल्पा०

(१) परमाणुवोंसे दो प्रदेशीके प्रदेश बहुत है ।

(२) दो प्रदेशी स्कंघसे तीन प्र० के प्रदेश बहुत है ।

(३) तीन प्र० स्क०		से च्यार प्र० के	,,	,,
(४) च्यार	,,	,, से पांच प्र० के	,,	,,
(५) पांच	,,	,, से छे प्र० के	,,	,,
(६) छे	,,	,, से सात प्र० के	,,	,,
(७) सात	,,	,, से आठ प्र० के	,,	,,
(८) आठ	,,	,, से नो प्र० के	,,	,,
(९) नौ	,,	,, से दश प्र० के	,,	,,
(१०) दश	,,	,, से संख्याते प्र० के	,,	,,
(११) संख्या	,,	,, से असंख्या प्र० के	,,	,,
(१२) अनन्त	,,	,, से असंख्य० प्र० के	,,	,,

(३) क्षेत्रापेक्षा द्रव्योंकि अल्पा० दोय आकाश प्रदेश अवगाह्य द्रव्योंसे, एकाकाश प्रदेश अवगाह्ये द्रव्य बहुत है एवं यावत दशाकाश अवगाह्ये द्रव्योंसे नौ आकाश अवगाह्ये द्रव्य बहुत है । दशाकाश अवगाह्ये द्रव्यसे संख्याता काश अवगाह्ये द्रव्य बहुत है। संख्या ० अवगाह्यसे असंख्याताकाश अवगाह्ये द्रव्य बहुत है ।

(४) क्षेत्रापेक्षा प्रदेशकि अल्पा० एकाकाश अवगाह्ये प्रदेशसे

दो आकाश अवगाहे प्रदेश बहुत है एवं यावत नौ अव० से दशाकाश अवगाहे प्रदेश बहुत है; दशाकाश अवगाहासे संख्यात आकाश प्रदेश अवगाह्य प्रदेश बहुत, संख्यात० से असंख्याते प्रदेश अवगाहे प्रदेश बहुत है।

(५–६) कालापेक्षा द्रव्य और प्रदेशकी अल्प बहुत्व क्षेत्रकि माफिक समझना।

(७–८) भावापेक्षा द्रव्य और प्रदेशकि अल्पाबहुत्व पांच वर्ण दोयगंध पांच रस और चार स्पर्श एवं १६ बोलोंकि अल्प० परमाणुकी माफीक अर्थात् द्रव्यकि नं० १ प्रदेशकि नं० २ माफीक समझना और कर्कशस्पर्शकि अल्पा बहुत यथा= एक गुण कर्कश स्पर्शसे दो गुण कर्कश स्पर्श के द्रव्य बहुत हैं एवं नौ गुणसे दश गुणके द्रव्य बहुत, दश गुणसे संख्यात गुणके बहुत, संख्यात गुणोंसे असंख्यात गुणके बहुत, असंख्यात गुण कर्कश स्पर्शके द्रव्यों से अनन्त गुण कर्कश स्पर्शके द्रव्य बहुत है। इसी माफीक प्रदेशकी भी अल्प० समझना एवं मृदुस्पर्श, गुरुस्पर्श, लघुस्पर्श भी समझना इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर ९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक २५ उद्देशा ५

(कालाधिकार)

(प्र० हे भगवान्! एक आविकामें क्या संख्याते समय होते हैं? असंख्याते समय होते है? अनन्ते समय होते है?

(उ) हे गौतम एक आविलकाके असंख्याते समय होते है किन्तु संख्याते, अनन्ते समय नहीं होते है।

(१) एवं एकश्वासोश्वासमें असंख्यात समय होते हैं।

(३) स्तोककालमें असंख्यात समय होते है।

(४) एवं एक लवकालमें असंख्याते समय होते है (५) एवं महुर्त (६) अहोरात्री (७) पक्ष (८) मास (९) ऋतु (१०) अयन (११) संवत्सर (१२) युग (१३) शतवर्ष (१४) सहस्त्रवर्ष (१५) लक्षवर्ष (१६) पूर्वांगे (१७) पूर्व (१८) तुटीतांग (१९) तुटीत (२०) अडडांग (२१) अडड (२२) अववांग (२३) अवव (२४) हुहांग (२५) हुहू (२६) उपलांग (२७) उपल (२८) पद्मांग (२९) पद्म (३०) निलनिआंग (३०) निलनि (३०) (३१) अत्यनिआंग (३२) अत्यनि (३३) आयुरांग (३४) आयु (३५) नायुरांग (३६) नायु (३७) पायुरांग (३८) पायु (३९) चुलीयांग (४०) चूलिया (४१) शीश पेलीयांग (४२) शीषपेलीयाँ (४३) पल्योपमें (४४) सागरोपमें (४५) उत्सर्पिणि (४६) अवसर्पिणि (४७) कालचक्रं एवं ३७ वोल एक वचन अपेक्षा असंख्यात समय

---

१ समयको शास्त्रकारोंने वहुत ही सुक्षम वतलाया है देखो अनुयोगद्वारसुत्रको। २ लक्ष चौरासी वर्गका एक पुर्वांग होते हैं (३) चौरासी लक्षको चौरासी लक्ष गुने करनेसे ७०५६०००००००००० वर्षका एक पूर्व होता हैं आगे एकेक वोलको चौरासी चौरासी लक्ष गुनाकर लेना। (४) यहातक गणत विषय वतलाये हैं (५) कुवेके द्रष्टान्तसे पल्योपमकाल (६) दश कोडाकोड पल्योपमका एक सागरोपम (७) वीस कोडाकोड सागरोपमका एक काल चक्र (८) अनन्ते कालचक्रका एक पुद्गल प्रवर्तन होते है।

है और (४८) एक पुद्गल प्रवर्तनमें संख्यात समय नहीं असंख्यात समय नहीं किन्तु अनन्त समय होते है (४९) एवं भूतकालमें (५०) एवं भविष्य कालमें (५१) एवं सर्व कालमें अनन्त समय है कारण इस च्यार बोलोंमें काल अनंतो है।

(प्र) बहुवचनापेक्षा घणि अविलकामें समय संख्याते है असंख्याते है ? अनन्ते है।

(उ) संख्याते नहीं स्यात असंख्याते स्यात अनन्ते समय है एवं ४७ वां बोल कालचक्र तक कहना शेष च्यार बोल (४८–४९–५०–५१) में संख्याते, असंख्याते समय नहीं किन्तु अनन्ते समय है।

(प्र) एक श्वासोश्वासमें आविलका कितनि है।

(उ) संख्याती है शेष नहीं एवं ४२ बोलतक स्यात संख्याती ४३–४४–४५–४६–४७ इस पांच बोलोंमें असंख्याती है शेष ४८–४९–५०–५१ वां बोलमें अनन्ती है एवं बहुवचनापेक्षा परन्तु ४२ बोलोंतक स्यात् संख्यती स्यात असंख्याती स्यात अनन्ती पांच बोलोंमें स्यात असंख्याती स्यात अनन्ती शेष च्यार बोलोंमें आविलका अनन्ती है।

इसी माफीक एकेक बोल उत्तरोत्तर पृच्छा करनेमें एक वचनापेक्षा ४२ वालों तक संख्याते ५ वालोंमें असंख्याते ४ वालोंमें अनंते और बहुतवचनापेक्षा ४२ बोलों तक स्यात संख्याते स्यात असंख्याते स्यात अनंते, पांच बोलोंमें, स्यत असंख्याते स्यात अनन्ते और च्यार बोलोंमें अनन्ते कहना। चरम प्रश्न।

(प्र) भूतकालमें पुद्गल प्रवर्तन कितने है।

(उ) अनन्ते एवं भविष्यकालमें भी एवं सर्व कालमें भी अनन्ते पुद्गल प्रवर्तन होते है। कारण काल अनन्ता है।

भूतकालसे भविष्यकाल एक समय अधिक है। कारण। वर्तमानकालका समय है वह भविष्य कालमें गीना जाता है। भूतकालकि आदि नहीं है और भविष्यकालका अंत नहीं है वर्तमान समय एक है उसको शास्त्रकारोंने भविष्यकालमें ही गीना है इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेवसच्चम्।

थोकड़ा नम्बर ६

सूत्र श्री भगवतीजी शतक २५ उद्देशा ७

(संयति)

निग्रंथ पांच प्रकारके होते है वह थोकडा, शीघ्रबोध भाग चोथामें छपा गया है, अब संयति (साधु) पांच प्रकारके होते है यथा सामायिक संयति, छदोपस्थापनियसंयति, परिहार विशुद्ध संयति, सूक्षम संपराय संयति, यथाक्षात संयति इस पांचो संयतिको ३६ द्वारसे विवरणकर शास्त्रकार बतलाते है।

(१) प्रज्ञापनद्वार=पांच संयतिकि परूपणा करते हैं (१) सामायिक संयतिके दो भेद है (१) स्वल्प कालका जो प्रथम और चरम जिनोंके साधुवोंको होता है उसकी मर्याद जघन्य सातदिन मध्यम च्यार मास उत्कृष्ठ छे मास (२) बावीस तीर्थंकरोंके तथा महाविदेह क्षेत्रमें मुनियोंके सामायिक संयम होते है वह जावजीव तक रहेते हैं (२) छदोपस्थापनिय संयम, जिस्का दो भेद है (१) स अतिचार जो पूर्व संयमके अन्दर आठवां प्रायश्चित सेवन कर-

जेसे फीरसे छदो० संयम दिया जाता है (२) तेवीसवें तीर्थंकरोंका साधु चौवीसवें तीर्थंकरोंके शासनमें आते है उसकों भी छदो० संयम दिया जाते है वह निरातिच्यार छदो० संयम है (३) परिहार विशुद्ध संयमके दो भेद है (१) निवृतमान जेसे नौ मनुष्य नौ नौ वर्षके हो दीक्षाले वीस वर्ष गुरुकुलवासे नौ पूर्वका व्ययन कर विशेष गुण प्राप्तिके लिये गुरु आज्ञासे परिहार विशुद्ध संयमको स्वीकार करे। प्रथम छेमास तक च्यार मुनि तपश्चर्य करे च्यार मुनि तपस्वी मुनियोंकि व्यावच्च करे, एक मुनि व्याख्यान वाचे दूसरे छ मासमें तपस्वी मुनि व्यावच्च करे व्यावच्चयवाले तपश्चर्यकरे तीसरे छमासमें व्याख्यान वाला तपश्चर्यकरे सातमुनी उन्होंकि व्यावचकरे, एक मुनि व्याख्यान वांचे। तपश्चर्यका क्रम: उष्णकालमें एकान्तर शीतकालमें छट छट पारणा चतुर्मासामें अठम अठम पारणा करे, एसे १८ मासतक तपश्चर्य करे। जिनकल्पको स्वीकार करे अगर एसा नहोतों वापीस गुरुकुलवासाकों स्वीकार करे।

(४) सुक्ष्म संपराय संयमके दो भेद है। (१) संक्लष परिणाम उपशमश्रेणिसे गिरते हुवेके (२) विशुद्ध परिणाम क्षपकश्रेणि चडते हुवेके (५) यथाख्यात संयमके दो भेद है (१) उपशान्त वितरागी (२) क्षिणवितरागी जिस्में क्षिणवितरागीके दो भेद है (१) छद्मस्त (२) केवली जिस्में केवलीका दोय भेद है (१) संयोगी केवली (२) अयोगी केवली। इति द्वारम्

(२) वेद —सामायिक सं० छदोपस्थापनियसं० सवेदी, तथा अवेदी भी होते है कारण नौ वां गुण स्थानके दो समय शेष रहने पर वेद क्षय होते है और उक्त दोनों संयम नौ वा गुण स्थान तक

है। आगर सवेद होतों त्रिवेद, पुरुषवेद नपुंसकवेद इस तीनोंवेदमें होते है। परीहार विशुद्ध संयम पुरुष वेद पुरुष नपुंसकवेदमें होते है सुक्षम यथाख्यात यह दोनो संयम अवेदी होते है जिस्मे उपशांत अवेदी (१०–११–गु०) और क्षिण अवेदी (१०-११-१२-१४) गुणस्थान) होते है इति द्वारम्

(६) राग–च्यार संयम सरागी होते है यथाख्यात सं० वित-रागी होते है सो उपशान्त तथा क्षिण वीतरागी होते है।

(४) कल्प– कल्पके पांच भेद है।

(१) स्थितकल्प–(१) वस्त्रकल्प (२) उद्देशीक आहार कल्प (३) राजपण्ड (४) शय्यातरपण्ड (५) मासीकल्प (६) चतुर्मासीक कल्प (७) व्रतकल्प (८) प्रतिक्रमणकल्प (९) कृतकर्मकल्प (१०) पुरुषजेष्टकल्प एवं (१०) प्रकारके कल्प प्रथम और चरम जिनोंके साधुवोंके स्थितकल्प है।

(२) अस्थित कल्प पुर्वेजो १० कल्प काहा है वह मध्यमके २२ तीर्थंकरोंके मुनियोंके अस्थित कल्प है क्योंकि (१) शय्यातर व्रत, कृतकर्म, पुरुष जेष्ट, यह च्यार कल्पस्थित है शेष छेपरक अस्थित है विवरण पर्युषण कल्पमें है।

(३) स्थिवर कल्प–मर्यादापूर्वक १४ उपकरण रखे गुरुकुल वासो सेवन करे गच्छ संग्रहत रहै। और भी मर्यादा पालन करे।

(४) जिनकल्प–जघन्य मध्यम उत्कृष्ट उत्सर्ग पक्ष स्वीकार कर अनेक उपसर्ग सहन करते जंगलादिमें रहे देखो नन्दीसुत्र विस्तार।

(९) कल्पातित—आगम विहारी अतिशय ज्ञानवाले महात्मा जो कल्पसे वितिरक्त अर्थात् भूत भविष्यके लाभालाभ देख कार्य करे इति। सामा० सं० में पूर्वोक्त पांचों कल्पपावे छदो० परि-हार०में कल्प तीन पावे, स्थित कल्प, स्थिवर कल्प, जिन कल्प। सूक्ष्म० यथाख्य० में कल्पदोय पावे अस्थित कल्प और कल्पातित इतिद्वारम्।

(५) चारित्र—सामा० छदो० में निर्गंथ च्यार होते है पुलाक बुकश प्रतिसेवन, कषायकुशील। परिहार० सूक्ष्म० में एक कषाय कुशील निर्गंथ होते है यथाख्यात संयममें निर्गंथ और सनातक यह दोय निग्रन्थ होते है द्वारम्।

(६) प्रति सेवना—सामा० छदो० मूलगुण (पांच महाव्रत) प्रति सेवी (दोष लगावे) उत्तर गुण (पंढ विशुद्धादि) प्रतिसेवीतथा अप्रति सेवी होते है द्वारम्।

(७) ज्ञान—प्रथमके च्यार संयममें क्रमशः च्यार ज्ञानकि भजना २–३–३–४ यथाख्यातमें पांच ज्ञानकि भजना ज्ञान पढ़ने अपेक्षा सामा० छदो० जघन्य अष्ट प्रवचन उ० १४ पूर्व पढे। परिहार० ज० नौवां पूर्वके तीसरी आचार वस्तु उ० नौ पूर्व सम्पूर्ण, सूक्ष्म० यथाख्यात ज० अष्ट प्रवचन उ० १४ पूर्व तथा सूत्र वितिरक्त हो इतिद्वारम्।

(८) तीर्थ—सामा० तीर्थमें हो, अतीर्थमें हो, तीर्थंकरोंके हो और प्रत्येक बुद्धियोंके होते है। छदो० परि० सूक्ष्म० तीर्थमें ही होते है यथाख्यात० सामायिक संयमवत् च्यारोंमें होते है इतिद्वारम्।

(९) लिंग–परिहार विशुद्धि द्रव्ये और भावें स्वलिंगी; शेष च्यार संयम द्रव्यापेक्षा स्वलिंगी अन्यलिंगी होते है। भावे स्वलिंगी होते इतिद्वारम्।

(१०) शरीर–सामा० छेदो० शरीर ३–४–५ होते है शेष तीन संयममें शरीर तीन होते है वह वैक्रय आहारीक नही करते है द्वारम्।

(११) क्षेत्र–जन्मापेक्षा सामा० सूक्ष्म संपराय, यथाख्यात, पन्दरा कर्म भूमिमें होते है। छदो० परि० पांच भरत पांच हार भरत एवं दश क्षेत्रोंमें होते है। साहारणपेक्षा परिहार० का साहारण नहीं होते है शेष च्यार संयम कर्मभूमि अकर्मभूमिमें भी मीलते है इतिद्वारम्।

(१२) काल–सामा० जन्मापेक्षा अवसर्पिणि कालमें ३-४-५ आरे जन्मे और ३–४–५ आरे प्रवृते। उत्सर्पिणि कालमें २–३–४ आरे जन्मे ३–४ आरे प्रवृते। नोसर्पिणि नोउत्सर्पिणि चोथे पलीभाग (महाविदहे)में होवे। साहारणापेक्षा अन्यपली भाग (३० अकर्मभूमि)में भी मील सके। एवं छेदो० परन्तु जन्म प्रवृतन तथा सर्पिणि उत्सर्पिणि विदेहक्षेत्रमें न हुवे, साहारणापेक्षा सब क्षेत्रोंमें मीले। परिहार० अवसर्पिणि कालमें ३–४ आरे जन्में प्रवृते उत्सर्पिणी कालमें २-३-४ आरे जन्मे ३-४ आरे प्रवृते। सूक्ष्म० यथाख्यात अवसर्पिणिकाले ३-४ आरे जन्मे ३-४ आरे प्रवृते। उत्सर्पिणिकालमें २-३-४ आरे जन्मे ३-४ आरे प्रवृते। नो सर्पिणिनो उत्सर्पिणि चोथापली भागमें भी मीले साहारणापेक्षा अन्य पली भागमें भी लाधे इति द्वारम्।

(१३) गतिद्वार यंत्रसे

संयमके नाम	गति		स्थिति	
	ज०	उ०	ज०	उ०
सामा० छदोप०	सौधर्म कल्प	अनुत्तर वै०	२ पल्यो०	३३ सागरो०
परिहार०	सौधर्म०	सहस्त्र	२ पल्यो०	१८ सागरो०
सुक्षम०	अनुत्तर वै०	अनुत्तर वै०	३१ साग०	३३ सा०
यथाख्या०	अनु०	अनु०	३१ सा०	३३ सा०

देवतावोंमें इन्द्र, सामानिक, तावत्रीसका, लोकपाल, और अहमेन्द्र यह पांच पद्वि है। सामा० छदो आराधि होतों पांचोसे एक पद्विवाला देव हो परिहार विशुद्ध प्रथमकि च्यार पद्विसे एक पद्वि घर हों। सुक्ष० यथा० अहमेन्द्रि पद्विधर हों। जघन्य विराधि होतों च्यार प्रकारके देवोंसे देव होवें। उत्कृष्ट विराधि होतों संसारमंडल। इतिद्वारम्।

(१४) संयमके स्थान—सामा० छेदो० परि० इनतीनों संयमके स्थान असंख्याते असंख्याते है। सुक्षम० अन्तर महुर्तके समय परिमाण असंख्याते स्थान है। यथाख्यानके संयमका स्थान एक ही है। जिस्की अल्पाबहुत्व।

(१) स्तोक यथाख्यात सं०के संयम स्थान।

(२) सुक्ष्म०के संयमस्थान असंख्यातागुने।

(३) परिहारके ,, ,,

(४) सामा० छेदो० सं०स्थ० तुल्य ,,

(१५) निकाशें=संयमके पर्यव एकेक संयमके पर्यव अनंते अनन्ते है। सामा० छेदो० परिहार० परस्पर तथा आपसमें षट्गुन हानिवृद्धि है तथा आपसमे तुल्य भी है। सूक्ष्म० यथाख्यातसे तीनों संयम अनन्तगुने न्यून है। सुक्ष्म० तीनोंसे अनन्तगुन अधिक है आपसमें षट्गुन हानि वृद्धि, यथाख्यातसे अनन्त गुन न्यून है। यथा० च्यारोंसे अनन्तगुन अधिक है। अपसमें तूल्य है। अल्पा बहुत्व।

(१) स्तोक सामा० छेदो०	जघन्य संयम पर्यव आपसमे तुल्य			
(२) परिहार०	ज० सं०	पर्यव	अनंतगुना	
(३) ,,	उत्कृष्ट०	,,	,,	
(४) सा० छे०	,,	,,	,,	
(५) सूक्ष०	ज०	,,	,,	
(६) ,,	उ०	,,	,,	
(७) यथा	ज०उ० आपसमे तुल्य	,,	,,	धारम्

(१६) योग-प्रथमके च्यार संयम संयोगि होते है, यथाख्यात० संयोगि अयोगि भी होते है।

(१७) उपयोग-सुक्ष्म० साकारोपयोगवाले, शेष च्यार संयम साकार अनाकार दोनों उपयोगवाले होते है।

(१८) कषाय-प्रथमके तीनसंयम संज्वलनके चोकमें होता है।

सुक्ष्म० संज्वलनके लोभमें और यथाख्यात० उपशान्त कषाय और क्षिण कषायमें भी होता है।

(१९) लेश्या–सामा० छेदो० में छेओं लेश्या, परिहार० तेजो पद्म शुक्ल तीनलेश्या, सुक्ष्म० एक शुक्ल, यथाख्यात० एक शुक्ल तथा अलेशी भी होते हैं।

(२०) परिणाम–सामा० छेदो० परिहार० में हियमान० वृद्धमान और अवस्थित यह तीनों परिणाम होते हैं। जिस्में हियमान वृद्धमानकि स्थिति ज० एक समय उ० अन्तर महुर्त और अवस्थितकि ज० एक समय उ० सात समय०। सुक्ष्म० परिणाम दोय हियमान वृद्धमान कारण श्रेणि चढते या पढते जीव वहां रहेते है उन्होंकि स्थिति ज० उ० अन्तर महुर्तकि है। यथाख्यात० परिणाम वृद्धमान, अवस्थित जिस्में वृद्धमानकि स्थिति ज० उ० अन्तर महुर्त और अवस्थितकि ज० एक समय उ० देशोनाक्रोड पूर्व (केवलीकि अपेक्षा) द्वारम्।

(२१) बन्ध–सामा० छदो० परि० सात तथा आठ कर्म बन्धे सात बन्धे तो आयुष्य नहीं बन्धे। सुक्ष्म० आयुष्य० मोहनिय कर्म वर्जके छे कर्म बन्धे। यथाख्यात० एक साता वेदनिय बन्धे तथा अबन्ध।

(२२) वेदे–प्रथमके च्यार संयम आठों कर्म वेदे। यथाख्यात० सात (मोहनिय वर्जके) कर्म वेदे तथा च्यार अघातीया कर्म वेद।

(२३) उदिरणा–सामा० छदो० परि० ७–८–६ कर्म

उदिरे० सातमें आयुष्य और छे में आयुष्य मोहनीय वर्जके। सुक्ष्म० ५–६ कर्म उदिरे पांचमें आयुष्य मोहनिय वेदनिय वर्जके। यथाख्या० ५–२ दोय नाम गौत्र कर्मकि उदिरणा करे तथा अनुदिरणा भी है।

(२४) उवसंपज्ञांण–सामा० सामायिक संयमकों छोडे तो० छदोपस्थापनिय सुक्षम संपराय संयमासंयमि (श्रावक) तथा असंयममें जावे। छदो० छदोपस्थापनियकों छोडे तो० सामा० परि० सुक्ष्म० असंयम, संयमासंयममें जावे। परि० परिहार विशुद्धकों छोडे तो छदो० असंयम दो स्थानमें जावे। सुक्ष्म० सुक्ष्मसंपरा-छोडे तो सामा० छदो० यथा० असयममें जावे। यथा० यथाख्यातकों छोडके सुक्ष्म० असंयम और मोक्षमें जावे सर्व स्थान असंयम कहा है वह संयममें कालकर देवतावों मेंजाते है उस अपेक्षा समझना इतिद्वारम्।

(२५) संज्ञा–सामा० छदो० परि० च्यारों संज्ञावाले होते है तथा संज्ञा रहित भी होते है शेष दोनों नो संज्ञा है।

(२६) आहार=नयमके च्यार संयम आहारीक है यथाख्यात स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक (चौदवागुण०)

(२७) भव=सामा० छदो० परि० जघन्य एक उत्कृष्ट ८ भव करे अर्थात् सात देवके और आठ मनुष्यके एवं १५ भव कर मोक्ष जावे सूक्षम ज० एक उ० तीन भव करे। यक्ष० ज० एक उ० तीन तथा उसी भवमें मोक्ष जावे।

(२८) आगरेस=संयम कितनीवार आते हैं ।

संयम नाम	एकमश पेक्षा		बहुतमशापेक्षा	
	ज०	उ०	ज०	उ०
सामायिक०	१	प्रत्येक सौवार	२	प्रत्येक हजारवार
छेदो०	१	प्रत्येक सौवार	२	साधिक नौसोवार
परिहार०	१	३ तीनवार	२	साधिक नौसोवार
सूक्ष्म०	१	च्यारवार	२	नौ वार
यथाख्यात	१	दोयवा	२	९ वार

(२९) स्थिति–संयम कितने काल रहे ।

संयम नाम	एकजीवापेक्षा		बहुत जीवापेक्षा	
	ज०	उ०	ज०	उ०
सामा०	एक समय	देशोनक्रोड पूर्व	सास्वते	सास्वते
छेदो०	,,	,,	२५० वर्ष	५० क्रो० सा०
परिहार०	,,	२९वर्षोनाक्रो.	दे. दोसोवर्ष	देशोना क्रोड पूर्व
सुक्ष्म०	,,	अन्तरमहूर्त	अन्तरमहूर्त	अन्तर महूर्त
यथा०	,,	देशोनाक्रोडपूर्व	सास्वते	सास्वते

(३०) अन्तर–एक जीवापेक्षा पांचों संयमका अन्तर ज० अन्तर महुर्त उ० देशोना आदा पुद्गलपावर्तन बहुत जीवापेक्षा सा० यथा० के अन्तर नहीं है । छेदो० ज० ६३००० वर्ष परि-हार० ज० ८४००० वर्ष उत्कृष्ट अठारा क्रोडाक्रोड सागरोपम देशोना । सुक्ष्म० ज० एक समय उ० छेमास ।

(३१) समुद्घात—सामा० छदो० में केवली समु० वर्जके छे समु० पावे० परिहार० तीन क्रमःपर सुक्ष० समु० नहीं० यथा० एक केवली समुद्घात।

(३२) क्षेत्र० च्यार संयम लौकके असंख्यातमें भागमें होवे। यथा० लौकके असंख्यात भागमें होवे तथा सर्व लौकमें (केवली समु० अपेक्षा)।

(३३) स्पर्शना—जेसे क्षत्र है वेसे स्पर्शना भी होती है परन्तु यथाख्यातापेक्षा कुच्छ स्पर्शना अधिक भी होती है।

(३४) भाव—प्रथमके च्यार संयम क्षयोपशम भावमें होते है और यथाख्यात। उपशम तथा क्षायक भावमें भी होता है।

(३५) परिमाण द्वार—सामा० वर्तमानापेक्षा स्यात् मीले स्यात् न मीले अगर मीलेतों ज० १—२—३ उ० प्रत्येक हजार मीले। पूर्व तमापर्यायापेक्षा नियम प्रत्यक हजार कोड मीले (एवं छदो० वर्तमाना पेक्षा मीले तों १-२-३ प्रत्येक सौ मीले। पूर्व पर्यायापेक्षा अगर मीलेतों ज० उ० प्रत्यक सौ कोड मीले। परिहार० वर्तमान अगर मीलेतों १-२-३ प्रत्येक सौ। पूर्व पर्याय मीलेतों १—२—३ प्रत्यक हजार मीले। सुक्षम० वर्तमानापेक्षा मीलेतों १—२—३ उ० १६२ मीले जिसमें १०८ क्षपक श्रेणि और ५४ उपशम श्रेणि चढते हुवे पूर्व पर्यायपेक्षा मीलेतों १-२-३ उ० प्रत्येक सौ मीले। यथा० वर्तमान अगर मीले तों १-२-३ उ० १६२। पूर्व पर्यायापेक्षा नियमा प्रत्येक सौ कोड मीले (केवली कि अपेक्षा।)

(३६) अल्पा बहुत्व।

(१) स्तोक सूक्ष्म संपराय संयमवाले ।
(२) परिहार विशुद्ध संयमवाले संख्याते गुने ।
(३) यथाख्यात संयमवाले संख्यातगुने ।
(४) छदोपस्थातिय संयमवाले संख्यात गुने ।
(५) सामायिक संयमवाले संख्यात गुने ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेवसच्चम् ।

थोकडा नंबर ७

सूत्र श्री भगवतीजी शतक २५ उद्देशा ८

(प्र) हे भगवान् मनुष्य तीर्यचसे मरके नरकमें उत्पन्न होनेवाला जीव नरकमें कीस तरेहसे उत्पन्न होता है ।

(उ) हे गौत्तम—जेसे कोइ मनुष्य सथवाडासे भ्रष्ट हुवा पुनः उस सथवाडाकों मीलनेकि अभिलापा करता हुवा, एसा ही अध्यवसायका तीव्र निमत योगोके करणसे आतुरतासे चलता हुवा पीछले स्थानका त्याग कर आगेके स्थानकि अभिलाषा करता हुवा उस सथवाडासे मील के उसे स्वीकार कर विचरता है। इसी माफाक जीव मनुष्य तथा तीर्यचके आयुष्य दलकों क्षयकर शरीर त्यागकर परगतिमें गमन करते है उस समय वह दो वेगसे अध्यवसायोंका निमत्त कारमण योगकि आतुरतासे शीघ्रता पूर्व चलता हुवा नरकके उत्पती स्थानकों स्वीकार कर विचरता है ।

(प्र) हे भगवान् जेसे कोइ युवक पुरुष विज्ञानवन्त हाथकि बाहु पसारे संकोच करे हाथकि मुठी खोले, बंध करे, आंखकोमीचे खोले, इतनी देर नरकमें उत्पन्न होते मीवकों लागे ।

(उ) नहीं गौतमी नारकिकों नरकमें उत्पन्न होनेमें १–२–३ समय लगता है ।

(प्र) परभवको आयुष्य कीस कारणसे बान्धता है ।

(उ) अध्यवसायोंके निमित कारण हेतु और योगोंकि प्रेरणासे जीव परभवका आयुष्य बान्धता है ।

(प्र) यह जीव गतिकी प्रवृति क्यों करता है ।

(उ) पूर्व भवमें जीस जीवोंने–

(१) भवक्षय=मनुष्य तथा तीर्यंचका भव

(२) स्थितिक्षय=जीवन पर्यंत स्थिति

(४) आयुष्यक्षय=परभवसे गति प्रारंभ समयसे अगर विग्रह गति भी करी हो तों उस आयुष्यमें गीनी जाती है इस तीनोंका क्षय होनेसे जीव परभव संबंधी गतिके अन्दर प्रवृति करता है।

(प्र) जीव नरकमें उत्पन्न होता है । वह अपने आत्म ऋद्धि (अनुपूर्वादि) से या पर ऋद्धिसे नरकमें उत्पन्न होता है।

(उ) स्वात्माकि ऋद्धिसे उत्पन्न होता है । एवं अपने कर्मोंसे अपने प्रयोगोंसे नरकमें उत्पन्न होता है ।

जेसे नरकाधिकार कहा है इसी माफीक २४ दंडक परन्तु एकेन्द्रियमें गतिके समय १–२–३–४ समझना । इति २५–८

(२) इसी माफीक भव सिद्धि जीवाका २५–९

(३) ,, ,, अभव्य ,, ,, २५–१०

(४) ,, ,, सम्यग्द्रष्टी ,, २५–११

(५) ,, ,, मिथ्याद्रोष्टी ,, २५–१२

सेवं भंते सेवं भंते तमेवसच्चम् ।

थोकडा नम्बर ८

श्री भगवती सूत्र शतक ३१

(खुल्लक युम्मा)

आगेके शतकोंमें महायुम्मा बतलाये जावेंगे। उस महायुम्माकि अपेक्षा यह लघु युम्मा है।

(प्र) हे भगवान्! खुल्लक (लघु) युम्मा कितने प्रकारके है।।

(उ) हे गौतम! लघु युम्मा च्यार प्रकारके है–यथा–कडयुम्मा तेउगायुम्मा दावरयुम्मा कल्युगा युम्मा।

(१) कडयुम्मा–जीस रासीके अन्दरसे च्यार च्यार गीनने पर शेष च्यार रूप रहे जाते हो उसे कडयुम्मा कहते है (२) शेष तीन रह जाते हो उसे तेउगायुम्मा (३) शेष दोय रूप रह जानेसे दावर युम्मा (४) शेष एक रूप रह जानेसे कल्युगा युम्मा कहते है।

(प्र०) खुल्लक कडयुम्मा नारकी कहांसे आयके उत्पन्न होते है (उ) पांच संज्ञी पांच असंज्ञी तीर्यंच तथा संख्याते वर्षके संज्ञी मनुष्य एवं ११ स्थानोंसे आके उत्पन्न होते है।

(प्र) एक समयमें कितने जीव उत्पन्न होते है।

(उ) ४–८–१२–१६ एवं च्यार च्यार अधिक गीनने यावत् संख्याते असंख्याते जीव नारकिमें उत्पन्न होते है।

(प्र) वह जीव कीस रीतिसे उत्पन्न होते है?

(उ) थोकडा नं० ७ में लिखा माफिक यावत् अध्यवसायके निमत्त योगोंका कारणसे शीघ्रता पूर्वक अपनी रूद्धि, कर्म,

प्रयोगसे उत्पन्न होते है। इसी माफीक सातों नरके समझना परन्तु आगतिको स्थान इस माफ की है।

(१) रत्नप्रभाके आगतिके स्थान ११ है
(२) शार्कर प्रभाके ,, ,, ६ असंज्ञी तीर्यंच वर्जे
(३) वालुका प्रभाके ,, ,, ५ भुजपर वर्जे
(४) पङ्कप्रभाके ,, ,, ४ खेचर वर्जे
(५) धूम्रप्रभाके ,, ,, ३ स्थलचर वर्जे
(६) तमप्रभाके ,, ,, २ उरपुर वर्जे
(७) तमतमाके ,, ,, २ पूर्ववत् स्त्रि वर्जे

एवं तेयुगा युम्मा परन्तु परिमाण ३–७–११–१५ सं० अ०
एवं दावर युम्मा ,, ,, २–६–१०–१४ ,, ,,
एवं कलउगा ,, ,, ,, १–५–९–१३ ,, ,,

यह ओघ (सामान्य) सूत्र हुवा अब विशेष कहते है कि कृष्णलेशी नारकी पांचवी, छठी, सातवी, पूर्वोक्त च्यार युम्म तीनों नरकपर लगा देना एवं निललेशी परन्तु नरक, तीनी चोथी और पांचवी शेष ओघवत एवं कापोत लेशी परन्तु नरक पहली दूसरी तीसरी शेष ओघवत एक समुच्चय और तीन लेश्याके तीन एवं च्यार उदेशा हुवे इस्को ओघ उदेशा कहते है इति च्यार उदेशा।

४ एवं भव्य सिद्धि जीवोंका भी लेश्या संयुक्त च्यार उदेशा। एवं अभव्य जीवोंका भी लेश्या संयुक्त च्यार उदेशा। एवं सम्यग्द्रष्टी जीवोंका भी लेश्या संयुक्त च्यार उदेशा, परन्तु कृष्णा लेश्या धिकारे सातवी नरकमें सम्यग्द्रष्टी जीवोंकि उत्पात निषेद है।

एवं मिथ्यादृष्टी जीवोंका लेश्या संयुक्त च्यार उदेशा एवं कृष्ण पक्षी जीवोंका लेश्या संयुक्त च्यार उदेशा। एवं शुक्र पक्षी जीवोंका लेश्या संयुक्त च्यार उदेशा। एवं सर्व मीलानेसे २८ उदेशा होते है। इति

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर ९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३२ वां

(उदेशा अठावीस)

खुल्लक युम्मा च्यार प्रकारके है। कडयुम्मा, तेउगायुम्मा दावर युम्मा, कलउगा युम्मा परिमाण संज्ञा पूर्ववत्।

(प्र) खुल्लक युम्मा नारकि अन्तरे रहित निकलके कितने स्थानोंमें उत्पन्न होते है ? (उ) पांच संज्ञी तीर्यंच और एक संख्याते वर्षवाले कर्मभूमि मनुष्यमें उत्पन्न होते है। परिमाण एक समय ४-८-१२-१६ यावत संख्याते असंख्याते निकलते है। अध्यव सायके निमत योगोंका कारण पूर्ववत्। स्वकर्म ऋद्धि और प्रयोगसे निकलते है। एवं शार्कराप्रभा वालुकाप्रभा पङ्कप्रभा धूम प्रभा तमप्रभा समझना इस छे जो नरकके निकले हुवे जीव पूर्वो छे छे स्थानमें जाते है और सातवी नरकसे निकले हुवे मनुष्य नहीं होते है केवल पांच प्रकारके तीर्यंचमें ही उत्पन्न होते है शेष अधिकार पूर्ववत् समझना।

एवं तेउगा दावर युम्मा कलउगा परिमाण पूर्ववत् कहने शतक ३१ वा माफीक।

यह ओघ उद्देशा हुवा इसी माफीक कृष्ण लेश्याका उदेशा एवं निल लेश्याका उदेशा, एवं कापोत लेश्याका उदेशा यह च्यार उदेशाको शास्त्रकारोंने ओघ उदेशा कहा है ।

एवं च्यार उदेशा भव सिद्धि जीवोंका ।

" " " अभव सिद्धि जीवोंका

" " " सम्यग्द्रष्टी जीवोंका, परन्तु कृष्ण लेश्याके उदेशे सातवीं नरकसे सम्यग्द्रष्टी जीव नहीं निकलते है ।

एवं च्यार उदेशा मिथ्याद्रष्टी जीवोंका

" " " कृष्ण पक्षी जीवोंका

" " " शुक्ल पक्षी जीवोंका

एवं सर्व मीलके २८ उदेशा

जेसे ३१ वां, शतकमें उत्पन्न होनेके २८ उद्देशा कहा था इसी माफीक इस ३२ वां शतकमें २८ उद्देशा नरकसे निकलनेका कहा है ।

सर्वज्ञ भगवानने अपने केवल ज्ञानसे नारकिको कृतयुम्मा आदिसे उत्पन्न होते हुवे कों देखा है एसी परूपना करी है एक कडयुम्मा आदि युम्मा पणे अपना जीव अनन्तीवार उत्पन्न हुवा है इस समय सम्यक् ज्ञान आराधन करलेनेसे फोरसे उस स्थानमें इस युम्मा द्वार उत्पन्न ही न होना पडे एसी प्रज्ञा इस थोकडाके अन्दर सदैव रखनी चाहिये इति ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकड़ा नम्बर १०

श्री भगवतीजी सूत्र शतक ३३वां

(एकेन्द्रिय शतक)

(प्र) हे भगवान् ! एकेन्द्रिय कितने प्रकारके है ।

(उ) हे गौतम ! एकेन्द्रिय वीस प्रकारके है यथा पृथ्वीकाय सूक्ष्म; बादर, एकेकके पर्याप्ता, अपर्याप्त, एवं अपकायके च्यार तेउकायके च्यार, वायुकायके च्यार, बनास्पतिकायके च्यार सर्व २० भेद होते है ।

(प्र) वीस भेदसे प्रत्येक भेदके कर्म प्रकृति (सतारूप) कितनी है ।

(उ) प्रत्येक भेदवाले जीवोंके कर्म प्रकृति आठ आठ है यथा ज्ञानावर्णिय, दर्शनावर्णिय, वेदनिय, मोहनिय, आयुष्य, नाम, गौत्र और अन्तराय कर्म ।

(प्र) प्रत्येक भेदवाले जीवोंके कितने कर्मोका बन्ध है ।

(उ) सात कर्म (आयुष्य वर्जके) तथा आठ कर्म बांधे ।

(प्र) कितनी कर्म प्रकृतिको वेदे ।

(उ) आठ कर्म तथा श्रोतेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घाणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, पुरुष वेद, स्त्री वेद, इस १४ प्रकृतिको वेदते है । च्यार इन्द्रिय और दोय वेद एकेन्द्रियके न होनेसे इस बातका दुःख वेदते है यह बात अध्यावसायापेक्षा है केवली केवल ज्ञानसे देखा है ।

इति ३३वां शतकका प्रथम उद्देसा समाप्त ।

(प्र) अनान्तर उत्पन्न हुवे एकेन्द्रिय कितने प्रकारके है ।

(३) पृथ्व्यादि पांच सूक्ष्म पांच बादर एवं दशोंका अपर्याप्ता कारण अनान्तर अर्थात प्रथम समयके उत्पन्न जीवोंमें पर्याप्ता नहीं होते है इस लिये यहां दश भेद गीना गया है ।

इस दश प्रकारके जीवोंके आठ कर्मोंकि सत्ता है बन्ध सात कर्मका है क्योंकि अनान्तर समयके जीव आयुष्य कर्म नहीं बान्धते है और पूर्वोक्त चौदा प्रकृतिकों वेदते है । भावना पूर्ववत इति ३१ वां शतकका दुसरा उदेशा हुवा ।

(३) परम्पर उदेशो– परम्पर उत्पन्न हुवा एकेन्द्रियका २० भेद है जिस्के आठों कर्मोंकि सता, सात आठ कर्मोंका बन्ध चौदा प्रकृति वेदे इति ३२–२ ।

(४) अनान्तर अवगाह्या एकेन्द्रिय पृथ्व्यादि पांच सुक्ष्म पांच बादरके अपर्यप्ता एवं १० प्रकारके है सत्ता आठ कर्मोंकि बन्ध सात कर्मोंका चौदा प्रकृति वेदे इति ३२–४ ।

(५) परम्पर अवगह्या एकेन्द्रियके वीस भेद है सत्ता आठ कर्मोंकि, बन्ध सात आठ कर्मोका चौदा प्रकृति वेदते है । ३२-५

(६) अनान्तर आहारिक उदेशा दुसरे उदेसाके माफक ३२-६
(७) परम्पर आहारीक ,, तीसरा ,, ,, ३२–७
(८) अनान्तर पर्याप्ता ,, दुसरे ,, ,, ३२–८
(९) परम्पर पर्याप्ता ,, तीसरे ,, ,, ३२–९
(१०) चरम उदेशा दुसरे ,, ,, ३२-१०
(११) अचरम उदेशा दुसरे ,, ,, ३२-११

इस ग्यारा उदेशावोंमें च्यार उदेशा २–४–६–८वांमें सात

आठ कर्मोकी, बन्ध सात कर्मोका, कारण अनान्तर समयवालोंके आयुष्यका बन्ध नहीं होता है। चौद प्रकृति वेदते है, शेष सात उदेशावोंमें, आठ कर्मोकी सत्ता। सात तथा आठ कर्मोका बन्ध और चौदा प्रकृति वेदते है भावना प्रथमोदेशाकि माफीक इति ३३वां शतकका प्रथम अन्तर शतक समाप्तम्।

(२) कृष्णलेशी शतकके भी ११ उदेशा जिस्में २-४-६-८वां उदेशामें दश दश भेद जीसके आठ कर्मोकी सत्ता. सात कर्मोका बन्ध. चौदा प्रकृति वेद और शेष सात उदेशोंके वीस वीस भेद जिस्में आठ कर्मोकि सत्ता, ७ सात तथा आठ कर्मोका बन्ध, चौदा प्रकृति वेद इति ३३-२।

(३) एवं निललेशीका इग्यारा उदेशा संयुक्त ३३-३

(४) एवं कापोतलेशीका इग्यारा उदेशा संयुक्त ३३-४

यह लेश्या संयुक्त च्यार अन्तर शतक समुच्चय काहा है इसी माफीक लेश्या संयुक्त च्यार शतक भव्य जीवोंका और च्यार शतक अभव्य जीवोंका भी समझना परन्तु अभव्य शतकमें प्रत्येक शतक उदेशा नौ नौ कहना कारण चरम अचरम उदेशा अभव्यमें नहीं होता है सर्व बारहा अन्तर शतकके १२४ उदेशा है जिस्में ४८ उदेशा अनान्तर समयके है जिस्में एकेन्द्रिय के दश दश भेद अपर्याप्ता होनेसे ४८-१०=४८० बोलोंमें आठ कर्मोकि सत्ता, सात कर्मोका बन्ध और चौदा प्रकृति वेदते है शेष ७६ उदेशमें एकेन्द्रियके वीस वीस भेद होनेसे १५२० बोलोंमें आठ कर्मोकि सत्ता. सात आठ कर्मोका बन्ध, चौद प्रकृति

वेदे इति ३३वां शतकके अन्तर शतक १२ और उदेशा १२४ इति तेतीसवा शतक समाप्त ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३४वां

(श्रेणिशतक)

इस आरापार संसारके अन्दर जीव अनादि कालसे एक स्थानसे दुसरे स्थानपर गमनागमन करते है एक स्थानसे दुसरे स्थानपर जानामें कितने समय लगते है यह इस थोकडा द्वारा बतलाया जायगा ।

(प्र) हे भगवान् । एकेन्द्रिय कितना प्रकारकि है ।

(उ) पृथ्व्यादि पांच स्थावर सूक्ष्म पांच स्थावर बादर इन्ह दशोंका पर्याप्ता अपर्याप्ता एवं एकेन्द्रियका २० भेद है ।

(१) रत्नप्रभा नरकके पूर्वका चरमान्तसे सुक्ष्म पृथ्वीकायके अपर्याप्ता जीव मरके, रत्नप्रभा नरकके पश्चमके चरमान्तमें सुक्ष्म पृथ्वीकायके अपर्याप्तापणे उत्पन्न होता है उसको रहस्तेमें १-२-३ समय लगता है, इसका कारण यह है कि शास्त्रकारोंने सात प्रकारकि श्रेणि बतलाइ है यथा=(१) ऋजुश्रेणि (समश्रेणि) (२) एको वङ्का (३) दोवङ्का (४) एक कोनावाली (५) दोयकोनावाली (६) चक्रवाल (७) अर्द्धचक्रवाल । जिस्में जीव ऋजुश्रेणि करते हुवेकों एक समय लागे एको वङ्का श्रेणी करनेसे दोय समया दो

वक्का श्रेणि कानेसे तीन समय लगता है। जहांपर तीन समय लागे वहां भावना सर्वत्र समझना।

(२) रत्नप्रभा नरकके पूर्वका चरमान्तसे सूक्ष्म पृथ्वीकायका अपर्याप्ता मरके, रत्नप्रभा नरकके पश्चमका चरमान्तमे सूक्ष्म पृथ्वी कायके पर्याप्तापणे उत्पन्न होनेमें १-२-३ समय रहस्तेमें लागे भावना पूर्ववत।

एवं रत्नप्रभा नरकका पूर्वके चरमान्तसे सूक्ष्म पृथ्वी कायको अपर्याप्त जीव मरके रत्नप्रभा के पश्चमके बादर तेउकायका पर्याप्ता अपर्याप्त वर्जके शेष १८ बोलपणे उत्पन्न होनेवालोंको १-२-३ समय रहस्तेमें लागे। रत्नप्रभा के पूर्वके चरमान्तके एक सूक्ष्म पृथ्वी कायका अपर्याप्ताका १८ स्थानोंमें उत्पात कही है इसी माफीक बदर तेउकायके पर्याप्ता अपर्याप्ता छोडके शेष १८ बोलोंका जीव, रत्नप्रभा नरकके पश्चमके चरमान्तके १८ बोलोपणे उत्पन्न हुवे जिस्कों रहस्तेमें १-२-३ समया लागे एवं बोल ३२४ हुवे।

रत्नप्रभा नरकका पूर्वके चरमान्तसे १८ बोलोंके जीव मनुष्य लोकके बादर तेउकायके पर्याप्ता अपर्याप्तपणे उत्पन्न हो उसके ३६ बोल तथा मनुष्य लोकके बादर तेउकायके पर्याप्त पर्याप्ता मरके रत्नप्रभाके पश्चमके चरमान्तमें १८ अठारा बोलपणे उत्पन्न हो जिसके ३६ बोल मनुष्य लोकके बादर तेउकायके पर्याप्ता अपर्याप्त मरके मनुष्य लोकके बादर तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता पणे उत्पन्न हुवे उसका च्यार बोल इस ७६ बोलमें रहस्ते चलते जीवोंको १-२-३ समय लागे एवं ३२४-७६ मीलाके ४०० बोल हुवे

रत्नप्रभा नरकके पूर्वके चरमान्तसे मरके पश्चमके चरमान्तमें उत्पन्न हुवे जीस्के ४०० भांगा कहा है इसी माफिक पश्चमके चरमान्तसे मरके पूर्वके चरमान्तमें उत्पन्न हुवे जीस्के भी ४०० भांगा। एवं दक्षिणके चरमान्तसे मरके उत्तरके चरमान्तमें उत्पन्न हुवे जीसके ४०० भांगा। उत्तरके चरमान्तसे मरके दक्षिणके चरमान्तमें उत्पन्न हुवे जीसका भी ४०० भांगा एवं च्यारों दिशावोंके १६०० भागे होते है। भावना पूर्ववत् समझना।

जेसे रत्नप्रभाके च्यारों दिशावोंका चरमान्तसे १६०० भाग किया है इसी माफीक शार्कर प्रभाका भी १६०० भागा करना परन्तु बादर तेउकायके जीव मनुष्य लोकसे मरके शार्कर प्रभाके चरमान्तमें उत्पन्न हुवे तथा शार्कर प्रभाके चरमान्तसे मरके मनुष्य लोकमें उत्पन्न हुवे जीसके रहस्तेमें २-३ समय लागे कारण शार्करप्रभा नरक अढाई राजके विस्तारवाली है वास्ते पहले समय समश्रेणिकर त्रसनालीमें आवेगा। दुसरे समय समश्रेणिकर मनुष्य लोकमें आवे अगर विग्रह करे तों तीन समय भी लागे शेषाधिकार रत्नप्रभावत समझना १६०० भागा शार्कर प्रभाका

एवं बालुका प्रभाका भी १६०० भांगा
एवं पङ्क प्रभाका भी १६०० भांगा
एवं धूमप्रभाका भी १६०० भांगा
एवं तमप्रभाका भी १६०० भांगा
एवं तमतमा प्रभाका भी १६०० भांगा

नोट सातों नरकके चरमान्तमें बादर तेउकायके पर्याप्ता अप-

र्याप्त नहीं है वास्ते मनुष्य लोकके बादर तेउकायके पर्याप्ता अप-र्याप्ताका गगनागमन ग्रहण किया है दुजो नारकसे सातवी नरकके चरमान्तसे मनुष्य लोकसे गमनागमनमें २–३–समय समझना शेष मागर्मे १–२–३ समय समझना सातों नरकके ११२०० भांगा होते है।

इस असंख्याते कोडोनकोड विस्तारवाला लोकके दोय विभाग है (१) त्रसनाली उचापणेमें चौदा राज गोल एकराज परिमाण जीस्में त्रस जीव तथा स्थावर जीव है (२) स्थावरनाली जो त्रसनालीके बाहार जहांतक अलोक नआवे वहांतक उसके अन्दर केवल स्थावर जीव है।

अधोलोकके स्थावर नालीसे सुक्ष्म पृथ्वी कायका अपर्याप्ता जीव मरके। उर्ध्व लोकके स्थावर नालीके सुक्ष्म पृथ्वी कायके अपर्याप्तापणे उत्पन्न हो उस्में रहस्ते चलतोंको स्यात ३ समया स्यात् ४ समया लागे कारण प्रथम समय स्थावर नालीसे त्रसनालीमें आवे दुसरे समय उर्ध्व लोकमें जावे तीसरे समय उर्ध्व लोकाके स्थावर नालीमें जाके उत्पन्न हुवे अगर विग्रह करे तो च्यार समय भी लग जाते है। एवं पहलेकि म.फीक अधोलोकि स्थावरनालीसे १८ बोलोका जीव मरके उर्ध्व लोकके स्थावर नालीमें अठारा बोलोमें उत्पन्न होतों ३–४ समय लगे, एवं ३२४ बोल हुवा। मनुष्य लोकके बादर तेउ उर्ध्व लोककि स्थावरनालीके १८ बोलो पणे उत्पन्न हुवे तो २–३ समय लागे कारण स्थावर नालीमें एक दफे ही आना पडे। एवं १८ बोलोंके जीव मनुष्य लोकके तेउकाय पणे उत्पन्न होनेमें पर्याप्ता अपर्याप्ताके ३६ बोल एवं ७२ तथा

मनुष्य लोकका बादर तेउ कायके पर्याप्ता पर्याप्ता मनुष्य लोकमें होतो १-२-३ समय लागे कुल पूर्ववत् ४०० भाग इसी माफीक उत्पन्न उर्ध्व लोकिक स्थावर नालीके जीव मरके अधोलोककि स्थावर नालीमें उत्पन्न हुवे जीस्का भी पूर्ववत ४०० भाग हुवे यहां तक ११२००-४००-४००-१२००० भाग हुवे ।

लोकके चरमान्तमें पांच सूक्ष्म स्थावरके पर्याप्ता अपर्याप्ता एवं १० तथा बादर वायुकायके पर्याप्ता अपर्याप्ता भीलाके १२ बोल पावे ।

लोकके पूर्वके चरमान्तरसे सूक्ष्म पृथ्वी कायका अपर्याप्त मरके लोकके पूर्वके चरमान्तमें सूक्ष्म पृथ्वी कायके अपर्याप्तपणे उत्पन्न होतो विग्रह गतिका १-२-३-४ समय लागे । कारण समश्रेणि एक समय, एक वक्र श्रेणि दो समय, दो वक्रा श्रेणि तीन समय (पूर्ववत) जो अधोलोकके पूर्वके चरमान्तसे प्रथम समय समश्रेणिकर त्रसनालीये आवे दुसरे समय उर्ध्वलोकमें जावे तीसरे समय उर्ध्वलोकके पूर्वके चरमान्तमे जावे परन्तु वह अलोकके प्रदेशो कि विषमता हो तों चोथे समय उत्पन्न स्थानपर जा उत्पन्न होवे वास्ते च्यार समय तक भी लागे। एवं बारहा बोलों पणे उत्पन्न हो तों १-२-३-४ समय लागे बोल १४४ हुवा ।

१४४	पूर्व	चरमान्तसे	पूर्वके	चरमान्तका वि०	१-२-३-४
,,	,,	,,	दक्षिण	,,	,,
,,	,,	,,	पश्चिम	,,	,,
,,	,,	,,	उत्तर	,,	,,
,,	दक्षि	चरमान्तसे	पूर्व	चरमान्तका	,,

१४४	,,	,,	,,	दक्षिण	,,	,,
१४४	,,	,,	,,	पश्चिम	,,	,,
१४४	,,	,,	,,	उत्तर	,,	,,
१४४	पश्चिम	,,	,,	पूर्व	,,	,,
१४४	,,	,,	,,	दक्षिण	,,	,,
१४४	,,	,,	,,	पश्चिम	,,	,,
१४४	,,	,,	,,	उत्तर	,,	,,
१४४	उत्तर	,,	,,	पूर्व	,,	,,
१४४	,,	,,	,,	दक्षिण	,,	,,
१४४	,,	,,	,,	पश्चिम	,,	,,
१४४	,,	,,	,,	उत्तर	,,	,,

एवं १४४ को १६ गुणा करनेसे २३०४ भांगा होते है तथा १२००० पूर्वके मीलानेसे यहांतक १४३०४ भांगा हुवे।

पांच स्थावरके १० भेदों कि समुद्घात उत्पात और स्थान देखो शीघ्रबोध भाग १२ वां स्थानपदके थोकडेमे देखो।

एकेन्द्रियके १० भेद है जिनके आठ कर्मो कि सत्ता, बन्ध सात आठ कर्मोका और चौदा प्रकृतिको वेदते है। एकेन्द्रिकि आगति ७४ स्थानकि है ४६ तीर्यच, तीन मनुष्य, पचवीस देवता एकेन्द्रियके च्यार समुद्घात क्रमःसर है।

एकेन्द्रिय च्यार प्रकारके है।

(१) समस्थिति सम कर्मवाले।

(२) समस्थिति विषम कर्मवाले।

(३) विषम स्थिति सम कर्मवाले।

(४) विषम स्थिति और विषय कर्मवाले ।

ऐसा होनेका क्या कारण है सो बतलाते है ।

(१) सम आयुष्य और साथमें उत्पन्न हुवा ।

(२) सम आयुष्य और विषम उत्पन्न हुवे ।

(३) विषम आयुष्य और साथमें उत्पन्न हुवा ।

(४) विषम आयुष्य और विषम उत्पन्न हुवा ।

इति चोवीसवा शतकका प्रथम उद्देशा समाप्तं ।

(२) अनन्तर उत्पन्न हुवा एकेन्द्रियके दश भेद है। पृथ्यादि पांच सुक्ष्मस्थावर पांच बादरस्थावर इन्ही दशोंके अपर्याप्ता है कारण प्रथम समयके उत्पन्न हुवेमे पर्याप्ता नही होते है । प्रथम समयके उत्पन्न हुवा मरके अन्य गतिमें भी नही जाते है ।

समुद्घात उत्पात और स्थानकों दाखे स्थानपद ।

दश भेदोंमे आठों कर्मकि सत्ता है । बन्ध आयुष्यवर्जके सात कर्मोंका है चौदा प्रकृति वेदते है । उत्पात ७४ स्थानसे समुद्घात दोय वेदनि कषाय । अनान्तरसमयके उत्पन्न हुवा एकेन्द्रिय दोय प्रकारके होते है (१) समस्थिति समकर्मवाला (२) समस्थिति विषम कर्मवाला । इति ३४—२

एवं अनान्तर अवगाह्या अनन्तर आहारिक और अनन्तर पर्याप्ता, यह च्यार उद्देशा सादश है ।

१४३०४ परम्पर उत्पन्न होनेका उद्देशो सदृच्चारत

१४३०४ परम्पर अवगाह्या " "

१४३०४ परम्पर आहारिक " "

१४३०४ परम्पर पर्याप्ता " "

१४३०४ चरम उदेशो ,, ,,

१४३०४ अचरम उदेशो ,, ,,

इस ओघ (समुचय) शतकके इग्यारा उदेशाके सर्व भांगा १००१२८ होते है इसी माफीक—

१००१२८ कृष्णलेशी शतकके ११ उदेशा

१००१२८ निललेशी शतकके ११ उदेशा

१००१२८ कापोतलेशी शतकके ११ उदेशा

१००१२८ समुचय भव्य संबन्धी ११ उदेशा

१००१२८ भव्य कृष्णलेशी शतक उदेशा ११

१००१२८ भव्य निललेशी ,, ,, ,,

१००१२८ भव्य कापोतलेशी ,, ,, ,,

अभव्य जीवोंका भी लेश्या संयुक्त च्यार शतक है परन्तु अभव्यमें चरम अचरम उदेशोंको छोड शेष प्रत्येक शतकके नौ नौ उदेशा कहना । जिस्मे च्यार उदेशा तो अनान्तर समयके होनेसे भांगा नही होते है शेष पांच उदेशावोंके प्रत्येक उदेशे १४३०४ भांगोंके हीसाबसे ७१५२० भांगे एक शतकके होते है एवं च्यार शतकके २८६०८० भांगे होते है ।

पहलेके आठ शतकके ८०१०२४ भांगा मीलानेसे १०८७१०४ भांगा श्रेणिशतकके होते है ।

इति चौतीसवां मूल शतकके बारहा अन्तर शतकका १२४ उदेशा ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेवसचम् ।

समाप्तं चौतीसवा शतक ।

थोकडा नम्बर १२.

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३५ वां

(महायुम्मा)

प्रथम ३१-३२ शतकमें खुल्लक=क्षुद्र युम्मा कहा था उसकि अपेक्षासे यहां महायुम्मा कहा है ।

(प्र०) हे भगवान् ! महायुम्मा कितने प्रकारके है ?

(उ०) हे गौतम ! महायुम्मा शोला प्रकारका है—यथा—

(१)	कडयुम्मा	कडयुम्मा	जेसे	१६—३२	सं०	असं०	अनं०
(२)	,,	तेउगा	,,	१९—३५	सं०	असं०	अ०
(३)	,,	दावरयुम्मा	,,	१८—३४	,,	,,	,,
(४)	,,	कलयुगा	,,	१७—३३	,,	,,	,,
(५)	तेउगा	कडयुम्मा	,,	१२—२८	,,	,,	,,
(६)	,,	तेउगा	,,	१५—३१	,,	,,	,,
(७)	,,	दावर०	,,	१४—३०	,,	,,	,,
(८)	,,	कलयुगा	,,	१३—२९	,,	,,	,,
(९)	दावर०	कडयुम्मा	,,	८—२४	,,	,,	,,
(१०)	,,	तेउगा	,,	११—२७	,,	,,	,,
(११)	,,	दावर०	,,	१०—२६	,,	,,	,,
(१२)	,,	कलयुगा	,,	९—२५	,,	,,	,,
(१३)	कलयुगा	कडयुम्मा	,,	४—२०	,,	,,	,,
(१४)	,,	तेउगा		७—२३	,,	,,	,,
(१५)	,,	दावर०		६—२२	,,	,,	,,
(१६)	,,	कलयुगा		५—२१	,,	,,	,,

जैसे एकेन्द्रियके अन्दर कुडयुम्मा कडयुम्मे उत्पन्न होते है वह एक समय १६-३२-४८-६४ एवं शोला शोला वृद्धि कारों यावत् संख्याते असंख्याते अनंते उत्पन्न होते है वह सब शोला शोलाके हिसाबसे उत्पन्न होते है इसी माफीक १६ युम्माके अंक रखा है इस्मे उपर शोला शोलाकि वृद्धि करना ।

इस शतकमें एकेन्द्रिय महायुम्मा शतकका अधिकार बतलाया है प्रत्येक युम्मोपर बत्तीस बत्तीस द्वार उतारे जावेगा ।

हे भगवान् कडयुम्मा कडयुम्मा एकेन्द्रिय कहांसे आके उत्पन्न होते है इसी माफीक अपने अपने द्वारके प्रथम कडयुम्मा कडयुम्मा एकेन्द्रिय सब द्वारोंके साथ बोलना ।

(१) उत्पात—७४ स्थानोंसे आके उत्पन्न होते है ।

(२) परिमाण—१६—३२—४८ संख्या० असं० अनन्ते ।

(३) अपहरण—प्रत्येक समय एकेक जीव निकाले तों अनन्ती सर्पिणि उत्सर्पिणि पूर्ण होजाय इतना जीव है ।

(४) अवगाहना—ज० अंगु० असं० भाग० उ० साधिक १००० जोजन ।

(५) बन्ध सातों कर्मोके बन्धवाले जीव बहुत और आयुष्य कर्मके बन्ध तथा अबन्धवाले भी बहुत है ।

(६) वेदे—आठों कर्मोके वेदनेवाला बहुत असाता तथा असाता वेदनेवाला भी बहुत है ।

(७) उदय—आठों कर्मके उदयवाला बहुत ।

(८) उदिरणा—छे कर्मोके उदिरणावाला बहुत आयुष्य और वेदनिय कर्मोके उदिरणावाले बहुत अनुदिरणावाले बहुत ।

(९) लेश्या—कृष्ण निल कापोत तेजोलश्यावाले बहुत ।

(१०) दृष्टी—मिथ्यादृष्टी जीव बहुत है ।

(११) ज्ञान नहीं, अज्ञानी जीव बहुत है ।

(१२) योग—कायाके योगवाले बहुत है ।

(१३) उपयोग—साकार अनाकार उप०वाले बहुत ।

(१४) वर्णादि—जीवापेक्षा वर्णादि• नहीं है, शरीरापेक्षा वर्णादि है।

(१५) उश्वासगा—उश्वास नि० नोउश्वा० नि० के बहुत है ।

(१६) आहार—आहारीक अनाहारीक बहुत है ।

(१७) व्रती—सर्व जीव अव्रती है ।

(१८) क्रिया—सर्व जीव सक्रिया है ।

(१९) बन्ध—सातकर्म बन्धनेवाले. बहुत आठ० बहुत है ।

(२०) संज्ञा—च्यारों संज्ञावाले बहुत बहुत है ।

(२१) कषाय—च्यारों कषायवाले " "

(२२) वेद—नपुंसक वेदवाले बहुत ।

(२३) बन्धक—तीनों वेदके बन्धक बहुत बहुत है ।

(२४) संज्ञी—सर्व जीव असंज्ञी है ।

(२५) इन्द्रिय—सर्व जीव इन्द्रिय सहित है ।

(२६) अनुबन्ध—ज० एक समय उ० अनन्तेकाल

---

१ तीर्यचके ४६ मनुष्यके ३ देवतोके २५ एवं ७४ देखो इकेन्द्रियकि आगति—

१ एक समय जीवकि स्थिति अनुबन्ध नही किन्तु महायुम्मा कि रास रेहने अपेक्षा हैं कारण जीव समय समय उत्पन्न होते है चवते भी है ।

(२७) संमट्ठो–देखो गमाका थोकडा पृथ्वी अधिकार।

(२८) आहार–व्याघातापेक्षा स्यात् ३–४–५ दिशा निर्व्याघातापेक्षा नियमा छेवों दिशाका आहार लेवे।

(२९) स्थिति–ज० एक समय (महा युग्मा रहेनेकि अपेक्षा) उत्कृष्ट २२००० वर्षकि

(३०) समुद्घात–प्रथमकि च्यारोंवाले बहुत २

(३१) मरण–समोहिय असमोहियके बहुत २

(३२) चवन–मरके ४९ स्थान ४६–३में जाते है।

(प्र०) हे भगवान्। सर्व प्राणभूत जीव सत्व कडयुम्मा कडयुम्मा एकेन्द्रियपणे पूर्वे उत्पन्न हुवा है।

(उ०) हे गौतम–एक वार नहीं किन्तु अनन्तीवार उत्पन्न हुवे है।

यह ३२ द्वार कडयुम्मा कडयुम्मापर उत्तारे गये हैं इसी माफीक १६–महायुम्मा पर उत्तार देना परन्तु परिमाण द्वारमें पूर्व वतलाये हुवे परिमाण कहना व हिशे इति ३५–१

(२) प्रथम समयके कडयुम्मा २ कि एकेन्द्री १

(उ०) प्रथम उद्देशा कि माफीक ३२ द्वार कहना परन्तु प्रथम समयके उत्पन्न हुवा जीवोंमें नाणन्ता दश है यथा।

(१) अवगाहाना ज० उ० अंगु० असं० भाग।

(२) आयुष्य कर्मका अबन्धक है

(३) आयुष्य कर्मके अनुदिरक है

(४) उश्वास निश्वासपणा नहीं है

(५) सात कर्मोका बन्धक है किन्तु आठका नही ।

(६) अनुबन्ध ज० उ० एक समयका है

(७) स्थिति ज० उत्त एक समय कि (रासी कि)

(८) समुद्घात—वेदनि और कपाय ।

(९) मरण—कोइ प्रकारका नही है

(१०) चवन—चवन हो अन्यस्थान नही जाते है ।

शेष द्वार पूर्ववत् एवं १६ महा युम्मा समझना इति ३५-२

(३) अप्रथम समयका उदेशा प्रथमवत् ३५—३

(४) चरम समय उदेशामें देवता नहीं आते है लेश्या तीन शेष ३२ द्वारसे शोला महायुम्मा प्रथम उ०वत् ३५-४

(५) अचरम उदेशो प्रथम उ०वत । ३५-५

(६) प्रथम प्रथम उदेशो दुसरा उ०वत ३५ ६

(७) प्रथम अप्रथम उदेशो दुसरा उ०वत ३५-७

(८) प्रथम चरम उदेशो दुसरा उदेशावत् ३५-८

(९) प्रथम अचरम उ० दुसरा उ०वत् ३५-९

(१०) चरम चरम उदेशो चोथा उदेशवत ३५-१०

(११) चरमा चरम उदेशो दुसरा उ०वत् ३५-११

इस इग्यारा उदेशोंमें १-३-५ यह तीन उदेशा सादश है शेष आठ उदेशा सादश है । चोथा आठवा दशवा उदेशे देवता सर्वत्र नहीं उपजे वास्ते लेश्या भी तीन हुवे शेषाधिकार प्रथमो दशा माफीक समझना इति इग्यारा उदेशा संयुक्त पैतीसवा शतकका प्रथम अन्तर शतक समाप्तम् । ३५-१-११

(२) दुसरा शतक कृष्ण लेशीका है वह प्रथम शतककि माफीक इग्यारा उदेशा कहना परन्तु नाणत्ता तीन है (१) लेश्या एक कृष्ण (२) अनुबन्ध ज० एक समय उ० अन्तर महुर्त (३) स्थिति ज० एक समय उ० अन्तर महुर्त शेष इग्यारा उदेशा प्रथम शतक माफीक परन्तु यहां देवता सर्वत्र नहीं उपजे। १-३-५ सादश शेष काठ उदेशा सादश है इति ३९-२

(३) एवं निल लेश्याका शतकके उदेशा ११

(४) एवं कापोत लेश्या शतकके उदेशा ११

इस्में लेश्या अपनि अपनि और स्थिति अनुबन्ध कृष्णकि माफीक इति पेतीसवां शतकका च्यार अन्तर शतक ४४ उदेशा हुवा।

जेसे ओघ शतक और तीन लेश्याका तीन शतक कहा है इसी माफीक भव्य सिद्धि जीवोंका भी च्यार शतक समझना परन्तु यहां सर्व जीवादि भव्य एकेन्द्रियपणे उत्पन्न नहीं हुवा है। कारण सर्व जीवोंमें अभव्य जीव भी सेमल है। शेषाधिकार पहलेके च्यार शतक सादश है इति ३९-८

जेसे भव्य सिद्धि जीवोंका लेश्या संयुक्त च्यार शतक कहा है इसी माफीक च्यार शतक अभव्य सिद्धि जीवोंका भी समझना इति ३९-१२-१३२ पेतीसवां शतकके अन्तर शतक बारहा उदेशा एक सौ बत्तीस समाप्तं।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम्।

थोकडा नंबर १३.

सुत्र श्री भगवती शतक ३६

(बेन्द्रिय महायुम्मा)

महायुम्मा १६ प्रकारके होते है परिमाण. पैतीसवे शतककि माफिक समाझना. कडयुम्मा कडयुम्मा बेन्द्रिय काहासे आके उत्पन्न होते है ? तीर्यचके ४६ और मनुष्यके ३ एवं ४९ स्थानोंसे आके बेन्द्रियमें उत्पन्न होते है यहां भी एकेंद्रियकि माफीक ३२ द्वार कहना चाहिये जीस द्वारमें फरक है वह यहांपर बता दिया जाता है।

(१) उत्पात–४९ स्थानकि है।

(२) परिमाण–१६–३२–४८ यावत् असंख्याते।

(३) अपहरनमें काळ यावत् असंख्याते।

(४) अवगाहाना उ० बारहा योजनकि। +++

(९) लेश्या–कृष्ण निळ कापोत।

(१०) दृष्टी दोय–सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी

(११) ज्ञान–दोयज्ञान दोयअज्ञान।

(१२) योग–दोय मनयोग वचनयोग +++

(२५) इन्द्रिय–दोय स्पर्शेन्द्रिय रसेंद्रिय।

(२६) अनुबंध–ज० एक समय उ० संख्याते काळ।

(२८) आहार=नियमा छेवो दिशा काले।

(२९) स्थिति ज० एक समय उ० बारहा वर्ष।

(३०) समुद्घात तीन वेदनिय, कषाय, मरणंति।

शेष १९ द्वार एकेंद्रिय महायुम्मावत समझना शेष १९ महायुम्मा भी इसी माफीक परन्तु परिमाण अपना अपना कहना इति ३६–१

(२) दुसरा प्रथम समयके उदेशामें नाणत्ता ११ है यथा—

(१) अवगाहाना ज० अंगु० असं० भाग।

(२) आयुष्य कर्मका अबन्धक है

(३) आयुष्यकर्म उदिरणा भी नही है

(४) उश्वास निश्वासगा भी नही है

(५) सात कर्मोका बन्धक है परन्तु आठका नही

(६) अनुबन्ध ज० उ० एक समयका

(७) स्थिति ज० उ० एक समयकि

(८) समुद्घात–दोय० वेदनिय कषाय

(९) योग–एक कायाका है

(१०) मरण नही (११) चवन नही है।

शेष २१ द्वार पूर्वोक्त ही समझना एवं १६ महायुम्मा इति ३६–२ इसी माफीक प्रथमादि सर्व ११ उदेशा होते है १–३–५ यह तीन उदेशा सादश है शेष ८ उदेशा सादश है परन्तु ४–६–८–१० इस च्यार उदेशेमें ज्ञान और समकित नही है। इति छतीसवा शतकका अन्तर शतकके इग्यारा उदेशा समाप्तम।

(२) इसीमाफीक कृष्णलेशी बेन्द्रियका इग्यारा उदेशा संयुक्त दुसरा अन्तर शतक है परन्तु लेश्या तीनके स्थान एक कृष्णा लेशा है. अनुबन्ध औरस्थिति ज० ऐकसमय उ० अन्तर

महुर्त है। कारण औदारीक शरीर धारीके लेश्या अन्तर महुर्तसे अधिक नही रहती है इति ३६-१-२२

(३) एवं निललेश्यावाले वेन्द्रियका शतक।

(४) एवं कापोतलेशी वेन्द्रियका अन्तर शतक।

इसी माफीक भव्य सिद्धि जीवोंका भी लेश्या संयुक्त च्यार शतक कहाना० सर्व जीवोंकि उत्पात एकेन्द्रिय महायुम्मा कि माफीक समझना-कारण सर्व जीव भव्यपणे उत्पन्न नही हुवा न होगा-सर्व जीवोंमें अभव्य जीव भी समेत है। अभव्य भव्यपणे न उत्पन्न हुवा न होगा।

इसी माफीक लेश्या संयुक्त च्यार शतक अभव्य सिद्धि जीवोंका भी समझना। इति छत्तीसवां मूल शतकके बारह अन्तर शतक प्रत्येक शतकके इग्यारा इग्यारा उद्देशा होनेसे १३२ उदेशा हुवा इति ३६ वा शतक समाप्तं।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नम्बर १४

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३७ वां

(तेन्द्रिय महायुम्मा)

जेसे वेन्द्रिय महायुम्मा शतकके १३१ उदेशा कहा है इसी माफीक तेन्द्रिय महा शतकके बारहा अन्तर शतक और प्रत्येक शतकके इग्यारा इग्यारा उदेशा कर सर्व १३२ कह देना परन्तु यहांपर।

(१) अवगाहाना ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उत्कृष्ट तीन गाउकि कहना।

(२) महायुम्मावोंकि स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्ट एकुण पचास अहोरात्रीकि कहना।

(३) इन्द्रिय तीन घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय कहना।

शेषाधिकार बेन्द्रियमहायुम्मा माफीक समझना इति ३७-१२-१३२ इति सेतीसवा शतक समाप्तम्

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम्।

थोकडा नंबर १५.

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३८ वां

(चौरिंद्रिय महायुम्मा)

जीस रीतिसे तेन्द्रिय महायुम्मा शतक कहा है इसी माफीक यह चौरिंद्रिय महायुम्मा शतक समझना। विशेष इतना है।

(१) अवगाहाना जघन्य अंगुलके असंख्यातमें भाग उत्कृष्ट च्यार गाउकि है।

(२) स्थिति-जघन्य एक समय, उत्कृष्ट छेमास

(३) इन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय।

शेषाधिकार तेन्द्रिय माफीक इति ३८-१२-१३२ इति अडतीसवां शतक समाप्तम्।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम्।

थोकडा नं० १६

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ३९ वां

(असंज्ञी पांचेन्द्रिय महायुम्मा)

जीस रीतसे चौरिन्द्रिय महायुम्मा शतक कहा है इसी माफीक यह असंज्ञो पांचेन्द्रिय महायुम्मा शतक समझना परन्तु (१) अव-गाहना ज० अंगुलके असंख्यातमें भाग उत्कृष्ट १००० योजनकि (२) इन्द्रिय पांचों है (३) अनुबन्ध जघन्य एक समय उ० प्रत्येक कोडपूर्वका (४) स्थिति ज० एक समय उ० कोडपूर्व क वर्षोकि (५) चवन ४९ स्थान पूर्ववत समझना। प्रत्येक अन्तर शतकके इग्यारा इग्यार उदेशा पूर्ववत् करनेसे बारहा अन्तर शतकके १३२ उदेशा हुवा। इति एकुनचालीसवा शतक समाप्तम्।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नम्बर १७

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ४० वां

(संज्ञी पांचेन्द्रिय महायुम्मा)

महायुम्मा १६ प्रकारके है परिमाण एकेन्द्रिय महायुम्मा शतकमें लिखा आये है। यहांपर कडयुम्मा कडयुम्मा संज्ञी पांचेन्द्रिय कहांसे आके उत्पन्न होते है तथा ३१ द्वार बतलाते है।

(१) उत्पात=सर्व स्थानोंसे आके उत्पन्न होते है।

(२) परिमाण—१६—३२—४८ यावत असंख्याते।

(३) अपहरण—यावत असंख्याति उत्सर्पिणि २

(४) बन्ध=वेदनिय कर्मके बन्धक बहुत० शेष सातों कर्मोका बन्धक भी घणा अबन्धक भी घणा ।

(५) उदय–सात कर्मोके उदयवाला घणा० मोहनिय कर्मके उदयवाले घणा तथा अनोदयवाला भी घणा ।

(६) उदिरणा,=नाम गौत्र कर्मोके उदिरक घणा, शेष छे कर्मोका उदिरक तथा अनुदिरक भी घणा ।

(७) वेदे–सात कर्मोका वेदका घणा, मोहनिय कर्मका वेदका अनवेदका भी घणा ।

(८) अवगाहाना उ० १००० जोजनकि ।

(९) लेश्या–कृष्ण यावत् शुक्ल लेश्यावाले भी घणा

(१०) द्रष्टी–सम्य० मिथ्य० मिश्र० ,,

(११) ज्ञान–ज्ञानी अज्ञानी दोनों भी ,,

(१२) योग–मन वचन कायवाले ,,

(१३) उपयोग–साकार अनाकारवाले ,,

(१४) वर्णादि–एकेन्द्रिय माफीक

(१५) उश्वासगा ,, ,,

(१६) आहार ,, ,,

(१७) व्रति=व्रति अव्रति व्रताव्रति ,,

(१८) क्रिया–सक्रिय घणा ,,

(१९) बन्ध ७–८–६–१ कर्मोंका बन्धने वाले ,,

(२०) संज्ञा, च्यारों संज्ञावाले तथा नो संज्ञा ,,

(२१) कषाय, च्यारों कषायवाले तथा अकषाय ,,

(२२) वेद=तीनोंवेद तथा अवेदी ,,

(२३) बन्धक,—तीनों वेदके बन्धक तथा अबन्धक भी

(२४) संज्ञी—असंज्ञी नहीं, संज्ञी बहुत है।

(२५ इन्द्रिय, अनेन्द्रिय नही सेन्द्रिह बहुत।

(२६) अनुबन्ध. ज०एकसमय उ प्रत्यक सौसागरोपम साधिक

(२७) संमहो—जेसे गमाजीके थोकडे लिखा है।

(२८) आहार नियमा छे दिशाका २८८ बोलका

(२९) स्थिति ज० एक समय उ० तेतीस सागरो०

(३०) समुद्घात केवली वर्जके छे वाले वणा।

(३१) मरण दोनों प्रकारसे मरे। स० अ०

(३२) चवन—चउके सर्व स्थानमें जावे।

(प्र) हे करूणा सिन्धु। सर्व प्राणभूतजी वसत्व कडयुम्मा कडयुम्मा संज्ञी पांचेन्द्रियपणे उत्पन्न हुवा है।

(उ) हे गौतम सर्व प्राणभूत जीव सत्व कड० कड० संज्ञी पांचेन्द्रियपणे पूर्वे एकवार नहीं किन्तु अनन्ती अनन्ती वार उत्पन्न हुवा है। कारण जीव अनादि कालसे संसारमें परिभ्रमण कर रहा है।

इसी माफीक शेष १५ महायुम्मा भी समझ लेना परन्तु परिमाण अपना अपना कहाना। इति ४० शतक प्रथम उदेशा।

(२) प्रथम समयके संज्ञी पांचेन्द्रिय कडयुम्मा कहासे उत्पन्न होते है इत्यादि ३२ द्वार।

(१) उत्पात—सर्वस्थानसे (२) परिमाण पूर्ववत (३) अपहारण पूर्ववत (४) अवगाहाना ज० उ० अंगुलके असंख्यातमें भाग

(५) बन्ध आयुष्य कर्मका अबन्ध शेष पूर्ववत् (६) वेदे आठों-कर्मोंका वेदक है (७) उदय आठों कर्मोंका (८) उदिरणा आयुष्य कर्मका अनुदिरक वेदनिय कर्मकि मजना शेष छे कर्मोंका उदिरक अनुदिरक । (९) लेश्या छेवों (१०) द्रष्टी दोय सम्य० मिथ्या० (११) ज्ञानाज्ञान दोनों (१२) योग–कायाको (१३) उपयोग दोनों (१४) वर्णादि, एकेन्द्रियवत । (१५) उश्वासग, नो उश्व० नो निश्वा० (१६) आहारीक (१७) अव्रती है (१८) क्रिया सक्रिय है (१९) बन्ध–सात बन्धगा (२०) संज्ञ=च्यारों (२१) कषाय=च्यारों (२२) वेद=तीनों (२३) बन्धक=अबन्धक (२४) संज्ञी है। (२५) इन्द्रिय=पेंद्रय है (२६) अनुबंध ज० उ० एक समय (२७) संभ हों गमावत (२८) आहार नियमा छे दिशाका (२९) स्थिति ज० उ० एक समय (३०) समुद्घात=शेष वेदनिय० कषाय० (३१) मरण नहीं (३२) चवन नहीं । एवं १६ महायुम्मा परन्तु परिमाण अपना अपना कहना. सर्व प्राणभूत जीव सत्व प्रथम समयके कड० कड० संज्ञा पांचेंद्रियपणे अनन्ती वार उत्पन्न हुवा है. भावना पूर्ववत इति ४०–२ समाप्तम् ।

(३) अप्रथम समयका उदेशा (४) चरम समयका उदेशा (५) अचरम समयका उदेशा (६) प्रथम प्रथम समयका उदेशा (७) प्रथम अप्रथम समयका उ० (८) प्रथम चरम समयका उ० (९) प्रथम अचरम समयका उ० (१०) चरम चरम समयका० (११) चरम अचरम समयका उदेशा. इन इग्यारा उदेशाओंमें पहला, तीसरा और पांचमा यह तीन उदेशा सादश है । शेष आठ उदेशा सादश हैं । इति चालीसवा शतकके इग्यारा उदेशोंसे प्रथम अन्तर शतक समाप्त हुवा ।

(२) कृष्ण लेश्याका दुसरा शतक महायुम्मा १६ प्रकारके है प्रथम कडयुम्मा कडयुम्मा परद्वार ।

(१) उत्पात. मनुष्य तीर्यंचसे तथा नारकी देवता पर्याप्ता कृष्ण लेशीसे आके सज्ञी पांचेन्द्रिय कड० कड० कृष्णलेशीये उत्पन्न होते हैं ।

(२) बन्ध, उदय, उदिरणा, वेदे, एकेन्द्रिवत्

(३) लेश्या–एक कृष्ण लेश्या

(४) बन्धक–सात आठ कर्मोंका बन्धक है

(५) सज्ञा, कषाय, वेद, वन्धक, एकेन्द्रियवत्

(६) अनुबन्ध. ज० एक समय उ० ३३ सागरोपम अन्तर महुर्त अधिक

(७) स्थिति–ज० एक समय उ० ३३ सागरो०

शेष १९ द्वार ओघ उदेशा माफीक समझना. एवं शेष १५ महायुम्मा भी केहना. एवं प्रथम समयादि ११ उदेशा ओघ शतकके माफीक नाणन्ते संयुक्त और १–३–५ यह तीन उदेशा सादृश शेष आठ उदेशा सादृश इति ४०–२–२१

(३) एवं निललेश्याका इग्यारा उदेशा संयुक्त तीसरा अन्तर शतक है परन्तु अनुबन्ध ज० एक समय, उ० दश सागरोपम पल्योपमके असंख्यात भाग अधिक एवं स्थिति भी समझना इति ४०–३–३३

(४) एवं कापोत लेश्याका इग्यारा उदेशा संयुक्त चौथा अन्तर शतक परन्तु अनुबन्ध ज० एक समय उ० तीन सागरोपम पल्योपमके असंख्यातमा भाग अधिक एवं स्थिति भी समझना इति ४०–४–४४

(५) एवं तेजो लेश्याका इग्यारा उदेशा संयुक्त पांचवा अन्तर शतक परन्तु अनुबन्ध उ० दोय सागरोपम पल्योपमके असंख्यातमे भाग अधिक. एवं स्थिति. किन्तु १-३-५ उदेशामें नो संज्ञा भी कहना कारण तेजोलेशी सातवे गुनस्थान भी है वहांपर संज्ञा नहीं है शेष पूर्ववत् इति ४०-५-५५।

(६) एवं पद्मलेश्याके इग्यारा उदेशा संयुक्त छटा अन्तर शतक है परन्तु अनुबन्ध ज० एक समय उ० दश सागरोपम अन्तर महुर्त साधिक. स्थिति दश सागरोपम शेष तेजो लेश्यावत् समझना इति ४०-६-६६

(७) शुक्ललेश्याके इग्यारा उदेशा संयुक्त सातवा अन्तर शतक ओघ शतककि माफक समझना परन्तु अनुबन्ध ज० एक समय उ० तेतीस सागरोपम अन्तर महुर्त साधिक स्थिति उ० तेतीस सागरोपमकि है इति ४०७-७७ इति। लेश्या संयुक्त सात शतक समुचयके हुवे।

नोट-उत्पात तथा चवनद्वारमें सर्वस्थानोंके जीवोंकि उत्पात तथा चवन कहा है वह अपने अपने लेश्यावोंके स्थानवाले नारकि देवता जीस जीस लेश्यामे उत्पन्न होते है और चवनमें भी जीस जीस लेश्यासे चवते है उस उस लेश्याके स्थानमें उत्पन्न होते है तात्पर्य यह हुवा कि नारकि देवतावोंमे अपनि अपनि लेश्याका ही सर्व स्थान समझना।

इसी माफीक भव्य जीवोंका भी लेश्या संयुक्त सात शतक कहाना. सर्व जीव उत्पन्नका उत्तरमें पूर्ववत् निषेद करना। इति ४८=१४=१५४।

अभव्य जीवोंका सात शतक भव्य जीवोंकि माफीक है परन्तु जो तफावत है सो बतलाते है ।

(१) उत्पात—पांचानुत्तर वैमान छोडके

(१०) दृष्टी एक मिथ्यात्वकी

(११) ज्ञान—ज्ञान नहीं अज्ञान है ।

(१७) व्रति—व्रति नहीं, अव्रति है ।

(२६) अनुन्ध उ० तेतीस सागरोपम (नरकापेक्षा) परन्तु शुक्ल लेश्या शतकमे उ०

(२९) स्थिति—उ० तेतीस सागरोपम शुक्ल लेश्याकि अनुवन्धवत्

(३०) समुद्घात—पांच क्रमःसर

(३१) सागरोपम—अन्तर महुर्त समझना ।

(९) लेश्या—कृष्णादि छेवों

(३२) चवन पांचानुत्तर वैमान छोड सर्वत्र

शेष सर्व द्वार असंज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रियकि माफीक समझना. सर्व जीव अभव्यपणे उत्पन्न नही हुवा है। १—३—५ एक गमा शेष आठ उदेशा एक गमा। इसी माफीक शोला महायुम्मा समझना । इति ।

(२) कृष्णलेशी शतकमें नाणन्ता तीन ।

(१) लेश्या एक कृष्ण लेश्या ।

(२) अनु० उ० तेतीस सागो० अन्तर० अधिक

(३) स्थिति उ० तेतीस सागरोपम ।

थोकड़ा नम्बर १८.

श्री भगवतीजी सूत्र शतक ४१ वां

(राशी जुम्मा)

(प्र) हे भगवान ! राशी जुम्मा कितने प्रकारके है ।

(उ०) हे गौतम ! राशी जुम्मा च्यार प्रकारके है । यथा राशी कडजुम्मा, राशी तेउगाजुम्मा, राशी दावरजुम्मा, राशी कलयुगाजुम्मा ।

(प्र०) हे भगवान् राशी कडजुम्मा यावत राशी कलयुगा कीसकों कहते है ।

(१) जीस राशीके अन्दरसे च्यार च्यार निकालने पर शेष च्यार रूप बदजावे उसे राशी कडजुम्मा कहते है (२) इसी माफीक शेष तीन वढ जानेसे राशी तेउगा (३) दोय वढ जानेसे राशी दावर जुम्मा (४) और एक वढ जानेसे राशी दावर जुम्मा कहा जाते है ।

(प्र) राशी युम्मा नारकी कहासे आके उत्पन्न होते है ?

(१) उत्पात—पांच संज्ञी तीर्यंच पांच असंज्ञी तीर्यंच तथा एक संख्यात वर्षका कर्म भूमि मनुष्य एवं ११ स्थानोंसे आके उत्पन्न होते है ।

(२) परिमाण-४-८-१२-१६ यावत संख्या० असंख्याते ।

(३) सान्तर—और निरान्तर ।

(१) सान्तर—उत्पन्न हो तों ज०एक समय उत्कृष्ट असंख्यात समय तक हुवा ही करे ।

(३) निरान्तर उत्पन्न होतों ज० दोय समय उ० असंख्यात समय उत्पन्न हुवा ही करे ।

(४) ज० समयद्वार-(१) जिस समय रासी कडयुम्मा है उस समय रासी तेउगा नहीं है । (२) जिस समय रासी तेउगा है उस समय रासी कडयुम्मा नहीं है (३) जिस समय रासी कडयुम्मा है उस समय रासी दावरयुम्मा नहीं है (४) जिस समय रासी दावरयुम्मा है उस समय कडयुम्मा नहीं है (५) जिस समय रासी कडयुम्मा है उस समय रासी कलयुग नहीं है (६) जिस समय रासी कलयुग है उस समय रासी कडयुम्मा नहीं है । अर्थात् च्यारो युम्मासे एक होगा उस समय शेषका निषेद है ।

(५) नारकिमें जीव कीस तरहसे उत्पन्न होता है (२९=८) सधवाडाका द्रष्टांतकी माफीक उत्पन्न होते है ।

(प्र) नारकीमें जीव उत्पन्न होते है वह आत्माके संयमसे या असंयमसे उत्पन्न होते है ।

(उ) आत्माका असंयमसे उत्पन्न होते है ।

(प्र) आत्माका संयमसे जीवे है या असंयमसे ।

(उ) असंयम-से जीवे है वह अलेशी नहीं परन्तु सलेशी है अक्रिया नहीं किंतु सक्रिया है ।

(प्र) सक्रिय नारकी उसी भवमें मोक्ष जावेगा ।

(उ) नहीं उसी भवमें मोक्ष नहीं जावे ।

इसी माफीक २४ दंडकोंकि पृच्छा और उत्तर है जिन्हें अन्दर जो नानन्ता है सो निचे बतलाते है ।

(१) वनास्पतिके उत्पात अनन्ता है ।

(२) अगतिके स्थान अपने अपने अगाति स्थानोंसे कहना देखो गत्यागतिका थोकडाकों ।

(३) मनुष्य दंडकमें उत्पन्न तो आत्माके असंयमसे होते है परन्तु उपजीवकाधिकारमें कोई संयमसे कोई असंयमसे करते है। जो आत्माके संयमसे मनुष्य जीवे है वह क्या सलेशी होते है या अलेशी होते है ? सलेशी अलेशी दोनों प्रकारसे होते है। जो अलेशी है वह नियमा अक्रिय है । जो अक्रिय है वह नियमा मोक्ष जावेगा ।

जो सलेशी है वह नियमा सक्रिय है । जो सक्रिय है वह कितनेक तो तद्भव मोक्ष जावेगा । और कितनेक तद्भव मोक्ष नहीं जावेगा ।

जो आत्माके असंयमसे जीवे है वह नियमा सलेशी है । जो सलेशी है वह नियमा सक्रिय है । जो सक्रिय है वह उस भवमे मोक्ष नहीं जावेगा । इति रासीयुम्मा नामका इगतालीसवा शतकका प्रथम उदेशा समाप्त । ४१–१

(२) एवं रासी तेउगा युम्माका उदेशा परन्तु परिमाण ३–७–११–१५ संख्याते असंख्याते ।

(३) एवं रासी दावर युम्माका उदेशा परन्तु परिमाण २–६–१०–१४ संख्याते असंख्याते ।

(४) एवं रासी कलयुगा उदेशा परन्तु परिमाण १–५–९–१३ संख्याते असंख्याते ।

इस च्यार उदेशोंकों ओघ (समुच्चय) उदेशा कहते है ।

इसी प्रकारसे च्यार उदेशा कृष्णलेश्याका है परन्तु यहां ज्योतीषी और वैमानिक वर्जके । बावीस दंडक है । नारकी देवतोंके जीतने स्थानमें कृष्ण लेश्या हो उन्हों कि आगति हो वह यथासंभव कहेना । विशेष इतना है कि मनुष्यके दंडकमे संयम, अलेशी, अक्रिया, तद्भवमोक्ष यह च्यार बोल नही कहेना कारण इस बोलोंका कृष्ण लेश्यामें अभाव है यहांपर भाव लेश्याकि अपेक्षा है । शेषाधिकारी 'ओघ' वत् इति ४१-८

(४) एवं च्यार उदेशा निललेश्याका अपना स्थान और अगति यथा संभव कहेना शेष कृष्णलेश्यावत् इति ४१-१२

(४) एवं कापोत लेश्याका भी च्यार उदेशा परन्तु आगति तथा लेश्याका स्थान याथासंभव केहना इति ४१-१६ ।

(४) एवं तेजो लेश्याका भी च्यार उदेशा परन्तु यहां दंडक १८ है नारकीमें तेजो लेश्या नहीं है, देवतावोंमें सौधर्मेशान देवलोक तक कहाना आगति अपनि अपनि समझना ।

(४) एवं पद्म लेश्याका भी च्यार उदेशा परन्तु दंडक तीन है पांचवा देवलोक तक और आगति अपनि अपनि कहेना इति ।

जैन सिद्धांत स्याद्वाद गंभिर शेलीवाले है जेसे छटे गुणस्थान लेश्या छे मानी गइ है यहांपर पद्म लेश्या तक संयम भी नहीं माना है । यह संभव होता है कि कृष्ण लेश्यामें संयम माना है वह व्यवहार नयकि अपेक्षा है और पद्म लेश्या तक संयम नहीं माना है वह निश्चय नयकि अपेक्षा है इस्में भि सामान्य विशेष पक्ष होना संभव है । तत्त्व केवलीगम्यं ।

(४) एवं शुक्ल लेश्याका भी च्यार उदेशा परन्तु दंडक तीन है मनुष्यके दंडकमें जेस समुच्चयमें विस्तार किया है संयम सलेशी अलेशी सक्रिय अक्रिय तद्भव मोक्ष जाना काहा है वह सर्व कहेना । इति च्यार उदेशा समुचय और छे लेश्याके चौवीस उदेशा सर्व २८ उदेशा होता है ।

२८ उदेशा ओघ (समुच्चय) लेश्या संयुक्त

२८ उदेशा भव्य सिद्धि जीवोंका पूर्ववत्

२८ उदेशा अभव्य सिद्धि जीवोंका परन्तु सर्व स्थान असंयम ही समझना

२८ उदेशा सम्यग्दृष्टी जीवोंका ओघवत्

२८ उदेशा मिथ्यात्वी जीवोंका अभव्यवत्

२८ उदेशा कृष्णपक्षी जीवोंका अभव्यवत

२८ उदेशा शुक्ल पक्षी जीवोंका ओघवत्

इति १९६ उदेशा हुवे इति एगतालीसवा शतक समाप्तम्

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नम्बर १९

श्री भगवती सूत्राकि समाप्ती ।

संप्रत समय प्रायः पैतालीस आगम माना जाते है जिस्मे पञ्चमाङ्ग भगवति सूत्र वडा ही महात्त्ववाला है। इस भगवती सूत्रमें

(१) मुनीन्द्र-इंद्रभूति अग्निभूति नग्रन्थपुत्र नारदपुत्र कालसवेसी गंगयाजी आदि मुनियोंके प्रश्नके उत्तर

(२) देवीन्द्र-शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र चमरेन्द्र और ४ सूरियाभ आदि देवोंके पुच्छे हुवे प्रश्नोंके उत्तर

(३) नरेन्द्र-उदाइ राजा, श्रेणक राजा, कोणक राजा, आदि राजावों के पुच्छे हुवे प्रश्नोंकि उत्तर

(४) श्रावकों-आनन्द, कामदेव, संख, पोखली, मंडुक, सुर्दशन और भी आलंभीया नगरीके, तुंगीया नगरीके श्रावकोंकि पुच्छे हुवे प्रश्नोका उत्तर।

(५) श्राविकावों-मृगावती जेयवन्ती सुलसा चेलना सेवानन्दा आदि श्राविकावोंके पुच्छा हुवा प्रश्नोंके उत्तर।

(६) अन्य तीर्थीयों-कालोदाइ सेलोदाइ संखोदाई शिवराज ऋषि पोगल नामका सेन्यासी तथा सौमल ब्रह्मण आदि अन्य तीर्थीयोंके पुच्छे हुवे प्रश्नोंका उत्तर।

इसके सिवाय इस आगमार्णवमें केवल गौतमस्वामिके पुच्छे हुवे ३६००० प्रश्नोका उत्तर भगवान वीर प्रभु दीया है।

इस सूत्र समुद्रसे अमूल्य रत्न ग्रहन करनेकि अभिलापावाले भव्य आत्मावोंके लिये शास्त्रकारोंने च्यार अनुयोगरूपी च्यार नौकावों बतलाये है जेसे कि-

(१) द्रव्यानुयोग-जिसमे जीव और कर्मोंका निर्णय षट्द्रव्य सात नय च्यार निक्षेपा सप्तभंगी अष्टपक्ष उत्सर्गोपवाद सामान्य विशेष अभीर भाव औभाव कारण कार्य द्रव्यगुणपर्याय द्रव्यक्षेत्र कालभाव इत्यादि स्याद्वाद शैलीसे वस्तुतत्त्वका ज्ञान होना उसे द्रव्यानुयोग्य कहते है।

(२) गणतानुयोग–जिस्में क्षेत्रका लम्बा पना चोड पना उर्ध्व अधो नदि द्रह पर्वत क्षेत्रका मान देवलोकके वैमान नारकोंके नरका वास तथा ज्योतीषी देवोंका वैमान ज्योतीषीयोंकि चाल ग्रह नक्षत्रका उदय अस्त समवक्र होना तथा वर्ग मूल घन आदि फला-वट इसकों गणतानुयोग कहते है।

(३) चरण करणानुयोग–जिस्में मुनिके पांच महाव्रत पांच समिति तीन गुप्तो दश प्रकार यति धर्म, सत्तरा प्रकारका संयम बारहा प्रकारका तप पचवीस प्रकारकि प्रतिलेखन गौचरीके ४७ दोषन इत्यादि तथा श्रावकोंके बारहव्रत एकसो चौवीस अतिचार इग्यारा प्रतिमा पूजा प्रभावना सामि वत्सल सामायिक पौषद आदि क्रियावों है उसे चरण करणानुयेण कहते है।

(४) धर्मकथानुयोग–जिस्में भूतकालमें होगये जैन धर्मके प्रभावीक पुरुष चक्रवर्त वलदेव वासुदेव मंडलीक राजा सामान्य राजा सेठ सेनापति आदिका जो जीवन चारित्र तथा न्याय नीति हेतु युक्ति अलंकार आदिका व्याख्यान हो उसे धर्म कथानुयोग कहते है।

इस च्यार अनुयोगमें द्रव्यानुयोग कार्य रूप है शेष तीना-नुयोग इसके कारण रूप है इस प्रभावशाली पञ्चमाङ्ग भगवती सूत्रमें च्यारों अनुयोग द्वारोंका समावेस है तद्यपि विशेष भाग द्रव्यानुयोग व्याप्त है इसी लिये पूर्व महाऋषियोंने द्रव्यानुयोगका महानिधिकी औपमा भगवती सूत्रको दी है।

(१) भगवती सूत्रके मूल श्रुतस्कन्ध एक है

(२) भगवती सूत्रके मूल शतक ४१ है

(३) भगवती सूत्रके अन्तर शतक १३८ है

(४) भगवती सूत्रके वर्ग १९ है

(५) भगवती सूत्रके उदेशा १९२४ है

(६) भगवती सूत्रके हालमें श्लोक १५७७२ है

(७) भगवती सूत्रकि हालमें टीका करवन् १८००० है

(८) भगवती सूत्रकि वाचना ६७ दिने दी जाती है। *

(९) भगवतीसूत्र कि निर्युक्ति भद्रबाहु स्वामि रचीथी

(१०) भगवती सूत्रकि चुरणी पूर्वधरोंने रचीथी

---

*१६ पहलेसे आठवे शतक प्रत्यक शतक दो दो दिनोंसे वचाया जाय जिस्के दिन शोला होते है।

२१ नौवां शतकसे पन्दरवा (गोशाला) शतककों छोड वीसवा शतक एवं शतककि वाचना उत्कृष्ट प्रत्यक शतक तीन तीन दिनसे वाचनां दे जिस्का तेतीस दिन होते है।

२ पन्दरवा (गोशाला) शतक एक दिनमें वचावे अगर रह जावे तों आम्बिलकर दुसरे दिन भी वचावे।

३ एकवीसवा बावीसवां तेवीसवा शतककि वाचना प्रत्यक दिन एकेक शतककि वाचना देवे।

४ चौवीसवां पचवीसवा शतककि वाचना दो दो दिनकि

१ छावीसवासे तेतीसवा शतक एक दिनमें वाचना देवे।

८ चौतीसवासें इगतालीसवां शतक आठ शतक, प्रत्यक दिन प्रत्यक शतक वचावे इसी माफीक भगवती सूत्रकी वाचना अपने शिष्यकों ६७ दिनमें देव वाचना लेनेवाले मुनियोंकों आम्बिलादि तपश्चर्य करना चाहिये।

(११) भगवती सुत्र हालकि टीका अभयदेव सुरि रचीत है।
इस भगवती सूत्रका पांच नाम है।

(१) श्री भगवती सुत्र लोक प्रसिद्ध नाम

(२) पांचमः अंग द्वादशाङ्गीके अन्दरका नाम

(३) विवहा पण्णन्ति मूल प्राकृत भाषाका नाम

(४) शिव शान्ति पूर्व महा ऋषियोंका दीया हुवा

(५) नवरंगी नये नये प्रश्नोत्तर होनासे

इस महान् प्रभावशाली पञ्चमाङ्ग भगवती सूत्रकि सेव भक्ति उपासना पठन पाठन मनन करनेसे जीवोंको ज्ञान दर्शन चारित्रका लाभ होते है। भगवती सुत्र अनादि कालसे तीर्थंकर भगवान फरमाते आये है इसकि आराधन करनेसे भूतकालमें अनन्ते जीव मोक्षमें गये है। वर्तमानकाले (विदहक्षेत्र) मोक्ष जाते है भविष्य-कालमें अनन्ते जीव मोक्ष जावेगा इति शम्

भगवती सूत्र शतक उदेशा तथा प्रश्नोत्तरके अन्तमें भगवान गौतम स्वामि " सेवं भंते सेवं भंते " एसा शब्द कहा है। यह अपन विनय भक्ति और भगवान वीर प्रभु प्रते पूज्य भाव दर्शा रहे है ; हे भगवान आपके बचन सत्य है श्रेयस्कार है भव्यात्मा-वोंके कल्याण कर्ता है इत्यादि वास्ते यहां भी प्रत्यक थोकडाके अन्तमें यह शब्द रखा गया है। इति

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला-पुष्प नम्बर ६९:

अथश्री

शीघ्रबोध भाग २५वां.

थोकडा नं० १

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशो १ लो

श्री भगवती सूत्रकि आदिमें गणधर भगवान पञ्च परमेष्टीकों नमस्कार करके श्री श्रुत ज्ञानको नमस्कार किया है।

राजगृहनगर गुणशलोद्यान श्रेणकराजा चेलणाराणी अभयकुमार मंत्री भगवान वीरप्रभुका आगम इन्द्रभूति (गौतम) गणधर इन्हे सत्रका वर्णन करते हुवे विशेष उत्पातिक सूत्रकी भोलामण दि है।

भगवान वीरप्रभु एक समय राजगृह उद्यानमें पधारेथे. राजा श्रेणक आदि नगर निवासी भव्य भगवानकों वन्द करनेको आये। भगवानकि अमृतमय देशना पान कर स्वस्थानपर गमन किया।

गौतमस्वामिने वन्दन नमस्कार कर भगवानसे अर्ज करी कि हे करूणा सिन्धु

(१) चलना प्रारंभ किया उसे चलीया ही केहना।

(२) उदीरणा प्रारंभ किया उसे उदीरीया ही केहना।

(३) वेदना प्रारंभ किया उसे वेदीया ही केहना।

(४) प्रक्षिण करना प्रारंभ किया उसे प्रक्षिण कियाही कहना।

(५) छेदना प्रारंभ किया उसे छेदाहुवा ही केहना।

(६) भेदना प्रारंभ किया उसे भेदाहुवा ही केहना।

(७) दहान करना प्रारंभ किया उसे दाहान किया ही केहना।

(८) मरना प्रारंभ किया उसे मृत्यु हुवा ही केहना।

(९) निज्जैरा करना प्रारंभ किया उसे निर्जरीया ही कहना।

इस नौ पदोंके उत्तरमें भगवान फरमाते है कि हां गौतम चलना प्रारंभ किया उसे चालीया यावत् निर्ज्जरना प्रारंभ किया उसे निर्ज्जरिया ही केहना चाहिये।

भावार्थ—यह प्रश्न कर्मों कि अपेक्षा है। आत्माके प्रदेशोंकि साथ समय समयमें कर्मबन्ध होते है व कर्म स्थिति परिपक्क होनेसे समय समय उदय होते है। आत्मप्रदेशोंसे कर्मोका चलनकाल वह उदयावलिका है इन्ही दोनोंका काल असंख्यात समयका अन्तर महूर्त परिमाण है परन्तु चलन प्रारंभ समयकों चलीया कहना यह व्यवहार नयका मत है अगर चलन समयकों चलीया न माना जावे तों द्वितीयादि समय भी चलीया नहीं माना जावेगा, कारण प्रथम समय दुसरा समयमें कोई भी विशेषता नहीं है और प्रथम समयको न माना जाय तो प्रथम समयकि क्रिया निष्फल होगा जेसे कोइ पुरुष एक पटकों उत्पन्न करना चाहे तों प्रथम तन्तु प्रारंभकों पट मानणा ही पडेगा। अगर प्रथम तन्तुकों पट न माना जाय तों दुसरे तन्तुमें भी पटोत्पती नहीं है वास्ते वह सब क्रिया निष्फल होगा और पटोत्पतीकि भी नास्ति होगा। इसी माफीक आत्म प्रदेशोंसे कर्म दलक चलना प्रारंभ हुवा उसकों चलीया ही मानना। शास्त्रकारोंका अभिष्ट है इस मन्यतासे जमालीके मत्तका निराकार किया है।

(१) चलन प्रारंभ समयकों चलीया केहना स्थिति क्षयापेक्षा है।

(२) उदीरणा प्रारंभ समयकों उदीरिया कहना=जो कर्म सत्तामें पडा हुवा है परन्तु उदयावलिकामें आनेयोग्य है उस कर्मोंकि अध्यवसायके निमित्तसे उदीरणा करते है। उदीरणा करतेंकों असंख्यात समय लगते है परन्तु यहां प्रारंभ समयको पूर्वके दृष्टांत माफीक समझना चाहिये।

(३) वेदते हुवेके प्रारंभ समयकों वेद्या कहना। जो कर्मउदय आये हो तथा उदीरणा कर उदय आविलकामें लाके प्रथम समय वेदणा प्रारंभ कीया है उसकों पूर्व दृष्टांत माफीक वेद्या ही कहेना।

(४) प्रक्षिण अर्थात् आत्मप्रदेशोंके साथ रहे हुवे कर्म दलक आत्मप्रदेशोंसे प्रक्षिण होनेके प्रारंभ समयको प्रक्षिण हुवा पूर्व दृष्टांत माफीक कहना।

(५) छेदते हुवेकों छेदाया–कर्मोंकि दीर्घकालकि स्थिति-कों अपवर्तन करणसे छेदके लघु करना वह अपवर्तन करण असंख्याते समयका है परन्तु पूर्व दृष्टांत माफीक प्रारंभ समयकों छेद्या कहना।

(६) भेदते हुवेकों भेद्या कहना–कर्मोंके तीव्र तथा मंद रसकों अपवर्तन तथा उपवर्तनकरण करके मंदका तीव्र और तीव्रका मंद करना वह करण असंख्याते समयका है परन्तु पूर्व दृष्टांत माफक प्रारंभ समय भेदते हुवेको भेद्या कहना।

(७) दहते हुवेको दहन कहेना। यहां कर्मरूपी काष्टकों शुक्ल ध्यानरूपी अग्निके अन्दर दहन करते हुवेकों पूर्व दृशांतको माफीक दहन किया ही कहना।

(८) मृत्यु प्रारंभमें मरिया कहना—यहां आयुष्य कर्मका प्रति समय क्षिण होते हुवेकों पूर्वके द्रष्टान्तकि माफीक मूर्या ही कहेना।

(९) निर्ज्जराके प्रारंभ समयकों निर्ज्जर्यो कहना=जो कर्म उदयसे तथा उदीरणासे वेदके आत्म प्रदेशोंसे प्रति समय निर्ज्जरा करी जाती है उस निर्ज्जराका काल असंख्याते समयका है परन्तु यह पूर्व द्रष्टान्तसे प्रारंभ समयकों निर्ज्जर्या कहना इति नौ प्रश्नोंका उत्तर दीया।

(प्र०) हे भगवान्! चलतेको चलीया यावत निर्ज्जरतेके निर्ज्जर्यो यह नौ पदोंका क्या एक अर्थ भिन्न भिन्न उच्चारण भिन्न भिन्न वर्ण (अक्षरों) अथवा भिन्न भिन्न अर्थ भिन्न भिन्न उच्चारण, भिन्न भिन्न वणवाला है।

उ०) हे गौतम! चलते हुवेकों चलीया, उदीरते हुवेकों उदीरीया, वेदते हुवेकों वेदीया और प्रक्षिण करते हुवेकों प्रक्षिण किया यह च्यार पदों एकार्थी है और उच्चारण तथा वर्ण भिन्न भिन्न है यहा पर केवलज्ञान उत्पादापेक्षा है कारण कर्मोका चलना उदीरण तथा उदय हुवेकों वेदना और आत्मप्रदेशोंसे प्रक्षिण करना यह सब पुरुषार्थ पहले नही उत्पन्न हुवे एसे केवलज्ञान पर्यायकों उत्पन्न करनेका ही है वास्ते उत्पन्नपक्षापेक्षा इस च्यारों पदोंका अर्थ एक ही है।

शेष रहे पांच पद (छेदाते हुवेकों छेद्या यावत् निर्ज्जरते हुवेकों निर्ज्जर्या) वह एक दूसरेसे भिन्न अर्थवाले है यह पर विगत पक्षकि अपेक्षा अर्थात् कर्मोंका सर्वथा नाश करना जेसे–

(५) छेदाते हुवेकों छेद्या, तेरवे गुणस्थान रहे हुवे कर्मोकि स्थितिकी घात करते हुवे योग निरुद्ध करते है ।

(६) भेदते हुवेको भेद्या=यह रसघातकि अपेक्षा है परन्तु स्थिति घात करतों रसघात अनन्तगुणी है वास्ते भिन्नार्था है ।

(७) दहन करते हुवेकों दहन किया=यह प्रदेश बन्धापेक्षा है। पांच ह्रस्व अक्षर कालमे शुक्लध्यान चतुर्थ पाये कर्म प्रदेशका दहानापेक्षा होनेसे यह पद पूर्वसे भिन्नार्था है ।

(८) मृत्यु होतेकों मृर्या कहना यह पद आयुष्य कर्मापेक्षा है। आयुष्य कर्मके दलकक्षय जो पुनर्जन्म न हो एसे चरम आयुष्य क्षय अपेक्षा होनेसे-यह पद पूर्वसे भिन्नार्था है ।

(९) निर्जरते हुवेकों निर्जर्या कहेना=सकल कर्मोका क्षयरूप निर्जर पूर्व कबी न करी हुई चौदवे गुणस्थानके चरम समय २ सकल कर्मक्षयरूप होनेसे यह पद पूर्वके पदोंसे भिन्नार्था है ।

इस वास्ते पेहलेके च्यार पद एकार्था और शेष पांच पद भिन्नार्था है ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नम्बर २.

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशा १

(४५ द्वार)

इस थो॰ड़ेके ४५ द्वार चौवीस दंडक पर उतारा जावेगा, चौवीस दंडकमें प्रथम नार्किके दंडकपर ४५ द्वार उतारे जाते है।

(१) स्थितिद्वार नारकिके नैरियोंकि स्थिति जघन्य दश-हजारवर्ष उत्कृष्ट तेतीस सागरोपमकि है।

(२) साश्वोसाश्वद्वार=नारकिके नेरिया निरान्तर साश्वोसाश्व लेते सो भी लोहारकि धामणकि माफीक शीघ्रतासे।

(३) आहार=नारकिके नैरिये आहारके अर्थी है? हां आहारके अर्थी है।

(४) नारकिके नैरिये आहार कितने कालसे लेते है? नारकिके आहार दोय प्रकारका है (१) अनजानते हुवे (२) जानते हुवे जिस्मे जो अनजानते हुवे आहार लेते हैं वह प्रतिसमय आहारके पुद्गलोंको ग्रहन करते है और जो जानके आहार लेते है वह असंख्यात समय अन्तर महुर्तसे नारकिको आहारकि इच्छा होती है।

(५) नारकि आहार लेते है सो कोणसे पुद्गलोंका लेते है? द्रव्यापेक्षा अनन्ते अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, क्षेत्रापेक्षा असंख्याते आकाश प्रदेश अवगाह्या, कालापेक्षा एक समयकि स्थिति यावत् असंख्याता समयकि स्थितिके पुद्गल, भावापेक्षा वर्ण गंध रस स्पर्श यावत २८८ बोल देखो शीघ्रबोध भाग तीजा आहारपद।

(६) नारकि आहारपणे पुद्गल लेते है वह क्या सर्व आहार करे, सर्व परिणमे, सर्व उश्वासपणे परिणमावे, सर्व निश्वासपणे एवं वारवारके ४ एवं कदाचीत्के ४ सर्व १२ बोलपणे परिणमे।

(७) नारकि अपने आहारपणे लेने योग्य पुद्गल है जीस्के असंख्यात भागके पुद्गलोंको ग्रहन करते है और ग्रहन किये हुवे पुद्गलोंमें अनन्तमे भागके पुद्गलोंको अस्वादन करते है।

(८) नारकि जो पुद्गल आहारपणे ग्रहन किया है वह सर्व पुद्गलोंका ही आहार करते है न कि देशपुद्गलोंका।

(९) नारकि जो आहार करते है वह पुद्गल उसके श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियपणे अनिष्ट अकन्त अप्रय अमनोज्ञ यावत् दुःखपणे परिणमते है।

नोट-आहारपदका थोकडा सविस्तार शीघ्रबोध भाग तीजामें ११ द्वारसे लिखा गया है यहांपर सप्रयोजन शास्त्रकारोंने सात द्वारोंको ही ग्रहन किया है वास्ते विस्तार देखनेवालोंको तीजा भागसे देखना चाहिये।

(१०) नारकिके आहार विषय प्रश्न।

(१) आहार किये हुवे पुद्गल प्रणम्या या प्रणमेगा।
(२) आहार किया और करते हुवे पु० प्रणम्या या प्रणमेगा।
(३) आहार न किया और करते हुवे पु० प्रणम्या या प्रणमेगा।
(४) आहार न किया और न करे पु० प्रणम्या या प्रणमेगा।

इस च्यारों प्रश्नोंकि उत्तर

(१) आहार किये हुवे पु० प्रणम्या न प्रणमेगा।
(२) आहार किया और करते हुवे पु० प्रणम्या प्रणमेगा।
(३) आहार न किया और करते हुवे पु० न प्रणम्या प्रणमेगा।
(४) आहार न किया न करे वह न प्रणम्या न प्रणमेगा।

इसपर टीकाकारोंने छ पद किया है (१) आहार किया (२) करे (३) करेगें (४) न किया (५) न करे (६) न करेगें। इस छे पदोंकि ६३ विकल्प होते है यथा–

असंयोगी विकल्प ६.

सं.	विकल्प	सं०	विकल्प
१	भूतकालमे आहारीह्या	२	वर्तमानमे आहार करे
३	भविष्यमे आहार करेंगे	४	भूत० नही आहारीह्या
५	वर्त० नही आहारे	६	भवि० नही आहारेंगा

दो संयोगि विकल्प १५.

१	आहारक नों करे	२	आहारक नों करेंगा
३	,, ,, नही कर्यो	४	,, ,, नही करे
५	,, ,, नही करेंगा	६	आहार करे और करेंगा
७	,, ,, नही कर्यो	८	,, ,, नही करे
९	,, ,, नही करेगा	१०	आहार करेंगा—नही कर्यो
११	,, ,, नही करें	१२	,, ,, नही करेंगा
१३	आहार नही कर्यो नही करे	१४	आहार नही कर्यो नही करेंगा
१५	आहार नहीं करें नहीं करेंगा		

तीन संयोगि विकल्प २०

१	आहार कर्यो करे करेंगा	२	आहार क्रर्यो करे न कर्यो
३	,, ,, ,, नकरे	४	,, ,, करे न करेंगा
५	,, ,, करेंगा न कर्यो	६	,, ,, करेंगा न करे
७	,, ,, करेंगा न करेंगा	८	,, ,, न कर्यो न करेंगा
९	,, ,, न कर्यो न करेंगा	१०	,, ,, न करें न करेंगा
११	आहार करे करेंगा न कर्यो	१२	आहार करे करेंगा न करें
१३	,, करेंगा न करेंगा	१४	,, न कर्यो न करे
१५	,, न कर्यो न करेंगा	१६	,, न करें न करेंगा
१७	आहार करेंगा न कर्यो न करे	१८	आहार करेंगा न कर्यो न करेंगा
१९	,, ,, न करें न करेंगा	२०	न कर्यो न करे न करेंगा

च्यार संयोगि विकल्प १५

१ कर्यो करे करेंगा न कर्यो	२ कर्यो करे करेंगा न करे
३ ,, ,, ,, न करेंगा	४ ,, ,, न कर्यो न करे
५ ,, ,, न कर्यो न करेंगा	६ ,, ,, न करे न करेंगा
७ ,, करेंगा न कर्यो न करे	८ ,, करेंगा न कर्यो न करेंगा
९ ,, ,, न करे न करेंगा	१० ,, न कर्यो न करे न करेंगा
११ करे करेंगा न कर्यो न करे	१२ करे करेंगा न कर्यो न करेंगा
१३ ,, ,, न करे न करेंगा	१४ ,, न कर्यो न करे न करेंगा
१५ करेंगा न कर्यो न करे न करेंगा	

पञ्चसंयोगि विकल्प ६

१ कर्यो	करे	करेगा	न कर्यो	न करे
२ ,,	,,	,,	,,	न करेंगा
३ ,,	,,	,,	न करे	,,
४ ,,	,,	न कर्यो	,,	,,
५ ,,	करेंगा	,,	,,	,,
६ करे	,,	,,	,,	,,

छे संयोगि विकल्प १

१ कर्यो, करे करेंगा न कर्यो न करे न करेंगा ।

इस ६३ विकल्पके स्वामिके अन्दर नरक तथा अभव्य जीव भूतकालमें पुद्गल आहारपणे नहीं ग्रहन किये एसे तीर्थंकरोंके शरीरादिके काममें आये हुवे पुद्गल नरक तथा अभव्यके आहार पण काममें नहीं आसके है इसमें एकमत एसा है कि वह पुद्गल उसी रूपमें नरकादिके काम नहीं आसके। दुसरा मत है कि रूपान्तरमें भी काममें नहीं आसके । 'तत्व केवली गम्यं' ।

(११) नारकिके नैरिये आहारकी माफीक पुद्गल एकत्र करते है वह भी आहारकि माफीक चौभांगी प्रणम्य प्रणमे प्रणमेगा पूर्ववत् ६३ विकल्प "चय"।

(१२) एवं उपचयकि भी चौभागी और पूर्ववत् ६३ विकल्प।

(१३) एवं उदीरणा (१४) एवं वेदना (१५) निज्जरा यह तीन द्वार कर्मोकि अपेक्षा है। अनुदय कर्मोके उदीरणा, उदय तथा उदीरणाकर विपाक आये कर्मोकों वेदना. वेदीये हुवे कर्मोकि निज्जरा करना इस्का भी पूर्ववत् च्यार च्यार भांग समझना।

(१६) नारकिके नैरिया कितने प्रकारके पुद्गलोंके भेदाते है?

कर्मद्रव्योंकि अपेक्षा दोय प्रकारके पुद्गल भेदाते है (१) बादर (२) सूक्ष्म भावार्थ अपवर्तन कारण (अध्यवसायके निमत्त) से कर्मोके तीव्र रसको मंद करना तथा उद्धवर्तन करणसे कर्मोके मंद रसकों तीव्र करना अर्थात् न्यूनाधिक करना। यहांपर सामान्य सुत्र होनेसे पुद्गल भेदाना कहा है। कम पुद्गल यद्यपि बादर ही है परन्तु यहां बादर और बादरकि अपेक्षा सूक्ष्म कहा है परन्तु यहां जो सूक्ष्म है वह भी अनन्ते अनन्त प्रदेशी स्कन्धका ही भेद होते है। एवं (१७) पुद्गलोंका चय (एकत्र करना) एवं (१८) उपचय (विशेष घन करना) यह दोय पद आहार द्रव्य अपेक्षा कहेना। एवं (१९) उदीरणा (२०) वेदना (२१) निज्जरा यह तीन पद कर्म द्रव्यापेक्षा पूर्व भेदाते कि माफीक समझना। आत्माव्यवसायके निमत्तसे अपवर्तन उद्धवर्तन करते हुवे जीव स्थितिघात तथा रसघात करे इसी माफीक स्थिति वृद्धि तथा रसवृद्धि करते है।

(२२) उवट्टीता=अपवर्तनद्वारा कर्मों कि स्थितिको न्यून करना उपलक्षणसे उद्धवर्तन द्वारा कर्मों कि स्थितिकी वृद्धि करना यह सूत्र तीन कालापेक्षा है (२२) भूतकालमे करी (२३) वर्तमानकालमें करे (२४) भविष्यकालमे करेगा ।

(२५) संक्रमण=मूल कर्म प्रकृतिसे भिन्न जो उत्तरकर्म प्रकृति एक दुसरी प्रकृतिके अन्दर-संक्रमण करना इसमे भी अध्यवसायोंका निमत्त कारण है जेसे कोइ जीव साता वेदनिय कर्मको वेद रहा है अशुभ अध्यवसायोंके निमत्त कारणसे वह साता वेदनियका संक्रमण असातावेदनियमे होता है अर्थात् वह सातावेदनिय भी असातामें सक्रमण हो असाता विपाकको वेदता है । इस्को भी तीन काल (२५) भूतकालमें संक्रमण किया (२६) वर्तमानमें संक्रमण करे (२७) भविष्यमे संक्रमण करेगा ।

(२८) निधत्तद्वार अध्यवसायके निमत्त कारणसे कर्म पुद्गलोंको एकत्र करना उसमें अपवर्तन उद्धवर्तनसे न्यूनाधिक करना उसे निधत्त केहते है जैसे सुइयोंके भारोंको अग्निमें तपाके उपर चोट न पडे वहांतक निधत्त अर्थात न्यूनाधिक हो सके है एसा निधत्त भी जीव तीनों कालमे करे कर्यो करेगा ।३०।

(३१) निकाचित्-पूर्वोक्त कर्म दलक एकत्र कर घन बंधन जेसे तपाइ हुइ सुइयोंपर चोट देनेसे एक रूप हो जाती है उसमे सामान्य करण नही लग सक्ते है वह भी तीन कालापेक्षा निकाचीत् कर्मा करे करेगा ॥ ३३ ।

(३४) नारकिके नैरिये तेजस कारमाण शरीरपणे पुद्गल ग्रहन करते है वह क्या भूतकालके समयमें वर्तमान कालके समयमे

भविष्य कालके समयमें ग्रहन करते है ? भूत कालका समय नष्ट हो गया । भविष्य कालका समय अब आवेगा वास्ते भूत भविष्य निरर्थ होनेसे वर्तमान समयमें ग्रहन करते है ।

(२५) नारकिके नैरिये तेजस कारमाण पणे जो पुद्गलोंकि उदीरणा करते हैं वह भूतकालके समयमें ग्रहन किये पुद्गलोंकि उदीरणा करते है परन्तु वर्तमान तथा भविष्य समयकि उदीरणा नही करते है कारण वर्तमानमे तो ग्रहन किया है उसकि उदीरणा नही होती है । भविष्यका समय अबी तक आया भी नही है वास्ते उदीरणा भूतकालकि होती है (२६) एवं वेदना (२७) एवं निर्ज्जरा यह तीनों भूतकाल समय अपेक्षा है ।

(२८) नारकिके नैरिये कर्मबन्धते है वह क्या चलीत कर्मोको बन्धते हैं या अचलीत कर्मोको बन्धते हैं ? चलीत कर्मोको नहीं बंधते है कारण आत्मप्रदेशोंसे चलीत हुवे है वह कर्म वेदके निर्ज्जरा करणे योग्य है इसी वास्ते चलीत कर्म नहीं बांधे किंतु अचलीत कर्मोको बन्धते है एवं (२९) उदीरणा (४०) वेदना (४१) अपवर्तन (४२) संक्रमण (४३) निधस (४४) निकाचीत यह सब अचलीत कर्मोके होते है ।

(४५) हे भगवान् । नारकि कर्मोकि निर्ज्जरा करते है वह क्या चलीत कर्मोकि करते है या अचलीत कर्मोकि करते है ।

(उ) हे गौतम नारकि जो कर्मोकि निर्ज्जरा करते है वह चलीत कर्मोकि करते है किंतु अचलीत कर्मोकि निर्ज्जरा नही होती है । भावार्थ आत्मप्रदेशोंमें स्थित रहे हुवे कर्मोकि निर्ज्जरा नहीं हुवे परन्तु आत्म पदेशोंसे कर्म प्रदेश स्थिति पूर्णकर चलीत

होके उदयमें आवेगा वह प्रदेशों यथा विपाकों कर्म वेदा जावेगा तब वेदीया हुवे कर्मोंकि निर्ज्जरा होगा वास्ते चलीत कर्मोंकि ही निज्जरा होती है इति एक नारक दंडकपर ४५ द्वार हुवे वह अब २४ दंडक पर उतारा जाता है।

स्थिति चौवीस दंडकोंकि देखों प्रज्ञापन्ना सूत्र पद चोथा, शीघ्रबोध भाग १२ वां में।

साश्वोसाश्व देखो प्रज्ञापन्ना सूत्र पद ७ वा शीघ्रबोध भाग २ में। आहारके सात द्वार देखों प्रज्ञापन्ना सूत्र पद २८वां शीघ्रबोध भाग तीजामें।

शेष ३६ द्वार जैसे उपर नारकीके द्वार लिख आये हैं इसी माफीक चौवीस दंडकमें निर्विशेष समझना इति चौवीस दंडकपर ४५ द्वार। इस थोकडेकों सुख दीर्घ द्रष्टीसे विचारों।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर ३।

श्री भगवतीजी सूत्र शतक १ उदेशा १

(प्र) हे भगवान ! ज्ञान है सो इस भवमें होते है ? परभवमें होते है उभय भवमें भी होते है।

(उ) हे गौतम ! ज्ञान इस भवमें भो होते है परभवमें भी होते है। भावार्थ–ज्ञान है सो क्षोपसम भावमें है जहांपर ज्ञानावर्णीय कर्मका क्षोपशम होता है वहां पर ही ज्ञान होता है। इस भव (मनुष्य)में जो पठन पाठन कर ज्ञान किया है वह देवगतिमें जाते समय साथमें भी चल सके है तथा वहां जानेके बाद भी नया ज्ञान होसके है। अर्थात्

देवतावोंमें भी ज्ञान विषय तत्व विषय चर्चा वार्तावों होती रहती है। वास्ते तीनों स्थानपर ज्ञान होते है।

(प्र) हे भगवान् ! दर्शन (सम्यक्त्व) है सो इसी भवमें है ? पर भवमें है ? तथा उभय भवमें है ?

(उ) हे गौतम ! दर्शन इस भवमें भी होते है। परभवमें भी होते है। उभय भवमें भी होते है। भावार्थ–इस भवमें मुनियोंकि देशना श्रावणकर तत्व पदार्थकों जाननेसे दर्शनकि प्राप्ती होती है पर भवमें भी वहुतसे मिथ्यात्वी देवता चर्चा वार्ता करते हुवे दर्शन प्राप्ती कर सक्के है तथा इस भवमें दर्शन उपार्जन कीया हुवा पर भवमें साथ भी ले जासक्के है।

(प्र) हे भगवान् । चारित्र (निवृतिरूप) इस भवमें है ? पर भवमें है ? उभय भवमें हैं ?

(उ) हे गौतम चारित्र है सो इस भवमें है परन्तु परभवमें नहीं है और यहांसे परभव साथमें भी नहीं चल सक्का है अर्थात मनुष्यके सिवाय देवादि गतिमें चारित्र नहीं होते है।

(प्र) हे भगवान् । तप है सो इस भवमें होते है ? परभवमें हैं। उभय भवमें है।

(उ) तप है सो इस भवमें होते है परन्तु परभवमें तथा उभय भवमें नहीं होते है पुर्ववत् नमुकारसी आदि तपश्चर्या मनुष्यके भवमें ही हो सक्ती है।

(प्र) हे भगवान् । संयम (पृथ्व्यादिका संरक्षणरूप १७ प्रकार) इस भवमें है यावत् उभय भवमें है ?

(उ) संयम इस भवमें है शेष पूर्ववत्। संयमका अधिकारी केवल मनुष्य ही है।

(प्र) हे भगवान्। असंवृत आत्माके धारक मुनि मोक्ष जातेहै?

(उ) हे गौतम ! असंवृत अनगार मोक्षमें नहीं जाते है।

(प्र) कौन कारणसे ?

(उ) असंवृत अनगार जो आयुष्यकर्म छोडके शेष सातकर्म शीतल बन्धे हुवेको घन बन्धन करे। स्वल्प कालकि स्थितिवाले कर्मोंको दीर्घ कालकि स्थितिवाला करे। मंदरसवाले कर्मोंको तीव्र रसवाले करे। और स्वल्प प्रदेशवाले कर्मोंको प्रचुर० प्रदेशवाला करे। आयुष्य कर्म स्यात् वान्धे स्यात न भी बन्धे (पूर्व बन्धा हुवा हो) असाता वेदनिय कर्म वार वार बन्धे और जिस संसारकि आदि नहीं और अन्त भी नहीं एसा संसारके अन्दर परिभ्रमन करे इस वास्ते असंवृत मुनि मोक्ष नहीं जासक्ते है।

(प्र) हे भगवान्। संवृत आत्मा धारक मुनि मोक्षमें जासक्ते है ?

(उ) हां गौतम। संवृत आत्मा धारक मुनि मोक्षमें जासक्ते है।

(प्र) क्या कारण है ?

(उ) संवृत आत्मा धारक मुनि आयुष्य कर्म वर्जके सात कर्म घन बन्धा हुवा होते उसको शीतल करे। दीर्घ कालकि स्थितिको स्वल्प काल करे। तीव्र रसको मंद रस करे। प्रचुर प्रदेशोंको स्वल्प प्रदेश करे असाता वेदनी नहीं बान्धे। आदि अन्त रहीत जो ' दीर्घ रस्तेवाला संसार समुद्र शीघ्रता पूर्वक तीरके

१ पांच इंद्रियो और मनद्वारा आता हुवा आश्रवद्वारोंका निरुद्ध नही कीया है।

पारगत अर्थात् शरीरी मानसी सर्व दुःखोंका अन्तकर मोक्षमें जावे।

श्री भगवती सुत्र शतक २ उद्देशा १

(प्र) हे भगवान्। स्वयं कृत दुःखकों भगवते है।

(उ०) हे गौतम। कोइ जीव भोगवे कोइ जीव नही भी भोगवे। हे प्रभो इसका क्या कारण है! हे गौतम जीस जीवोंके उदयमें आया है वह जीव कृत कर्म भोगवते है और जीस जीवोंके जो कृतकर्म सत्तामें पडा हुवा है अवाधा काल पूर्ण परिपक नही हुवा है अर्थात उदयमें नही आया है वह जीव कृतकर्म नही भी भगवते है इस अपेक्षासे कहा जाते है कि कोइ जीव भोगवे कोइ जीव नही भी भोगवे। इसी माफीक नरकादि २४ दंडक भी समझना। जैसे यह एक वचन अपेक्षा समुच्चय जीव और चौवीस दंडक एवं २५ सुत्र कहा है इसी माफीक २५ सुत्र बहु वचन अपेक्षा भी समझना। एवं ५० सुत्र।

(प्र०) हे भगवान्। जीव अपने बन्धाहुवा आयुष्य कर्मकों भोगवते है।

(उ०) हां गौतम। जीव स्वयं बान्धा हुवा आयुष्य कर्मकों स्यात् भोगवे स्यात् नही भी भोगवे। हे प्रभो इस्का क्या कारण है? हे गौतम जीस जीवोंके आयुष्य उदयमें आया है वह भोगवते है और जिस जीवोंके उदयमें नही आया है वह नही भोगवते है एवं नरकादि २४ दंडक भी समझना। इसी माफीक बहुवचनके भी २५ सूत्र समझना इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नम्बर ४.

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशा ३.

(आस्तित्व)

(प्र) हे भगवान्। आस्ति पदार्थ आस्तित्व पणे परिणमें और नास्तिपदार्थ नास्तित्व पणे परिणमे।

(उ) हां गौतम आस्ति पदार्थ आस्तित्व पणे परिणमें और नास्ति पदार्थ नास्तित्व पणे परिणमें।

भावार्थ–जैनसिद्धान्त अनेकान्तवाद स्याद्वाद संयुक्त है वास्ते यहांपर सापेक्षा वचन है। जैसे अंगुली अंगुली पणेके भावमे आस्तित्व है और अंगुली अंगुष्टादिके भावमें नास्तित्व है वास्ते अंगुली अंगुलीके भावमें आस्तित्व परिणमते है इसी माफीक जीव जीवके ज्ञानादि गुण पणे आस्तित्व भाव परिणमते है इसी माफीक वस्तु वस्तुके भाव पणे आस्तित्व है। नास्ति नास्तित्वपणे परिणमें जेसे गर्दभ शृंग यह नास्ति नास्ति पणे परिणमते है इसी माफीक जीवके अन्दर जडता भाव नास्ति है नास्ति भाव पणे परिणमते है इत्यादि।

प्र० हे भगवान ! जो आस्ति आस्तित्व पणे परिणमे और नास्ति नास्तित्वपणे परिणमते हैं तो क्या प्रयोगसे परिणमते हैं या स्वभावसे परिणमते है।

(उ) हे गौतम : जीवके प्रयोगसे भी परिणमते है और स्वभावसे भी परिणमते है। जेसे अंगुली ऋजु है उसको जीव प्रयोगसे वक्र करते है यह जीव प्रयोगसे तथा बादला प्रमुख यह

स्वभावसे परिणमते है। इसी माफीक कीतनेक पदार्थ आस्ति आस्तित्वपणे जीवके प्रयोगसे परिणमते है कितनेक पदार्थ आस्ति आस्तित्व स्वाभावे परिणमते है। एवं नास्ति नास्तित्वपणे भी जीव प्रयोग तथा स्वभावे भी परिणमते है यहां तात्पर्य वह है कि स्वगुनापेक्षा आस्ति आस्तित्व परिणमते है और पर गुनापेक्षा नास्ति नास्तित्व परिणमते है। इसी माफीक दोय अलापक गमन करनेके भी समझना।

काक्षा मोहनिय कर्मका अधिकार भाग १६ वा मे छवा हुवा है परन्तु कुच्छ संबन्ध रह गया था वह यहांपर लिखाजाते है।

(प्र) हे भगवान। जीव कांक्षा मोहनिय कर्मकि उदीरणा स्वयं कर्ता है स्वयं ग्रहना है कर्ता है स्वयं सबरना है।

(उ) हां गौतम। उदिरणा ग्रहना संवरना जीव स्वयं ही करता है।

(प्र) अगर स्वयं जीव उदीरणा कर्ता है तो क्या उरत कर्मोकि उदीरणा करे, अनुदीरत कर्मो के उदीरणा करे। उदय आने योग्य कर्मोकि उदीरणा करे। उदय समयके पश्चात अणन्तर समयकी उदीरणा करे।

(प्र) हे गौतम; तीन पद उदीरणाके अयोग्य है किन्तु उदय आने योग्य कर्म है॥

उसी कर्मोकि उदीरणा करते है।

(प०) उदीरणा करते हैं वह क्या उत्स्थानादिसे करते है या अनुत्स्थानादिसे करते है १ उत्स्थानादिसे उदीरणा करते है। किन्तु अनुत्स्थानादिसे उदीरणा नहीं होती है।

(प्र०) हे भगवान्! जीव कर्मोंको उपशमाते है वह क्या उदीरत कर्मोंको, अनुदीरत कर्मोंका, उदय आने योग कर्मोंका, उदय समय पश्चात् अणन्तर समयको उपशमाते हैं ?

(उ०) हे गौतम! अनुदय कर्मोंका उपशम होता है अर्थात् उदय नहीं आये एसे सतामें रहे हुवे कर्मोंको उपशमाते है वह उत्स्थानादिसे उपशमाते हैं एवं कर्मोंको वेदते है परन्तु उदय आये हुवे कर्मोंको वेदते है एवं निर्ज्जरा परन्तु उदय अणान्तर पुर्वक्त समय अर्थात् उदय आये हुवेको भोगवनेके बाद कर्मोंकि निर्ज्जरा करते है इस सब पदके अन्दर उत्स्थानादि पुरुषार्थसे ही करते है। यहां गोसालादि नित्य बादीयों जो उत्स्थान बल कम्म वीर्य और पुरुषार्थको नहीं मानते है उन्हीं बादीयोंके मतका निराकार कीया है। इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर ९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक १ उद्देशो ४

(वीर्य विषय प्रश्नोतर)

(प्र०) हे भगवान। जीव जीवोंने पूर्व मोहनि कर्म संचय, किया है वह वर्तमानमे उदय होनेसे जीव परभव गमन करे।

(उ०) हे गौतम। पूर्व आयुष्य क्षय होनेपर परभव गमन करते है।

(प्र०) वह जीव परभव गमन करता है वो क्या वीर्यसे करता है।

(उ०) हाँ, वीर्यसे ही परभव गमन करता है । अवीर्यसे नहीं ।

(प्र०) वीर्यसे करते है तो क्या बालवीर्यसे पंडितवीर्यसे बालपंडित वीर्यसे परभव गमन करते है ।

(उ०) हे गौतम । पंडितवीर्य साधुवोंके और बालपंडित वीर्य श्रावकोंके होते है इसमे परभव गमन नही करते है क्यु कि परभव गमन समय जीवोंके पहेलो दुसरो और चोथो यह तीन गुणस्थान होते है वह तीनों गुण० बालवीर्य धारक है वास्ते परभव गमन बालवीर्यसे ही होते है ।

(प्र०) पूर्व मोहनिय कर्म किया । वह वर्तमानमे उदय होनेपर जीव उच्च गुणस्थानसे निचे गुणस्थानपर जा सक्ते है ।

(उ०) हाँ मोहनिय कर्मोदयसे निचे गुण० आ सक्ता है ।

(प्र०) तो क्या बालवीर्यसे पंडितवीर्यसे या बालपंडितवीर्यसे!

(उ०) पंडितवीर्य तथा बालपंडितवीर्यसे निचा नही आवे ! किन्तु बालवीर्यसे उच्च गुणस्थानसे निच गुणस्थान जावे । वाचनान्तरमें बालपंडित वीर्यसे भी आना कहा है कारण मोहनिय (चारित्र मोहनि) कर्मका प्रबल उदय होनेसे साधु हुवा भी देशव्रतमे आवे वहासे फीर नीचेके गुणस्थान आवे, भावार्थ है, इसी माफीक मोहनिय उपशमका भी दो सूत्र समझना परन्तु परभव गमन पंडितवीर्यसे और निच गुणस्थान बालवीर्यसे समझना ।

(प्र०) हे भगवन् । जीव हीन गुणोंको प्राप्त करता है वह क्या आत्मभावोंसे करता है या अनात्मभावोंसे ।

(उ०) आत्मभाव करके हीन गुणोंको प्राप्त करता है ।

(प्र०) जीव मोहनिय कर्म वेदतों हीन गुणस्थान क्यो जाता है ।

(उ०) प्रथम जीव सर्वज्ञ कथित तत्त्वोंपर श्रद्धा प्रतीत रखता था फीर मोहनिय कर्मका प्रबलोदय होनेसे । जिन वचनोंपर श्रद्धा नही रखता हुवा अनेक पाषंडपरूपीत असत्य वस्तुको सत्य कर मानने लग गया । इस कारणसे जीव मोहनिय कर्म वेदतों हीन गुणस्थान जाता है ।

(प्र) हे करूणासिन्धु । जीव नरक तीर्यच मनुष्य और देवतावोंमें किया हुवे कर्म वीनों भुक्ते मोक्ष नहीं जाते है ।

(उ) हां च्यार गतिमें किये कर्म भोगवनेके सिवाय मोक्ष नहीं जाते है ।

(प्र) हे भगवान् ! कितनेक एसे भी जीव देखनेमें आते है कि अनेक प्रकारका कर्म काते है और उसी भवमें मोक्ष जाते है तों वह जीव कर्म कीस भगे भोगवते है ।

(उ) हे गौतम । कर्मोंका भोगवना दोय प्रकारसे होता है (१) आत्मप्रदेशोंसे (२) आत्मप्रदेशों विपाकसे, जिस्में विपाक कर्म तों कोई जीव भोगवे कोई जीव नहीं भी भोगवे । और प्रदेशोंसे तों आवश्य भोगवना ही पडता है कारण कर्म बन्धमे तथा कर्म भोगवनमें अध्यवसाय निरत्त कारणभूत है जेसे कर्म बन्धा हुवा है और ज्ञान ध्यान तप मयादिसे दीर्घ कालकि स्थितिवाले कर्मोंका आकर्षन कर स्थितिघात रसघात कर प्रदेशों भोगवके निर्जरा कर देवे है इस बातकों सर्वज्ञ अरिहंत अपने केवल ज्ञानसे जानते है, केवल दर्शनसे देखते है कि यह जीव उदय आये हुवे

तथा उदिरणा करके वीपाकसे या प्रदेशसे कर्म भोगवते है इस वास्ते "जं जं भगवया दीट्ठा तं तं परिणमस्सन्ति"

(प्र०) हे भगवान ! भूत भविष्य वर्तमान इन तीनों कालमें जीव और पुद्गल सास्वता कहा जाते है ।

(उ०) हां गौतम जीव पुद्गल स्कन्ध सदेव सास्वता है ।

(प्र०) हे दयाल । भूतकालमें, छद्मस्त जीव केवल (सम्पूर्ण) संयम, संवर, ब्रह्मचार्य प्रवचन पालके जीव सिद्ध हुवा है ।

(उ०) नही हुवे । कारण यह कार्य छद्मस्त वीतरागके भी नहीं हो सक्के है परन्तु अंतिम भवी अन्तिम शरीरी होते है उन्होंको प्रथम केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न होते है फीर वह जीव सिद्ध होते है यह वात भी जो अरिहंत अपने केवल ज्ञानसे जानते है देखते है कि यह जीव चरम शरीरी इस भवमें केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष जावेगा । इति शम् ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नम्बर ६.

सूत्र श्री भगवतीजी शतक २ उदेशा ६

(प्र) हे भगवान । उदय होता सूर्य जितने दूरसे द्रष्टीगोचर होता है इतना ही अस्त होता सूर्य द्रष्टीगोचर होता है ?

(उ) हां गौतम ! उदय तथा अस्त होता सूर्य बराबर द्रष्टीगोचर होते है कारण सूर्यकि उत्कृष्ट गति कर्क शक्रान्त उदय ४७२६३ = $\frac{२१}{६०}$ इतने योजनसे उदय होता द्रष्टीगोचर होता है ४७२६३ = $\frac{२१}{६०}$ इतने योजन सूर्य अस्त समय भी द्रष्टीगोचर होता

है । इसी माफीक सुर्य उदय समय जीतने क्षेत्रमें प्रकाश करे उद्योत करे यावत् ताप तपावे इतना ही क्षेत्रमें अस्त समय प्रकाश यावत् ताप करे है ।

(प्र) हे भगवान् । सुर्य प्रकाश करे है वह क्या स्पर्श क्षेत्रमें करते है या अस्पर्श क्षेत्रमें करते है ? स्पर्श किये हुवे क्षेत्रमें प्रकाश करते है वह नियमा छे दिशीमें प्रकाश करते है ।

(प्र) हे भगवान् । सुर्य क्या स्पर्श क्षेत्रको स्पर्श करते है या अस्पर्श क्षेत्रको स्पर्श करते है ? स्पर्श क्षेत्रको स्पर्श करते है किंतु अस्पर्श क्षेत्रको स्पर्श नही करते है ।

(प्र) हे भगवान । लोकका अन्त अलोकके अन्तसे स्पर्श किया हुवा है ? अलोकका अन्त लोकके अन्तको स्पर्श किया है ?

(उ) हां गौतम, लोकका अन्त । अलोकके अन्तको और अलोकका अन्त लोकके अन्तको स्पर्श किया हुवा है । वह भी स्पर्श किये हुवेको स्पर्श किया है वह भी नियमा छे दिशोंके अन्दर स्पर्श किये है ।

(प्र) हे भगवान् । द्विपका अन्तको सागरका अन्त स्पर्श किया है । सागरका अन्तको द्वीपका अन्त स्पर्श किया है ?

(उ) हां गौतम । पूर्ववत् यावत् नियमा छे दिशोंमें स्पर्श किया है एवं नद्यान्तसे स्पर्शांत एवं वस्त्रके छेद्र आदि बोलोंका संयोग करना यावत् नियमा छे दिशोंको स्पर्श किया है ।

(प्र) हे भगवान् । समुच्चय जीव अपेक्षा प्रश्न करते है कि जीव प्राणातिपातकि क्रिया करते है ।

(उ) हां गौतम । जीव प्राणातिपातकि क्रिया करते है ।

(प्र) प्रणातिपातकि क्रिया करते है तों क्या स्पर्शसे करते है या अस्पर्शसे करते है।

(उ) क्रिया करते है वह स्पर्शसे करते है न कि अस्पर्शसे परन्तु अगर व्याघात (अलोककि) हो तो स्यात्। तीन दिशा, च्यार दिशा, पांच दिशा, और निर्व्याघ्रत हो तों नियमा छे दिशावोंकों स्पर्श क्रिया करते है।

(प्र) हे भगवान्। जीव क्रिया करते है वहा क्या कृत क्रिया है या अकृत क्रिया है।

(उ) कृत क्रिया है परन्तु अकृत नही है।

(प्र०) हे भगवान ! अगर कृत क्रिया है तो क्या आत्मकृत परकृत उभयकृत क्रिया है।

(उ०) आत्मकृत क्रिया है किन्तु परकृत उभयकृत क्रिया नहीं है।

(प्र०) स्वकृत क्रिया है तो क्या अनुक्रमे है या अनुक्रम रहित है ?

(उ०) अनुक्रमसे क्रिया है अनुक्र रहित क्रिया नहीं है। जो क्रिया करी है करते है और करेंगा वह सब अनुक्रम ही है। भावार्थ क्रिया अनुक्रमसे ही होती है परन्तु अनानुक्रम नहीं होती है। क्रियामें कालकि अपेक्षा होती है और काल हे सो प्रथम समय निष्ट होने पर दुसरा तीसरादि क्रमःसर होते है इत्यादि। एवं नरकादि २४ दंडक परन्तु समुच्चय जीव और पांच स्थावरमें व्याघातापेक्षा स्यात् तीन दिशा, च्यार दिशा, पांच दिशा और निर्व्याघात अपेक्षा छे दिशा तया शेष १९ दंडकमें भी छे दिशावोंमें

क्रिया करे । एवं प्रणातिपात क्रिया समुच्चय जीव और चौवीस दंडक २५ अलापक हुवे इसी माफीक मृशावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोम, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन, परपरावाद, रति, अरति, माय, मृषावाद, मिथ्यादर्शन, शल्य एवं १८ पापस्थानकि क्रिया समुचयजीव और चौवीस दंडकके प्रत्यक दंडकके जीव करनेसे पंचविसको अठारे गुणा करनेसे ४५० अलापक होते है । इति

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सचम् ।

थोकडा नम्बर ७

श्री भगवती सूत्र श० १ उ० ७

जो जीव जिस गतीका आयुष्य बांधा है और भावी उसी गतीमें जानेवाला है उसको उसी गतीका कहना अनुचित नहीं कहा जाता जैसे मनुष्य तिर्यचमें रहा हुवा जीव नारकीका आयुष्य बांधा हो उसको अगर नारकी कहा जाय तो भी अनुचित नहीं । नारकीमें जानेवाला जीव अपने सर्व प्रदेशोंको "सर्व" कहते है और नारकीमें उत्पन्न होनेके सम्पूर्ण स्थानको 'सर्व' कहते है यह इस थोकडे द्वारा बतलाया जायगा ।

(प्र०) नारकीका नैरीया नारकीमें उत्पन्न होते हैं वे क्या—

(१) देशसे देश उत्पन्न होते है । जीवके एक भागके प्रदेशको देश कहते हैं और यहां नारकी उत्पन्न स्थानके एक विभागको देश कहते हैं ।

(२) देशसे सर्व उत्पन्न होते हैं ?

(३) सर्वसे देश उत्पन्न होते है ?

(४) सर्वसे सर्व उत्पन्न होते है ?

(उ०) सर्वसे सर्व उत्पन्न होते है शेष तीन मार्गोसे उत्पन्न नहीं होते एवं २४ दंडक भी सर्वसे सर्व उत्पन्न होते हैं (१) और निकलनेकी अपेक्षा भी नरकादि २४ दंडकके सर्वसे सर्व निकलते हैं। (२)

(प्र०) नारकी नारकीमें उत्पन्न हुवे है वे क्या पूर्वोक्त ४ मार्गोसे उत्पन्न हुवे है ?

(उ०) पूर्वोक्त सर्वसे सर्व उत्पन्न हुवे है एवं नरकादि २४ दंडक (३) इसी माफीक निकलनेका भी २४ दंडकमें सर्वसे सर्व निकलते है। (४)

(प्र०) नारकी नारकीमें उत्पन्न होते समय आहार लेते है वे क्या (१) देशसे देश (२) देशसे सर्व (३) सर्वसे देश (४) सर्वसे सर्व आहार लेते है ?

(उ०) देशसे देश और देशसे सर्व आहार नहीं लेते किन्तु सर्वसे देश और सर्वसे सर्व आहार लेते है। कारण उत्पन्न होते समय जो आहारका पुद्गल लेना है जिसमें कितनेक भागका पुद्गल विना आहारे भी निष्ट होते है इस लिये तीसरा भांगा स्वीकार किया है एवं चौवीस दंडक (१) एवं निकले तो (२) एवं उत्पन्न हुवेका (३) एवं निकलने पर भी (४)

जैसे २४ दंडकपर उत्पन्नका च्यार द्वार और आहारका च्यार द्वार देशसे देश अपेक्षाका है इसी माफीक ८ द्वार अद्धासे अद्धाका भी समझ लेना।

(प्र०) नारकी नारकीमें उत्पन्न होता है वह क्या (१) अद्धासे अद्धा उत्पन्न होता है (२) अद्धासे सर्व (३) सर्वसे अद्धा (४) सर्वसे सर्व उत्पन्न होता है ?

(उ०) जैसे पूर्वोक्त आठ द्वार कहे हैं वैसे ही प्रथम उत्पन्न कालमें चौथा भांगा और आहारमें तीसा, चौथा भांगेसे कहना। इति २४ दंडक पर १६–१६ द्वार करनेसे ३८४ भांगे होते हैं।

(प्र०) हे भगवान् ! जीव विग्रह गतीवाला है या अविग्रह गतीवाला है ?

(उ०) स्यात विग्रह गतीवाला है स्यात अविग्रह गतीवाला भी है एवं नरकादि २४ दंडक भी समझ लेना।

(प्र०) घणा जीव क्या विग्रह गतीवाला है कि अविग्रह गतीवाला है ?

(उ०) विग्रह गतीवाला भी घणा अविग्रह गतीवाला भी घणा।

(प्र०) नारकीकी पृच्छा ?

(उ०) नारकीमें (१) अविग्रह गतीवाला सास्वता (स्थानापेक्षा) (२) अविग्रह गतीवाला घणा, विग्रह गतीवाला एक (३) अविग्रह गतीवाला घणा और विग्रह गतीवाला भी घणा एवं तीन भांगा हुवा इसी माफक प्रत्र जीवोंके १९ दंडकमें ३–३ भांगे लगानेसे ५७ भांगे हुवे और पांच स्थावर समुच्चयकी माफक अर्थात विग्रह गतीवाला भी घणा और अविग्रह गतीवाला भी घणा। पूर्वोक्त ३८४ और ५७ मिलके कुल भांगा ४४१ हुवा।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ८

श्री भगवती शतक १ उ० ७

(गति)

(प्र०) हे भगवान ! देवता मोटी ऋद्धि, क्रांती, ज्योती, वाला, सुख और महानुभाव अपने चवन कालको जानके सरमावे (लज्जा पामे) अरती करे स्वल्प काल तक आहार भी न ले और पीछे क्षुधा सहन न करता आहार करे, शेष आयुष प्रक्षीन होनेपर मनुष्य या तिर्यंच योनीमें उत्पन्न होवे ?

(उ०) देवता अपना चवन कालको जानेके पूर्वोक्त चिन्ता करे कारन देवता सम्बन्धी सुख छोडने कर मनुष्यादिकी अशुची पदार्थ वाली योनीमें उत्पन्न होना पडेगा और वहां वीर्य रौद्रका आहार लेना होगा इस वास्त सरमावे, घ्रगा करे, अरती वेदे फिर आयुष्य क्षय होनेपर मनुष्य या तिर्यचमें अवतरे ।

(प्र०) हे भगवान । गर्भमें जीव उत्पन्न होता है वह क्या इन्द्रिय सहित या इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ।

(उ०) द्रव्येन्द्रिय (कान, नाक, नेत्र, रस, स्पर्श) अपेक्षा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है कारन द्रव्येन्द्रिय शरीरसे संबन्ध रखती है इसलिये द्रव्येन्द्रिय रहित और भावेन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है ।

(प्र०) जीव गर्भमें उत्पन्न होता है वह क्या शरीर सहित या शरीर रहित उत्पन्न होता है ।

(उ०) औदारिक, वैक्रिय, आहरिककी अपेक्षा शरीर रहित उत्पन्न होता है कारन यह तीनो शरीर उत्पन्न होनेके बाद होते

हैं और तेजस कारमण शरीरापेक्षा शरीर सहित उत्पन्न होते हैं कारन कहे दोनो शरीर परभवमें साथ रहती हैं।

(प्र०) हे भगवान्! गर्भमें उत्पन्न होनेवाला जीव प्रथम काहेका आहार लेता है?

(उ०) माता के रौद्र और पिताके शुक्रका प्रथम आहार लेता है फिर उस जीवकी माता जिस प्रकारका आहार करती है उसके एक देशका आहार पुत्र भी करता है कारन माताकी नाडी और पुत्रकी नाड़ीसे संबन्ध है।

(प्र०) गर्भमें रहे हुवे जीवको लघु नीत, बड़ी नीत, क्षेत्र, श्लेष्म, वमन, पित है?

(उ०) उक्त बातें नहीं है। जो आहार करता है वह श्रोतेन्द्रिय, चक्षु० घ्राण० रस० स्पर्शेन्द्रिय, हाड़, हाड़की मींजी, केस, नख पने प्रणमता है कारन गर्भके जीवको कवलाहार नहीं है इसलिये लघु नीती, बड़ी नीती नहीं है रामाहार है, वह सर्व आहार करे सर्व प्रणमें सर्व उश्वासनिश्वासे इसी माफक बार बार यावत् निश्वासे।

(प्र०) जीवके माताका अंग कितना है और पिताका अंग कितना है।

(उ०) मांस, लोही और मस्तक यह तीनों अंग माताके है और अस्थि (हाड़), हाड़की मींजी, केश और नख यह तीन अंग पिताके है।

(प्र०) माता पिताका अंग (प्रथम समयका आहार) जीवोंके कितने काल तक रहता है।

(उ०) जहां तक जीवके भव धारणीय शरीर रहता है वहां तक मातापिताका अंस रहता है, परन्तु समय २ हीन होता जाता है यावत् न मरे जहां तक कुछ न कुछ माता पिताका अंस रहता ही है इस लिये माता पिताका कितना उपकार है कि जो जीवित है वह माता पिताका ही है वास्ते माता पिताका उपकार कभी न भूलना चाहिये ।

(प्र) गर्भमें मरा हुवा जीव नरकमें जा सक्ता है ?

(उ) कोई जीव नरकमें जावे कोई न भी जावे ।

(प्र) गर्भमें रहा हुवा जीव मरके नरकमें क्यों जाता है ?

(उ) संज्ञी पंचेन्द्री सम्पूर्ण पर्याप्तिको प्राप्त करके वीर्यलब्धी वैक्रिय लब्धी जिसको प्राप्त हुई है वह किसी समय गर्भमें रहा हुवा अपने पिता पर वैरी आया हुवा सुनके वैक्रिय लब्धीसे अपनी आत्माके प्रदेशोंको गर्भसे बाहर निकाले और वैक्रिय समुद्घात करके चार प्रकारकी सेना तयार कर वैरीसे संग्राम करे, और संग्राम करते हुवे आयुष्य पुर्ण करे तो वह जीव मरके नरकमें जाता है, कारन उस समय वह जीव राजका, धनका, कामका, भोगका, अर्थका अभिलाषी है इस वास्ते नरकमें जाता है (भागवती सुत्र श० २४ में कहा है कि तिर्यंच ज० अन्तर मुहर्तवाला और मनुष्य ज० प्रत्येक मासवाला नरकमें जा सक्ता है ।)

(प्र) गर्भमें रहा हुवा जीव मरके क्या देवतामें जा सक्ता है ?

(उ०) हां देवतामें भी जा सक्ता है ।

(प्र०) क्या करनेसे ?

(उ०) पूर्वोक्त संज्ञी पंचेन्द्री वैक्रिय लब्धीवाला तथा रूपके

श्रमण महानके समीप एक भी आर्य वचन श्रवण कर परम संवेगकी श्रद्धा और धर्म पर तिव्र परिणाम (तिव्व धम्माणु राग रत्ते) प्रेम होनेसे धर्म, पुन्य, स्वर्ग या मोक्षका अभिलाषी शुद्ध चित, मन, लेश्या अध्यवसायमें काल करे तो वह जीव गर्भमें रहा हुवा भी मरके देवलोकमें जा सक्ता है।

गर्भका जीव गर्भमें चित रहे पसवाड़े रहे या अधोमुख रहे। माता सुती, जागती सुखी दुःखीसे पुत्र भी सुता जागता सुखी दुःखीसे, पुत्र भी सुता जागता सुखी दुःखी होता है, गर्भ प्रसव मस्तकसे या पगसे होता है। जो पापी जीव होता है वह योनीद्वार पर तीरछा आनेसे मृतुको प्राप्त होता है। कदाचित निकाचित अशुभ कर्मके उदयसे जीता रहे तो दुःवर्ण, दुःगन्ध, दुःरस, दुःस्पर्श, अनिष्ट कांति, अमनोज्ञ, हीन दीन स्वर, यावत अनादेय वचनवाला जो कि उसका वचन सादर कोई भी न माने यावत महान् दुःखमें जीवन निर्गमन करनेवाला होता है अगर पूर्वे अशुभ कर्म नही बांधा नही पुष्ट किया हो अर्थात पूर्वे शुभ कर्म बान्धा हो वह जीव इष्ट प्रय वल्लभ अच्छे सुस्वर शब्दवाला यावत आदय वचन जो कि सर्व लोक सादर वचनको स्वीकार करे यावत् परम सुखमें अपना जीवन निर्गमन करनेवाला होता है। इसी वास्ते अच्छे सुकृत कार्य करनेकि शास्त्रकारोंने आवश्यका बतलाई है। कमसर जिनाज्ञाका आराधन कर अक्षय सुखकि प्राप्ति हो जाने पर फीर इस घोर संसारके अन्दर जन्म ही न लेना पड़े, गर्भमें न आना पड़े। इति। सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नम्बर ९

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ७ उद्देशा १

(आहाराधिकार)

अनाहारीक जीव च्यार प्रकारके होते है ? यथा-

(१) सिद्ध भगवान सदैव अनाहारीक है ।

(२) चौदवे गुणस्थान अन्तर महूर्त अनाहारीक है ।

(३) तेरवां गुणस्थान केवली समुद्घात करते तीन संयम अनाहारीक होते है ।

(४) परभव गमन करते वखत विग्रह गतिमें १-२-३ समय अनाहारीक रहेते है । इस थोकडेमें परभव गमन समय अनाहारीक रहेते है उसी अपेक्षासे प्रश्न करेंगे और इसी अपेक्षासे उत्तर देंगे ।

(प्र) हे भगवान ? जीव कोनसे समय अनाहारीक होते है ?

(उ) पहले समय स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक दुसरे समय स्यात आहारीक स्यात् अनाहारीक । तीसरे समय स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक। चोथे समय नियमा आहारीक होते है। भावाना । जीव एक गतिका त्यागकर दुसरी गतिको गमन करता है । शरीर त्याग समय यहांपर आहार (रोमाहार) कर परभव गमन समश्रेणी कर वहां जाके आहार कर लेता है वास्ते स्यात आहारीक है । अगर मृत्यु समय यहां पर आहार नहीं करता। दुवा समुद्घातकर परभव गमन समश्रेणि कर वहांपर पहले समय आहार किया हो। वह जीव स्यात् अनाहारी कहा जाता है । दुसरे समय स्यात आहा-रीक जो जीव एक समयकि विग्रह गति करी हो वह दुसरे समय उत्पन्न स्थान जाके आहार करता है वास्ते स्यात् आहारीक तथा

दो समयकि विग्रह करे तो स्यात् अनाहारीक होता है । तीसरे समय स्यात् आहारिक स्यात् अनाहारीक अगर कोइ जीव दुवंका श्रेणिकर तीसरे समय उत्पन्न स्थानको आहार लेवे तो स्यात् आहारीक है और त्रसनालीके बाहार लोकके अन्तके खुणासे मृत्यु प्राप्तकर प्रथम समय सम श्रेणि करे दुसरे समय त्रसनालिमें आवे तीसरे समय उर्ध्व दिशामें आवे अगर वहां ही उत्पन्न होना हो तो तीसरे समय आहारीक होता है और उर्ध्वलोककि स्थावर नालिमें उत्पन्न होनेवाला जीव तीसरे समय भी अनाहारी रहेता वह जीव चोथे समय नियमा आहारीक होता है । टीकाकारोंका कथन है कि अगर निचे लोकके चरमान्तसे जेसे जीव मृत्यु करता है इसी माफीक उर्ध्व लोकके चरमान्तके खुणेमें उत्पन्न होनेकि एसी श्रेणि नहीं है वास्ते शास्त्रकारोंका फरमान है कि चोथे समय नियमा आहारीक होता है । इति समुच्चय जीव ।

नारकी आदि १९ दंडक पहले दुसरे समय स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारीक तीसरे समय नियमा आहारीक कारण त्रसनालिमें दोय समयकि विग्रह गति होती है और पांच स्थावरोंके पांच दंडकमें पहले दुसरे तीसरे समय स्यात् आहारीक स्यात् अनाहारिक चोथे समय नियमा आहारीक भावना पूर्ववत् समझना ।

(प्र) हे भगवान् । जीव सर्वसे स्वल्प आहारी कौन समय होते है ?

(उ) जीव उत्पन्न होने पहले समय तथा मरणके अन्त समय अल्प आहारी होते है । भावार्थ जीव उत्पन्न होते है उस समय तेजस और कारमान यह दोय शरीर द्वारा आहारके पुद्गल लेवते

है। सामग्री स्वल्प होनेसे स्वल्प पुद्गलोंका आहार लेते है और चरम समय उत्पातादि सामग्री शीतल होनेसे भी स्वल्प आहार लेते है इसी माफीक नरकादि चौवीस दंडक उत्पन्न समय तथा चरम समय स्वल्प आहारी होते है।

(प्र) हे भगवान्। लोकका क्या संस्थान है ?

(उ) अधोलोक तो पायाके संस्थान है। उर्ध्व लोक उभी मादलके संस्थान है तीर्यग लोक झालरीके संस्थान है। सम्पूर्ण लोक सुप्रतिष्ट अर्थात तीन सरावला (पासलीया)के आकार पहला एक सरावला ऊंधा रखे उसपर दुसरा सरावला सीधा रखे तीसरा सरावला उसपर ऊंधा रखे अर्थात लोक निचेसे विस्तारवाला है विचमें संकुचित उपरसे विस्तार (पांचमा देवलोक) उसके उपर और संकुचित है विस्तार देखो शीघ्रबोध भाग १२वां। इस लोककि व्याख्या जिन अरिहंत केवली सर्वज्ञ भगवान्ने करी है। जीवाजीव व्याप्त लोक द्रव्यास्ति नयापेक्षा सास्वत है पर्यायास्ति नयापेक्षा असास्वत है।

(प्र०) हे भगवान्! कोई श्रावक सामायिक कर सामायिकमें प्रवृति कर रहा है उस्को क्या इर्यावहि क्रिया लागे या संपराय क्रिया लागे ?

(उ०) सामायिक संयुक्त श्रावककों इर्यावहि क्रिया नहीं लागे किन्तु संपराय क्रिया लागे कारण क्रिया लगनेका कारण यह है।

(१) इर्यावही क्रिया केवल योगोंके प्रवृतिको लगती है जिन्होंके क्रोध मान माया लोभ मूलसे नष्ट हो गये है तथा उपशान्त हो गये है एसे जो वीतराग ११-१२-१३ गुणस्थान वृति जीवोंको इर्यावही क्रिया लगती है।

(२) संपराय क्रिया=कषाय और योगोंकि प्रवृतिसे लगति है। कषाय सद्भावे पहले गुणस्थानसे दशवें गुणस्थानवृत्ति जीवोंको संपराय क्रिया लगती है श्रावक है सो पांचवे गुणस्थान है वास्ते सामायिक कृत श्रावकों इर्यावही क्रिया नही लागे परन्तु संपराय क्रिया लगती है।

(प्र) हे भगवान् ! क्या कारण है।

(उ) सामायिक कीये हुवे श्रावक कि आत्मा अधिकरण अर्थात् क्रोधमानादि कर सयुक्त है वास्ते उस्कों संपराय क्रिया लगति है।

(प्र) किसी श्रावकने त्रस जीव मारनेका प्रत्याख्यान किया। और पृथ्व्यादि स्थावर जीवोंको मारनेका प्रत्याख्यान नहीं है। वह श्रावक गृहकार्यवसात पृथ्वीकाय खोदतों अगर कोई त्रस जीव मर जावे तों उस श्रावकों व्रतोंके अन्दर अतिचार लगता है ?

(उ०) उस श्रावकों अतिचार नहीं लगे कारण उस श्रावक का संकल्प पृथ्वीकाय खोदनेका था परन्तु त्रसकायकों मारनेका संकल्प नहीं था। हां त्रसकाय मर जानेसे त्रसकायका पाप आवश्य लगता है। परन्तु व्रतोंके अन्दर अतिचार नहीं लगते है, 'भावविशुद्धि' इसी माफीक वनस्पति छेदनेंका श्रावकको प्रत्याख्यान है और पृथ्व्यादि खोदतों वनास्पतिका मूलादि छेदाय जावे तों उस श्रावकके व्रतोंमे अतिचार नहीं है। भावना पूर्ववत्।

(प्र०) कोई श्रावक तथारूपके मुनिकों निर्जीव निर्दोष असनादि आहारका दान दे उस श्रावकको क्या ... है ?

(उ०) श्रावकके दीया हुवा आहारकी साहितासे उस मुनिकों जो समाधि मीली है वह ही समाधि आहारके देनेवाले श्रावकको मीलती है अर्थात् आहारकि साहितासे मुनि अपने आत्मध्यान ज्ञानके गुणोंकों प्राप्ती करते है वह ही आत्मध्यान ज्ञान श्रावककों भी मीलते है। कारण फासुक आहार देनेसे एकान्त निर्ज्जरा होना शास्त्रकारोंने कहा है।

(प्र०) कोई श्रावक मुनिकों निर्जीव निर्दोष असनादि आहार देता है तों वह श्रावक मुनिकों क्या दिया कहा जाता है?

(उ०) वह श्रावक मुनिकों आहार दीया उसे जीतव दीया कहा जाता है कारण औदारिक शरीरका जीतव आहारके आधार पर ही है और एसा आहार देना (सुपात्रदांन) महान् दुष्कर है एसा अवसर मीलना भी दुर्लभ है। वास्ते उस दातार श्रावककों सम्यग्दर्शनके साथ परम्परासे अक्षय पदकि प्राप्ती होती है। इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर १०

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ७ उदेशा १

(अकर्मीकों गति)

(प्र०) हे भगवान्! अकर्मीकों भी गति होती है?

(उ०) हां गौतम! अकर्मीकों गति होती है।

(प्र०) हे भगवान्! कीस कारणसे अकर्मीकों गति होती है?

(उ०) जेसे एक तूम्बा होता है उसका स्वभाव हलकापणा होनेसे पाणीपर तीरणेका है परन्तु उसपर मट्टीका लेपकर अतापमें

शुक्राके और मट्टीका लेप करे एसे आट मट्टीका लेप करदेनेसे वह तूम्बा गुरुत्वकों प्राप्त हो जाता है फीर उस तूंबेकों पाणीपर रख देनेसे वह तूंबा पाणीके अधोभाग अर्थात् रसतलको पहुंच जाता है वह तूंबा पाणीमे इधर उधर भटकनेसे किसी प्रकारके उपक्रम लगनेसे मट्टीके लेप उतर जानेसे स्वयं हो पाणीके उपर आजाता है इसी माफीक यह जीव स्वभावसे निर्लेप है परन्तु आठ कर्मोसे गुरुत्वकों प्राप्तकर संसाररूपी समुद्रमें परिभ्रमण करता है। कची सम्यग ज्ञानदर्शन चारित्ररूपी उपक्रमोंसे कर्म लेप दूर हो जानेसे निर्लेप हुवा तूंबा गति करता है इसी माफीक अकर्मी जीवकि भी गति होती है उस गतिकों शास्त्रकारोंने—

(१) "निस्संगयाए" कर्मोका संग रहित गति।

(२) "निरंगणयाए" कषायरूपी रंग रहित गति।

(३) "गइ परिणामेण" गति परिणाम अर्थात जीव कि स्वाभावे उर्ध्व जाने कि गति है। जेसे कारागृहसे छूटा हुवा मनुष्य अपना निजावसकों जानामें स्वाभावीक गति होती है इसी माफीक संसाररूपी कारागृहसे छूट जानेसे मोक्षरूपी निजावासमें जानेकि जीवकि स्वाभावीक गति है।

(४) "बन्ध छेदन गति" जेसे मूंग मट चावलादि कि फली पूर्वबन्धी हुई होती है उसको आताप लगनेसे स्वयं फाटके अलग होजाती है इसी माफीक तपश्चर्यरूपी आताप लगनेसे कर्म अलग होते है और जीव बन्धन छेदनगति कर मोक्षमे चला जाता है।

(५) "निरंधण गति" जेसे अग्नि इंधण न मीलनेसे शान्त हो जाती है एसे रागद्वेष तथा मोहनिय कर्मरूपी इंधणके आभावसे

कर्मरूपी अग्नि शान्त हो जाति है तथा इंघनके अन्दर अग्नि लगानेसे धूवा निकलके उर्ध्वगतिको गमन करता है एसे जीव कर्मरूपी अग्निको छोड उर्ध्व गति गमन करता है ।

(६) "पूर्व प्रयोगगति" जेसे तीरके बाणमे पेस्तार खुब वेग भर दीया हो उस वेगके जोरसे तीरसे छूटा हुवा बाण जाता है इसी माफीक पूर्व योगोंका वेग जेसे बाण जाता हुवा रहस्तेमें तीरका संग नही है केवल पूर्वके वेगसे ही चल रहा है इसी माफीक मोक्ष जाते हुवे जीवोंको योगों कि प्रेरणा नही है किन्तु पूर्व योगसे ही वह जीव सात राज उर्ध्व गतिकर मोक्षमे जाता है जेसे बाण मुद्रत स्थानपर स्थित हो जाता है इसी माफीक जीव भी मोक्षक्षेत्र तक जाके वहांपर सादि अनन्त भांगे स्थित हो जाता है इस वास्ते हे गौतम अकर्मी जीवोंको भी गति होती है ।

यह प्रश्न इस वास्ते पुच्छा गया है कि जीव अष्ट कर्मोका क्षय तों इस मृत्यु लोकमें ही कर देता है और विगर कर्मोके हलन चलन कि क्रिया हो नही सक्ती है तों फीर सातराज उर्ध्व मोक्ष क्षेत्र तक गति करते है वह किस प्रयोगसे करते है ? इसके उत्तरमें शास्त्रकारोंने छे प्रकारकि गतिका खुलासा किया है । इति

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नम्बर ११.

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ७ उद्देशा १

(दुःखाधिकार)

(प्र०) हे भगवान् ! दुःखी है वह जीव दुःखको स्पर्श

करता है या अदुःखी है वह जीव दुःखकों स्पर्श करता है। अर्थात् दुःख है सो दुःखी जीवोंकों स्पर्श करता है या अदुःखी जीवोंकों स्पर्श करता है।

(उ०) दुःखी जीवोंकों दुःख स्पर्श करता है। किंतु अदुःखी जीवोंकों दुःख स्पर्श नहीं करता है। भावार्थ सिद्धोंको जीव अदुःखी है उनोंकों दुःख कभी स्पर्श नही करता है जो संसारी जीव जीस दुःखकों बांधा है वह अबाधा काल परिपक होनेसे उदयमें आया हो वह दुःख जीव दुःखकों स्पर्श करते है अगर दुःख बन्धा हुआ होनेपर भी उदयमें नहीं आया हो वह जीव अदुःखी है वह दुःखको स्पर्श नहीं करते है इस अपेक्षाकों सर्वत्र भावना करना।

(प्र०) हे भगवान्! दुःखी नैरिया दुःखकों स्पर्श करे या अदुःखी नैरिया दुःखको स्पर्श करे?

(उ०) दुःखी नैरिया दुःखकों स्पर्श परन्तु अदुःखी नैरिया दुःखकों स्पर्श नहीं करे भावना पूर्ववत उदय आये हुवे दुःखकों स्पर्श करे। उदय नही आये हुवे दुःखकों स्पर्श नहीं करे। तथा जो दुःख उदयमें आये है उस दुःखकि अपेक्षा दुःखकों स्पर्श नहीं करे और जो दुःख न बन्धा है न उदयमें आये है इसापेक्षा वह नारकि अदुःखी है और दुःखकों स्पर्श नहीं करते है एवं २४ दंडक समझना भावना सर्वत्र पूर्ववत समझना। इसी माफीक दुःख पर्याय अर्थात् निधनादि कर्म पर्याय एवं दुःखकि उदीरणा, एवं दुःखकों वेदणा एवं दुःखकि निर्जरा दुःखी होगा वह ही करेगा। समुच्चय जीव और चौवीस दंडक एवं २५ सूत्रपर पांच

पांच दंडक लगानेसे १२५ अलापक हुवे।

आगे मुनिके भिक्षाके दोषोंका अधिकार है वह शीघ्रबोध भाग चौथामें छप चुका है वहांसे देखे।

(प्र०) हे भगवान्! अगर कोई मुनि उद्योग सून्य अयत्नासे गमनागमन करे। वस्त्र पात्रादि उपकरणो ग्रहन करे या पीच्छा रखे उसकों क्या इर्यावही क्रिया लागे या संपराय क्रिया लागे?

(उ०) उक्त मुनियोंको इर्यावही क्रिया नहीं लागे, किन्तु संपराय क्रिया लगती है। कारण जिस मुनियोंका क्रोध मान माया लोभ नष्ट हो गये है। उस जीवोंकों इर्यावही क्रिया लगती है और जिस जीवोंका क्रोध मान माया लोभ क्षय नही हुवे है उस जीवोंकों संपराय क्रिया लगती है। तथा जो सूत्रमें लिखा है इसी माफीक चलनेवाले होते है उस मुनिकों इर्यावही क्रिया लगती है और सूत्रमें कहा माफीक नहीं चले उसकों संपराय क्रिया लगती है अर्थात् सूत्रमें कहा माफीक वीतराग हो वह ही चाल सक्के है इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नम्बर १२

सूत्र श्री भगवतीजी शतक ७ उद्देशा २

(प्रत्याख्यानाधिकार)

अन्य स्थलपर प्रत्याख्यान करनेके लिये मुनियोंके अनेक प्रकारके अभिग्रह और श्रावकोंके लिये ४९ भांग बतलाये है इसी भांगोंके ज्ञाता होनेसे हि शुद्ध प्रत्याख्यान करके पालन कर